राजस्थान विधान सभा

१५ वीं बैठक, बृहस्पतिवार, दिनांक-१५ दिसम्बर, सन् १६५५ ई०

विधान सभा की बैठक सभा भवन, जयपुर, में ८-५० बजे प्रारम्भ हुई

(श्री नरोत्तम लाल जोशी, अध्यक्ष, पदासीन)

तारांकित प्रश्नोत्तर

श्री अध्यक्ष—प्रश्न, श्री चांदमल मेहता ।

प्रश्न संख्या १६६

रवाड़ तहसील के सापला के हनुमान सागर, भेलासागर आदि तालाबों से हुई सिंचाई

श्री चांदमल मेहता—क्या सिंचाई मन्त्री निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा :

(क) सरवाड़ तहसील के सापला के निम्नांकित तालबों के पीछे सिंचाई योग्य भूमि कितनी है :

(१) हनुमानसागर ।

(२) भेलासागर ।

(३) बांकेसागर ।

(४) गोपालसागर ।

(५) मोतीसागर ।

(ख) उक्त तालाबों से राजस्थान के निर्माण के बाद किस किस वर्ष में कितनी कितनी हुई है ?

(ग) सिंचाई कम भूमि की होने के क्या क्या कारण हैं ?

श्री रामनिवास मिर्धा (सिचाई मंत्री)—(क) सरवाड़ तहसील में निम्न तालाबों के पीछे निम्मांकित सिंचाई की भूमि है :

१. हनुमानसागर—२००० बीघा।

२. झेलासागर—८५० बीघा।

३. बांकेसागर—१३०० बीघा।

४. गोपालसागर— १६०० बीघा।

५. मोतीसागर—६५०० बीघा।

(ख) फहरिश्त संलग्न है।

(ग) सिंचाई कम होने का कारण वर्षा की कमी है।

श्री चांदमल मेहता—संलग्न सूची मुझे नहीं मिली है साहब।

श्री रामनिवास मिर्धा—मैंने माननीय सदस्य को बता तो दी थी और मैं समझता

कि उनके पास पहुंच भी गई होगी।

श्री अध्यक्ष—पढ़ दीजिये।

श्री रामनिवास मिर्धा—

	१९५२-५३	१९५३-५४	१९५
१. हनुमानसागर	१२४६	३३७	१
२. झेलासागर	३३७	५३५	
३. बांके सागर	७८४	६२२	६
४. गोपाल सागर	६६१	२६८	३२
५. मोती सागर	५८६	२४	१०८

श्री चांदमल मेहता—क्या यह सही है कि जो संख्या बताई गई है उसके माफिक जितनी आबादी की भूमि है उसका करीब करीब १० प्रतिशत भाग ही सिंचाई में आया ?

श्री रामनिवास मिर्धा—जो मैंने आपको फिगर्स बताये वे ठीक हैं और आपका अनुमान सही नहीं है। सिंचाई कम होने का कारण वर्षा की कमी है।

Page No.3

श्री **चांदमल मेहता**—क्या यह सही है कि इन पांच वर्षों में सरवाड़ तहसील में बारिश की कमी एक साल के अलावा कभी नहीं रही ?

श्री **अध्यक्ष**—यह सवाल क्या हुआ ?

श्री **चांदमल मेहता**—पानी की कमी बताई थी इसलिए।

श्री **अध्यक्ष**—No.

श्री **चांदमल मेहता**—क्या यह सही है कि पानी की कमी होने से सिंचाई की भूमि कमा नहीं हुई है बल्कि तालाब टूटे पड़े हैं ?

श्री **रामनिवास मिर्धा**—यह सही है कि तालाब मरम्मत तलब हैं। इसी साल पैसा भी रखा है लेकिन मुख्य कारण बारिश की कमी ही है।

श्री **चांदमल मेहता**—क्या यह सही है कि पिछले वर्ष भी इन तालाबों के लिए रुपया रखा था लेकिन सारा रुपया लेप्स हो गया।

श्री **रामनिवास मिर्धा**—यह अलग प्रश्न है।

श्री **चांदमल मेहता**—क्या यह सही है कि इस वर्ष भी रुपया रखा गया है और अभी तक उनके ऊपर कोई काम शुरू नहीं हुआ है ?

श्री **रामनिवास मिर्धा**—मैंने जैसा आपको निवेदन किया कि रिपेयर्स के लिए रुपया रखा गया है और किसं तालाब पर कितना रुपया खर्च हुआ, ये फीगर्स मेरे पास नहीं है लेकिन जितना रुपया इन तालाबों के लिए रखा गया है वे खर्च जरूर हो जावेंगे।

श्री **चांदमल मेहता**—क्या यह सही है कि अब तक एक भी तालाब पर एक भी पैसा खर्च नहीं हुआ ?

श्री **रामनिवास मिर्धा**—यह एक जुदा प्रश्न है।

श्री **चांदमल मेहता**—क्या माननीय मंत्रीजी इस वर्ष के अन्त तक इन तालाबों की दुरुस्ती करवा देंगे ?

श्री **रामनिवास मिर्धा**—प्रयत्न किया जायगा।

श्री **अध्यक्ष**—नेक्स्ट, श्री सुगनचन्द।

प्रश्न संख्या १७०

सन् १९५३ से आज तक चित्तौड़गढ़ जिले में बंधवाये गये एवं सर्वे किये गये तालाब

श्री सुगनचंद—क्या सिंचाई मंत्री निम्न प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

(क) चित्तौड़ जिले में सन् ५३ से आज तक कितने तालाब बंधाये गये तथा किन किन तालाबों की सर्वे हुई ?

(ख) बेंगू सब डिवीजन में भी कोई तालाब बंधाये गये या नहीं और किन किन तालाबों की सर्वे हुई है ?

(ग) यदि नहीं, तो अब तक कार्य चालू नहीं होने का क्या कारण है ?

(घ) जिन जिन तालाबों की सर्वे हो चुकी है उनका काम कब तक चालू हो जावेगा ?

श्री रामनिवास मिर्धा (सिंचाई मंत्री)—(क) एक तालाब बन चुका है। बनियाना पांच नये तालाब बन रहे हैं जिनके नाम हैं :

गम्भीरी, बोरडा, सोनियाना, कोटज तथा खेडी।

और छः तालाबों का सर्वे हो रहा है जिनके नाम यह हैं :

रूद्री, रायपुर, नारेला, मुरली, पारसोली और बामनी।

(ख) (ग) बेंगू सब डिवीजन में अभी कोई तालाब नही बनवाया गया है। दो तालाबों की सर्वे होकर तखमिना तैयार हो गये हैं जिन पर उचित मौखे मिलना कठिन है इसलिए कोई कार्य शुरू नहीं किया गया था।

(घ) तखमीने बन चुके हैं, मन्जूरी होने पर कार्य शुरू होगा।

श्री सुगनचन्द—बेगू सब डिवीजन में काफी मौखे हैं। उसकी कितनी ही दरख्वास्ते आपके पास आई हैं। अभी नहीं बनने के क्या कारण है ?

श्री रामनिवास मिर्धा—मौखे हैं जैसा कि उत्तर दिया गया है सर्वे किया जा रहा है उनमें से दो मौखे ठीक साबित हुए हैं जिनके बारे में एस्टीमेन्ट तैयार किये जा रहे हैं, और एस्टीमेन्ट ठीक साबित होने पर काम शुरू कर दिया जायगा।

प्रश्न संख्या १७१

ग्राम कटसूरा के तालाब गणेश सागर (त० अराई) के फूटने पर उसका जीर्णोद्धार एवं उसके द्वारा सिंचाई

श्री चांदमल मेहता—क्या सिंचाई मन्त्री निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

(क) तालाब गणेश सागर ग्राम कटसूरा तहसील अराई किस वर्ष में फूटा ?

(ख) उक्त तालाब पर उसके बाद किस किस वर्ष में कितना कितना रुपया खर्च किया गया ?

(ग) तालाब टूटने के बाद उक्त तालाब से किस किस वर्ष में कितनी कितनी भूमि की सिंचाई की गई व टूटने के ५ वर्ष पहले किस किस वर्ष में कितनी कितनी सिंचाई होती रही है ?

श्री रामनिवास मिर्धा—तालाब गणेश सागर, ग्राम कटसूरा, तहसील अराई सन् ५२ में फूटा।

२. फहरिश्त निम्न प्रकार है :

१९५०—५१	कुछ खर्च नहीं हुआ।
५१—५२	रू० १७३।
५२—५३	रू० ७६८।
५३—५४	रू० २००३।
५४—५५	रू० २००९।

३. भूमि की सिंचाई निम्न प्रकार हुई।

१९५२—५३.	१०१ बीघा।
५४.	१०
५५.	५१६

४. इस समय में यह तालाब सिंचाई विभाग के आधीन नहीं था। पुराना रिकार्ड उपलब्ध नहीं है।

श्री चांदमल मेहता—क्या यह सही है कि यह तालाब अब भी मरम्मत तलब है ?

Page No.6

श्री रामनिवास मिर्धा—हर साल मरम्मत की जाती है और हर साल मरम्मत के लिये कुछ न कुछ रुपया रखा जाता है। मैं यह नहीं कह सकता, पूरी तौर से मरम्मत कराने के लिये कितना रुपया खर्च होगा ? हर साल कितना आवश्यक समझते हैं, उतना रुपया रखा जाता है।

श्री चांदमल मेहता—क्या यह सही है कि यह तालाब मरम्मत तलब होने के वजह से इसके पीछे जितनी भूमि है उससे आधी ही भूमि की सिंचाई होती है ?

श्री रामनिवास मिर्धा—यह मैं नहीं कह सकता कि इसके पीछे कितनी भूमि है और कितनी सिंचाई होती है, लेकिन गत वर्ष ५१९ बीघा भूमि की सिंचाई की गई थी। बाकी भूमि भी सिंचाई में आ सके इसके लिये कोशिश की जायगी।

श्री चांदमल मेहता—क्या यह सही है कि कटसूरा ग्राम के किसानों ने अपनी ओर से चालीस-पचास प्रार्थना-पत्र इस बात के लिये दिये कि तालाब की मरम्मत नहीं कराये जाने की वजह से उनको नुकसान हो रहा है ?

श्री रामनिवास मिर्धा—इस बात की जानकारी मुझे नहीं है।

श्री जयनारायण व्यास—कमान्डेड एरिया कितना है ?

श्री रामनिवास मिर्धा—इस सम्बन्धी सूचना मेरे पास नहीं है।

श्री चांदमल मेहता—जो रुपया खर्च किया गया वह बेकार किया, उसका उपयोग सिंचाई में कुछ नहीं हुआ; इस सम्बन्धी शिकायतें सरकार के पास आई हैं ?

श्री रामनिवास मिर्धा—सरकार के सामने ऐसी कोई शिकायत नहीं है।

श्री चांदमल मेहता—क्या माननीय मंत्री महोदय इस बात की फिर से जांच करेंगे कि जो शिकायतें की गई उनको क्यों दबा दिया गया, फिर से जांच कराने की कृपा करेंगे ?

श्री रामनिवास मिर्धा—दबाव का प्रश्न नहीं उठता। आप जब यह कहते हैं कि रिपोर्ट की गई है तो दुबारा जांच करूंगा।

कुं० श्री जसवन्तसिंह—तालाब के फूटने के कारण क्या हैं ?

श्री रामनिवास मिर्धा—यह दूसरा प्रश्न है।

कुं० श्री जसवन्तसिंह—प्रश्न साफ है कि तालाब कौनसे साल फूटा ?

श्री रामनिवास मिर्धा—मैंने इसका जवाब दे दिया। तालाब के फूटने का क्या कारण है इसकी इन्फोर्मेशन (information) नहीं है।

प्रश्न संख्या १७२

जयपुर से कोटा तक मोटर बस सर्विस प्रारम्भ करना

श्री हिम्मतसिंह (अटरू)—Will the Minister for Transport be pleased to state:

(a) Is the Government contemplating to start a Motor Bus Service direct from Jaipur to Kotah?

(b) Will the Minister specify the time by which the service will be started?

श्री रामनिवास मिर्धा—(क) जी हां।

(ख) सर्विस चलाने के परमिट आर० टी० ए० और एस० टी० ए० द्वारा दिये जाते हैं, अतएव यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि सरविस कब तक चलाई जायगी।

श्री हिम्मतसिंह—यह निश्चय रूप से क्यों नहीं कहा जा सकता?

श्री रामनिवास मिर्धा—सरकार परमिट नहीं दिया करती है, इसके लिये दो ओथोरेटिज हैं आर० टी० ए० और एस० टी० ए०, इसलिये हम कुछ नहीं कह सकते।

श्री हिम्मतसिंह—क्या सरकार में और आर० टी० ए० में फर्क है?

श्री रामनिवास मिर्धा—बहुत फर्क है।

श्री कंवरलाल जेलिया—जनता की असुविधाओं को दूर करने के लिये सरकार क्या इरादा रखती है?

श्री रामनिवास मिर्धा—सरकार परमिट सीधा नहीं दे सकती। मामला आर० टी० ए० और एस० टी० ए० के विचाराधीन है, कुछ नहीं कहा सकता।

श्री कंवरलाल जेलिया—क्या यह बात सरकार की जानकारी में है कि आर० टी० ए० ने चार वर्ष निकाल दिये अभी तक बस सर्विस चालू नहीं हो सकी?

श्री रामनिवास मिर्धा—मैंने निवेदन किया, इस बारे में आर० टी० ए और एस० टी० ए० ही निश्चय कर सकते हैं।

श्री चन्दनमल वैद—एस० टी० ए० के चेयरमेन महोदय कौन हैं ?

श्री रामनिवास मिर्धा—ट्रान्सपोर्ट मिनिस्टर।

श्री चन्दनमल वैद—क्या आप ट्रान्सपोर्ट मिनिस्टिर को रिक्वेस्ट (request) करेंगे कि इस पर ध्यान देंगे ?

श्री रामनिवास मिर्धा—जी हां।

श्री कंवरलाल जेलिया—क्या वे सरकार के अधीन नहीं है।

श्री रामनिवास मिर्धा—सरकार के सीधे अधीन नहीं है; बिल्कुल इन्डीपेन्डेन्ट बोर्डी हैं।

श्री हरिकृष्ण व्यास—क्या ट्रान्सपोर्ट मिनिस्टर गुड्स आफिसेज़ को काम में लायेंगे ताकि एस० टी० ए० के समक्ष में आ जाय कि इसकी आवश्यकता है ?

श्री रामनिवास मिर्धा—इसके बारे में आश्वासन दे चुका हूं।

श्री हिम्मतसिंह—आप यह कब से आश्वासन देते चले आ रहे हैं ? क्या आपके पहले के मिनिस्टर साहब ने भी इस प्रकार का आश्वासन दिया था ?

श्री रामनिवास मिर्धा—इसके पूर्व मिनिस्टर साहब ने क्या आश्वासन दिये, यह मुझे मालूम नहीं।

श्री कंवरलाल जेलिया—आपके आश्वासन से कोई उचित मतलब पूरा नहीं होता।

प्रश्न संख्या १७३

ग्राम बोराड़ा (तहसील सरवाड़) में सिंचाई हेतु शासकीय व्यवस्था

श्री चांदमल मेहता—क्या सिंचाई मंत्री निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे:

(क) क्या ग्राम बोराड़ा तहसील सरवाड़ में कोई सिंचाई का बांध नहीं है ?

(ख) क्या यह सही है कि भूतपूर्व जयपुर स्टेट के वक्त में बोराड़ा ग्राम में एक बड़ा बांध बांधने की योजना थी, किन्तु राजस्थान के निर्माण के बाद उस पर कोई कार्यवाही नहीं की गई ?

(ग) ग्राम पंचायत बोराड़ा की तरफ से इस विषय में सरकार के समक्ष कितने प्रार्थना-पत्र पेश हुये और उन पर क्या कार्यवाही की गई ?

श्री रामनिवास मिर्धा—(क) यह सही नहीं है।

(ख) पुराने कागजातों से इस तरह की कोई योजना बनने का सुबूत नहीं मिलता।

(ग) नये वर्षों के बारे में कोई प्रार्थना पत्र ग्राम पंचायत बोराड़ा से इस विभाग में नहीं आया।

श्री चांदमल मेहता—मैं माननीय मंत्री महोदय को चेलेंज करता हूं कि वहां की पंचायत ने रजिस्टर्ड लेटर भेजे हैं और जिनकी रसीद मौजूद है; क्या माननीय मंत्री इस बात की जांच कराने की कृपा करेंगे ?

श्री रामनिवास मिर्धा—जब आपने इतना बताया है, मैं अवश्य जांच कराऊंगा।

श्री हरिकृष्ण व्यास—तो पहले ही आपको जांच करके ही जवाब देना चाहिये था।

श्री रामनिवास मिर्धा—जांच करने के बाद ही जवाब दिया है।

श्री हरिकृष्ण व्यास—जांच भी हो गई और गल्तियां भी साबित हो गईं।

कुं० श्री जसवन्तसिंह—ये चेलेन्ज दे रहे, हैं आप एक्सेप्ट कर लीजिये ना।

प्रश्न संख्या १७४

जिला चित्तोड़गढ़ की विभिन्न तहसीलों में सिंचाई हेतु बांध बनवाने की शासकीय योजना

श्री जगत सिंह झाला—क्या सिंचाई मंत्री निम्न प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे।

(क) जिला चित्तोडगढ़ में किन किन तहसीलों में सिंचाई विभाग द्वारा नये बांध बनाये जाने का कार्य किया जा रहा है या निकट भविष्य में किये जाने का विचार है ?

(ख) क्या इस जिले में बागन इरिगेशन प्रोजेक्टस के नाम से भी कोई नया कार्य शुरू हो रहा है ?

(ग] इस योजना के फलस्वरूप किस किस तहसील के कितने कितने गांव डूबने की आशंका है ?

Page No.10

श्री रामनिवास मिर्धा (सिंचाई मन्त्री)— (क) चित्तोडगढ़ में निम्न लिखित कामों में कार्य जारी है —

- तहसील चित्तोड ओरदा, तहसील कपासन, केशरखेड़ी, कल्यानपुरा, तहसील बेंगू, खतुन्दा, तहसील मदेसर, कन्नोज; इसका कार्य मुआवजा देने का मसला तय होने पर शुरू होगा। तहसील गंगराल, सोनीयाना, तहसील दुगला. मोरवन, तहसील प्रतापगढ़ गाडौला, बजरंग गढ़; यह कार्य टेन्डर मंजूर होने पर किये जावेंगे। भविष्य में निम्न-लिखित कार्यों के शुरू करने की योजना है; रायपुरिया, मुरलिया, रूदड़ी, मरेला, ढोराई पारसोली, बेडच, वागन प्रोजेक्ट और सालेरा केनाल।

(ख) वागन प्रोजेक्ट का कार्य दूसरी पंचवर्षीय योजना में रखा गया है।

(ग) निम्न लिखित गांवों के डूबने की आशंका है :

गन्धारी, चम्पाखेडी, निवार धिरजी का खेडा, लडेर, हरनोदा, अमरपुरा. जगागुडा भीलकाखेडा, भाटावास, पोटला खालसा, पोटला माफी।

प्रश्न संख्या १७५

किशनगढ सब डिवीजन में कम्प्रेशर आदि के सम्बन्ध में किसानों की जमा धन-राशि

श्री चांदमल मेहता—क्या कृषि मन्त्री निम्न लिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

(क) किशनगढ़ सब डिवीजन के कितने किसानों की रकम कृषि विभाग में कम्प्रेशर के किराये आदि के सम्बन्ध में जमा है ?

(ख) किस किस किसान की कितनी कितनी रकम कब से जमा है, उसके हिसाब की बेबाकी नहीं करने के क्या कारण है ?

(ग) ऐसी कितनी शिकायतें सरकार के पास उक्त सब डिवीजन के किसानों की पेश हुई, कि उनकी रकमें सरकार में जमा नहीं हुई है बल्कि अधिकारियों ने गबन किया है।

(घ) उक्त शिकायतों पर सरकार द्वारा क्या कार्यवाही की गई है ?

श्री रामनिवास मिर्धा—(क) किशनगढ़ सब डिविजन से मई १९५२ तक कृषि विभाग के पास कम्पैशर मशीन के हेतु कुल १६ कृषकों ने रकम जमा की।

[श्री रामनिवास मिर्धा]

(ख) जिन कृषकों के उपरोक्त कार्य के लिये रूपया जमा कराया है उनका विवरण संलग्न तालिका में है ।

श्री मेघराज व श्री मैरू को छोड़कर अन्य सभी कृषकों का हिसाब पूरा हो गया है । उपरोक्त दोनों कृषकों ने यह रकम बहुत से कृषकों के कुआ गहरा करवाने हेतु जमा कराई थी, परन्तु उन व्यक्तिगत किसानों का विवरण प्राप्त न होने के कारण उनके हिसाबों को पूर्ण करने में विलम्ब हुआ है; तथापि उनका अधिकतर हिसाब पूरा हो चुका है । शेष हिसाब को पूर्ण करने का कार्य चल रहा है ।

(ग) इस विभाग के पास लिखित रूप में ऐसी कोई सूचना उक्त सब डिवीजन के कृषकों से प्राप्त नहीं हुई है जिसमें अधिकारियों द्वारा गबन का संकेत हो ।

(घ) प्रश्न ही नहीं उठता ।

(कृपया परिशिष्ट २ देखिये)

श्री चांदमल मेहता—पहली शिकायत तो यह है कि सूची मुझे इस बार भी नहीं दी गई है, जिसमें १६ के बारे में कहा गया है । इस सम्बन्ध में अध्यक्ष महोदय, बार बार निवेदन करते हुए खेद भी होता है । अध्यक्ष महोदय आदेश भी देते हैं पर तब भी मिलती नहीं है ।

श्री रामनिवास मिर्धा—आपकी इजाजत हो तो पढ़ दूं ।

कु० श्री जसवन्तसिंह—On principal, Sir, there seems to be something wrong somewhere, which I do not know. But why the Minister is insistently making such mistakes before the House? This is a question which should be decided once and for all. Either they should say that they are not prepared to give it or they are prepared to give it. Everyday this thing happens. We will request you most humbiy and most insistently that one way or the other, something should be settled. Either the Government should say that they are not prepared to give, which also they are not saying, or they should arrange to send the lists. Everyday we hear that it is given to the members and the members say that it has not been given to them. We would again request yon kindly to use your good offices with the Government, otherwise it looks awkward. Supposing there is a gentleman from outside in the gallary, what will he say as to what type of Government it is?. I will state again on behalf of the opposition, at least, that if in a simple matter like this, the Government cannot function, then, in bigger matters, only God will have to come to our help. That is all I can say.

श्री मोहनलाल सुखाडिया (मुख्यमन्त्री)—अध्यक्ष महोदय, हमारी तरफ से इन्कारी नहीं है।

कुं० श्री जसवन्तसिंह—पर मिलते नहीं हैं।

श्री मोहनलाल सुखाडिया—पर आप कहते हैं कि रोजाना ऐसी शिकायत आती है। वह स्थिति भी नहीं है। आज जरूर ऐसा सवाल आया है तो इसके लिए मैं विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि इस बारे में सूची बराबर वक्त पर प्राप्त हो जाय, इसके लिए गवर्नमेन्ट की तरफ से पूरी तरह से ख्याल रक्खा जावेगा।

कुं० श्री जसवन्तसिंह—It has never been given in the past. It was not given day before yesterday. It was not given three days ago. In future...

श्री अध्यक्ष—When the Leader says it will be given...

कुं० श्री जसवन्तसिंह—Let us hope so.

श्री चांदमल मेहता—सन् ५२ के बाद में मेघरामजी और भूरा की ओर से कितने प्रार्थना-पत्र पेश हुए उनके अकाउन्ट को साफ करने के लिये ?

श्री रामनिवास मिर्धा—यह तो मैं नहीं कह सकता, पर उनको पेमेन्ट क्यों नहीं हुआ; इसकी डिले का कारण मैंने बताया कि इन दोनों आदमियों ने अपनी व्यक्तिगत तौर से रुपया नहीं जमा कराकर पांच दस अन्य आदमियों की ओर से जमा कराया है, इसलिए देरी हुई है।

श्री चांदमल मेहता—क्या यह सही है कि इस पूरे विवरण के सम्बन्ध में अब तक कोई जांच नहीं की गई ?

श्री अध्यक्ष—जांच का रिज़ल्ट ही तो बता रहे हैं।

श्री चांदमल मेहता—जांच नहीं करा रहे हैं साहब।

श्री रामनिवास मिर्धा—वहें मांग कर रहे हैं दोनों के सम्बन्ध में और...

श्री अध्यक्ष—Money could not be refunded because of the reasons assigned by the Minister.

श्री चांदमल मेहता—जो जांच की गई उसका आखिरी नतीजा निकल चुका है।

श्री रामनिवास मिर्धा—जी नहीं, अभी नहीं निकला है।

Page No.13

श्री चांदमल मेहता—यह आखिरी नतीजा निकल कर कब तक इनका हिसाब बेबाक हो जावेगा ?

श्री रामनिवास मिर्धा—बहुत शीघ्र ही तय करेंगे ।

श्री चांदमल मेहता—क्या यह सही है कि उसे किसान, जिनकी रकम जमा नहीं हुई और जिनकी रकम ऊपर की ऊपर ही रह गई उसके सम्बन्ध में क्या किसानों ने अपनी ओर से जांच करा कर रुपया वापिस दिलाने की मांग की है ?

श्री रामनिवास मिर्धा—मैं समझा नहीं ।

श्री चांदमल मेहता—एक सवाल तो वह था जिनके रुपये जमा हुए रजिस्टर में उनको वापिस दिलाने के बाबत । पर एक सवाल यह भी है कि कई किसानों ने रुपये जमा कराये पर वे जमा नहीं हुए ? तो मैं जानना चाहता हूँ कि किन किन किसानों के रुपये जमा नहीं हुए । जिसके बारे में माननीय मन्त्री महोदय ने कहा था कि कोई शिकायत नहीं और वाकया यह है कि उन्होंने मांग की है कि उनसे रुपये ले लिये गये हैं पर जमा नहीं किये गये हैं । इसकी जांच कराकर वे रुपये उनको वापिस दिलाये जावें । तो क्या ऐसी कोई मांग उनकी सरकार के पास पहुंची है ?

श्री रामनिवास मिर्धा—मैंने बताया कि इस तरह के गबन के बारे में कोई लिखित शिकायत सरकार के पास नहीं आई ।

श्री चांदमल मेहता—क्या माननीय मन्त्री महोदय की यह भी जानकारी में है कि इसी सदन में पिछले साल मन्त्री महोदय की तरफ से इसी सवाल पर यह जवाब दिया जा चुका है कि जिन किसानों के रुपये जमा नहीं हुए उनकी हम जांच कर रहे हैं ?

श्री रामनिवास मिर्धा—मैं नहीं कह सकता कि इससे उसका क्या सम्बन्ध है, पर आपने कहा कि रुपया लेकर जमा नहीं किया गया और इस तरह से गबन कर लिया गया; इस तरह की कोई शिकायत सरकार के पास नहीं आई ।

श्री चांदमल मेहता—ऐसी शिकायत आई है और उनके नाम बताते हुए पहले सैशन में यह बता चुके हैं कि हम इसकी जांच करा रहे हैं और अगर ठीक पाया गया तो उनके रुपये वापिस दिलाये जावेंगे और आज यह कहा जा रहा है कि कोई शिकायत नहीं आई । तो अब मैं यह जानना चाहता हूँ माननीय अध्यक्ष महोदय, कि पहले जो जवाब दिया गया सरकार की ओर से वह सही है या अब जो जवाब दिया जा रहा है वह सही है ?

श्री अध्यक्ष—That will come before the Assurrance Committee.

Page No.14

श्री हरिकृष्ण व्यास—यह जो जांच कराई जाने की बात कही गई कि यह रकम वसूल हुई ; वह कौनसे हैड में सरकारी कागजों में जमा हुई ?

श्री रामनिवास मिर्धा—यह जुदा प्रश्न है ।

श्री हरिकृष्ण व्यास—इस प्रकार की रकम जो आई वह अब तक सरकार के प्रोपर हैड में जमा नहीं की गई तो वह सस्पेन्स अकाउन्ट में तो रक्खी गई है या नहीं ?

श्री रामनिवास मिर्धा—जब पता ही नहीं है तो फिर कैसे मालूम हो ?

श्री हरिकृष्ण व्यास—जब रकम आई है तो कहीं तो जमा होगी, कहीं तो रक्खी गई होगी, सस्पेन्स में रक्खी होगी, या किसी ने अपने घर में रक्खी होगी ; यह तो पता लगे ।

(मन्त्री महोदय से उत्तर प्राप्त न होने पर)

एक माननीय सदस्य—No reply. ?

श्री अध्यक्ष—Next.

श्री हरिकृष्ण व्यास—नहीं साहब, एक और है सवाल । इसी के सम्बन्ध में है । क्या यह जो रकम जमा करनी बताई जाती है उसका कोई बाकायदा रजिस्टर मौजूद है ?

श्री रामनिवास मिर्धा—जी हां, रजिस्टर है ।

श्री हरिकृष्ण व्यास—क्या यह सही है कि वे रजिस्टर अपूर्ण होने के कारण रकम की जांच पडताल के बारे में कठिनाई आई ?

श्री रामनिवास मिर्धा—जी नहीं ।

श्री चांदमल मेहता—क्या यह सही है कि रजिस्टर के अन्दर पूरी की पूरी रकमों की एन्ट्रीज़ नहीं है और इस बात के ओब्जेक्शन्स ऑडिट विभाग और फाइनेन्स विभाग ने भी किये हैं ?

श्री अध्यक्ष—Next. These are not very relevant. Put direct questions and then after full preparation replies will be given.

श्री हरिकृष्ण व्यास—इससे यह मतलब निकलता है साहब कि इस वजह से तो यह गड़बड़ी नहीं हो रही है ।

प्रश्न संख्या १७६

जिला जैसलमेर की तहसीलों में इस वर्ष कृषकों को दिया गया तकावी ऋण ।

श्री हनवन्त सिंह—क्या कृषि मन्त्री निम्नलिखित प्रश्नका उत्तर देने की कृपा करेंगे :-- जिला जैसलमेर की तहसीलों में इस साल ऋण के रूप में कितनी तकावी काश्तकारों को बांटी गई व कुल कितनी रकम मन्जूर शुदा थी ?

श्री रामनिवासमिर्धा— जिला जैसलमेर में कूओं के लिए रुपया २५,०००) की तकावी मन्जूर की गई । तहसीलों में कितनी तकावी काश्तकारों को बांटी गई है, इस बाबत अभी जानकारी कलेक्टर से नहीं आई है ।

श्री हनवन्तसिंह—प्रश्न को दिये महीना भर से ऊपर हो गया, तब भी जवाब नहीं आया ?

श्री अध्यक्ष—यह तो जैसलमेर का सवाल है । जैसलमेर बहुत दूर है । (हंसी) नेक्स्ट टर्न पर दे दें आप इसका जवाब ।

श्री हिम्मतसिंह—क्या....

श्री अध्यक्ष—नेक्स्ट टर्न पर पूछ लीजियेगा ।

प्रश्न संख्या १७७

वर्तमान वर्ष में राज्य सरकार द्वारा सहकारी विभाग के इन्सपेक्टर्स को ट्रेनिंग में भेजने सम्बन्धी आदेश

श्री चांदमल मेहता—क्या मन्त्री, सहकारी विभाग निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे—

(क) चालू वर्ष में सहकारी विभाग के किन किन इन्सपेक्टर्स को ट्रेनिंग के लिए भेजने का आदेश राज्य सरकार द्वारा दिये गये हैं ?

(ख) उक्त इन्सपेक्टर्स का सीनियोरिटी लिस्ट में कौन कौन सा स्थान है ?

(ग) इन्सपेक्टर्स की सीनियोरिटी लिस्ट क्या पी. एस. सी. द्वारा स्वीकृत है ?

(घ) ऐसे कौन कौन इन्सपेक्टर्स हैं जो पहले परिक्षक रह चुके हैं व जिन्हे अब ट्रेनिग में भेजा जा रहा है ?

[श्री चांदमल मेहता]

(ङ) क्या यह सही है कि इन्सपेक्टर्स को इस शर्त पर ट्रेनिंग से मुक्त रखने के आदेश दिये गये हैं कि वे आगे प्रोमोशन का हक छोड़ दें ?

(च) यदि हां, तो किन किन इन्सपेक्टर्स को ऐसे आदेश दिये गये हैं; उनका सिनियोरिटी लिस्ट में कौन कौन सा स्थान है ?

(छ) ऐसे कौन कौन इन्सपेक्टर्स हैं जो पहिले ओफिशियेटिंग असिस्टेन्ट रजिस्ट्रार रह चुके हैं व जिन्हें इस किस्म की आज्ञा दी गई है ?

श्री **रामनिवास मिर्धा**—(क) चालू वर्ष में जिन इन्सपेक्टरों को ट्रेनिंग में भेजे जाने के आदेश दिये गये हैं उनकी सूची संलग्न है।

(ख) उक्त सूची में जिन इन्सपेक्टरों की सीनियोरिटी सरकार द्वारा निश्चित कर दी गई है उनका नम्बर उनके नाम के आगे अंकित कर दिया गया है। शेष इन्सपेक्टरों की सीनियोरिटी अभी निश्चित नहीं हुई है।

(ग) इन्सपेक्टर्स की सीनियोरिटी लिस्ट सिलेक्शन बोर्ड ने तैयार की, जिसकी जन सेवा आयोग ने पुष्टि की।

(घ) वैसे कोई इन्सपेक्टर्स ट्रेनिंग में नहीं भेजे जा रहे हैं जो सीनियोरिटी लिस्ट बनने के पश्चात् परीक्षक (अंक परीक्षक—auditors) रहे हों।

(ङ) जिन इन्सपेक्टरों ने ट्रेनिंग में जाने से मुक्ति चाही है उन्हें स्वीकृति देते हुए यह स्पष्ट कर दिया गया है कि वे शिक्षित इन्सपेक्टरों की तुलना में विभागीय तरक्की के पहिले अधिकारी नहीं होंगे।

(च) श्री श्यामसुन्दर भार्गव को वैसा आदेश दिया गया था। इनका नाम-सीनियोरिटी लिस्ट में नम्बर ५ पर है।

(छ) श्री श्यामसुन्दर भार्गव।

(कृपया परिशिष्ट ३ देखिये)

श्री चांदमल मेहता—अध्यक्ष महोदय, मेरी वही शिकायत है। सूची मुझे नहीं मिली है, पर चूंकि इस बारे में मुख्य मन्त्री महोदय ने कह दिया है इसलिये इस वक्त तो इस बारे में अधिक मुझे कहना नहीं है। अच्छा यह हो कि इसको आइन्दा टर्न के लिए रख दिया जावे, ताकि सप्लीमेंटरी करने से पहले मैं सूची देख लूं जिससे इसमें मुझे सहूलियत रहे।

Page No.17

श्री अध्यक्ष—सूची मिलने पर देख लीजियेगा और टेबल कर दीजियेगा फिर क्वेश्चन।

श्री चांदमल मेहता—पर कुछ सप्लीमेन्टरी वैसे ही करना चाहूंगा। क्या माननीय मन्त्री महोदय यह बतलाने की कृपा करेंगे कि जिन इन्सपेक्टरों को पी० एस० सी० ने कनफर्म कर दिया है उनको फिर ट्रेनिंग में भेजे जाने का क्या कारण है ?

श्री रामनिवास मिर्धा—जो अन्ट्रेन्ड है उनको ट्रेनिंग दी जा रही है।

श्री चांदमल मेहता—क्या यह सही है कि पी० एस० सी० ने कनफर्म करते समय उनकी योग्यता, और सर्विस आदि इन सारी बातों को तय करके इसके बाद में सीनियोरिटी लिस्ट तय की थी ?

श्री अध्यक्ष—यह ये कैसे बता सकते हैं ?

श्री चांदमल मेहता—क्या यह सरकार उचित मानती है कि...

(घंटी)

श्री अध्यक्ष–No "उचित" or "अनुचित" ! Only informations can be sought in the House.

श्री चांदमल मेहता—और दूसरा सप्लीमेंटरी पूछना चाहूँगा साहब तो। क्या सरकार जितने इन्सपेक्टर्स हैं उन सबको ट्रेन्ड करना चाहती है ?

श्री अध्यक्ष—यह तो बताया है न।

श्री चांदमल मेहता—नहीं साहब; इसमें और है, सबको ट्रेन्ड करना चाहती है क्या ?

श्री रामनिवास मिर्धा—जी हां।

श्री चांदमल मेहता—तो जिन आदमियों ने इस ट्रेनिंग से मुक्त होने की मांग की है उनके मुक्त किये जाने का क्या कारण है ?

श्री रामनिवास मिर्धा—वे किसी कारण से जाना चाहते नहीं थे। शायद उनको यह आशा न हो कि वे पास हो सकेंगे, या और कोई कारण होगा।

श्री चांदमल मेहता—तो क्या इसका उनके प्रोमोशन पर कोई असर पड़ेगा ?

श्री रामनिवास मिर्धा—यह मैंने अपने उत्तर में आपको बताया कि यह पहले ही उनसे साफ कह दिया है कि वे शिक्षित इन्सपेक्टरों की तुलना में विभागीय तरक्की में प्रायोरिटी के हकदार सीनियोरिटी के कारण पर नहीं हो सकेंगे।

श्री अध्यक्ष—It was option of the inspectors, not of the Government.

प्रश्न संख्या १७८

गोपालपुरा तालाब (त० किशनगंज) की सर्वे के आंकड़े

श्री लाल बहादुर—क्या सिंचाई मंत्री निम्न प्रश्नों का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

(क) क्या गोपालपुरा तालाब, तहसील किशनगंज की सर्वे हो चुकी है ?

(ख) अगर हां तो एस्टीमेट कितने का बना है और कब तक काम शुरू हो जावेगा।

(ग) अगर नहीं, तो सर्वे न होने का क्या कारण है ?

श्री रामनिवास मिर्धा (सिंचाई मंत्री)—(क) हां।

(ख) करीब ११,७२,००) रु० का एस्टीमेट बना है जो कि विचाराधीन है। उम्मीद है कि अगली अप्रेल तक काम शुरू हो जायगा।

(ग) प्रश्न नहीं उठता।

श्री अध्यक्ष—श्री चांदमल मेहता।

प्रश्न संख्या १७९

सहकारी विभाग के ऑडीटर्स की संख्या, योग्यता एवं सीनियोरिटी

श्री चांदमल मेहता—क्या मंत्री, सहकारी विभाग निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

(क) सहकारी विभाग में ऑडीटर्स की संख्या कितनी है और उनमें ट्रेन्ड कितने हैं ?

(ख) उक्त ऑडीटर्स की सीनियोरिटी लिस्ट कब प्रकाशित की गई ?

(ग) ऐसे कितने ऑडीटर हैं जिन्हें इन्सपेक्टर का दर्जा दिया गया है एवं उनके नाम, योग्यता व लेन्थ ऑफ सर्विस कितनी है ?

[श्री चांदमल मेहता]

(घ) जिन ऑडीटर्स को कार्यवाहक इन्सपेक्टर बनाया गया है उनसे अधिक सीनियोरिटी व योग्यता वाले कौन कौन हैं, जिन्हें उक्त मौका नहीं दिया गया है ?

श्री रामनिवास मिर्धा (सिंचाई मंत्री)—(श्री सहकारी मंत्री की अनुपस्थिति में):

(क) ६०, जिसमें ३५ कार्य कर रहे हैं, १३ शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और शेष जगह खाली हैं।

(ख) ३५ में से ३२ शिक्षा प्राप्त किये हुए हैं।

(ग) राजस्थान निर्माण के समय सिर्फ ६ ऑडीटर कार्य कर रहे थे जिनकी सीनियोरिटी लिस्ट एकीकरण के समय तैयार की गई थी। शेष ऑडीटर्स नये हैं और इनकी सीनियोरिटी लिस्ट अभी नहीं बनाई गई है।

(घ) राजस्थान सरकार की आज्ञा क्रमांक एफ; ४१ (१) । कोप०। ५४ दिनांक ८ अगस्त, १९५५, के अन्तर्गत तमाम ऑडीटर्स को इन्सपेक्टर का दर्जा दिया जा चुका है।

(ङ और च) 'घ' के उत्तर के बाद यह प्रश्न ही नहीं उठता है।

श्री चांदमल मेहता—इसकी सीनियोरिटी लिस्ट अभी तक नहीं बनाये जाने के क्या कारण हैं ?

श्री रामनिवास मिर्धा—सरकार के विचाराधीन है, सीनियोरिटी लिस्ट तैयार करने की बात।

श्री चांदमल मेहता—यह विचाराधीन कब से है, और कब तक यह 'विचाराधीन' समाप्त हो जायगा ?

श्री रामनिवास मिर्धा—कोई निश्चित समय तो नहीं दिया जा सकता है लेकिन जल्दी से जल्दी तय किया जायगा।

श्री चांदमल मेहता—क्या यह सही है कि सीनियोरिटी लिस्ट तैयार नहीं होने की वजह से जो जूनियर व्यक्ति हैं उनको ऊंची ग्रेडें दी जा रही हैं।

श्री रामनिवास मिर्धा—अगर आप कोई विशेष तौर से बताए तो उत्तर दिया जा सकता है।

श्री चांदमल मेहता—क्या यह सही है कि इन्सपेक्टर्स के तीन ग्रेड हैं और ऑडीटर्स जो कि जुनियर हैं और जो दूसरी ग्रेड में हैं उनमें से कई व्यक्तियों को नं० १ दे दिया गया है।

श्री रामनिवास मिर्धा—आप किसी विशेष व्यक्ति के लिए पूछें तो बता सकते हैं!

श्री हरिकृष्ण व्यास—नहीं। लिस्ट के अभाव में सरकार को इस बात की तसल्ली कैसे हो सकती है कि अन्याय नहीं हुआ है? कोई संबन्धित सदस्य बताये, वह बात जुदा है; लेकिन लिस्ट के अभाव में सरकार को इस बात की तसल्ली कैसे होती हैं कि अन्याय नहीं हो रहा है?

श्री रामनिवास मिर्धा—सरकार उनकी योग्यता, लेन्थ ऑफ सर्विस और कार्य परायणता देखकर ही सिलेक्शन करती है।

श्री हरिकृष्ण व्यास—तो क्या विशेष केटेगरी के लोगों के सब डिटेल्स सरकार के पास मौजूद होने के पश्चात् भी सीनियोरिटी डिटर्मिन करने में टाइम लगता है, ऐसा समझें।

श्री अध्यक्ष—नेक्स्ट।

प्रश्न संख्या १८०

सन् ५३-५४ में पकड़े गये वेजीटेबल घी के पीपे

श्री प्रभुदयाल—क्या एक्साइज़ मंत्री निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

(क) सन् ५३-५४ में वेजीटेबल घी के कितने पीपे पकड़े गये?

(ख) क्या यह सही है कि गोदाम के ६० वेजीटेबल घी के टिनों में पानी भरा मिला था?

(ग) अगर हां, तो इसकी जांच में कौन २ अधिकारी व कर्मचारी पकड़े गये तथा उनके विरुद्ध क्या कार्यवाही की गई?

श्री रामनिवास मिर्धा (सिंचाई मंत्री, एक्साइज़ मंत्री महोदय की अनुपस्थिति में):—

(क) सन् ५३-५४ में राजस्थान में वेजीटेबल घी के १८२३ पीपे पकड़े गये।

(ख) जी हां।

(ग) इस मामले में विभाग द्वारा स्टोरकीपर श्री गफूर मोहम्मद मोहर्रिर व फिदाहुसैन चौकीदार दोषी पाये गये; जिनका चालान सिटी मजिस्ट्रेट बीकानेर की अदालत में किया जा चुका है। निर्णय की प्रतिक्षा है।

Page No.21

कु० श्री जसवन्तसिंह—क्या राजकीय गोदामों में ऐसे केमीकल्स रखे हुए हैं कि जिनको वजह से घी के पीपों में पानी बन गया है।

श्री अध्यक्ष—This is something subjudice. श्री जगतसिंह झाला।

प्रश्न संख्या १८१

जिला चित्तौड़गढ़ की विभिन्न तहसीलों में शरणार्थियों को दी गई धनराशि

श्री जगतसिंह झाला—क्या पुनः स्थापन मंत्री निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

(क) जिला चित्तौड़गढ़ में हर एक तहसील में कितने शरणार्थी बसे हुए हैं ?

(ख) उनमें से कितने क्लेमेंट हैं और कितने नोन क्लेमेंट हैं ?

(ग) इन शरणार्थियों में से कितनों को मुआवजा और कर्ज मिल चुका है और कितनों को बकाया है ?

(घ) चित्तौड़गढ़ जिले में अब तक इनको कितनी धनराशि वितरित की जा चुकी है ?

(ङ) क्या यह सही है कि चित्तौड़ खास में स्टेशन की व कस्बे की धर्मशाला में शरणार्थी एक लम्बे समय से ठहरे हुये हैं ?

(च) क्या सरकार यहां के शरणार्थियों के लिये शीघ्र ही मकान बनाकर देने का विचार करती है ? यदि हां, तो कितने व कब तक ?

श्री रामनिवास मिर्धा (कृषि मंत्री, पुनः स्थापन मंत्री महोदय की अनुपस्थिति में):—

(क)	१.	चित्तौड़ तहसील	२००
	२.	निम्बाहेड़ा तहसील	१००
	३.	प्रतापगढ़ ,,	४०
	४.	छोटी सादड़ी ,,	२०
	५.	बड़ी सादड़ी ,,	१५
	६.	कपासन ,,	१०

[श्री रामनिवास मिर्धा]

७. भैंसरोड़गढ़	,,	१०
बाकी की ७ तहसीलों में करीब १०५ शरणार्थी बसे हुए हैं।		१०५
		५००

(ख) २५० शरणार्थी क्लेमेंट व २५० नोन क्लेमेन्ट हैं।

(ग) इन ५०० शरणार्थियों में से ४१६ को कर्ज दिया गया बाकी ८१ के करीब शरणार्थियों ने कर्ज नहीं लिया व २५० क्लेमेंट हैं उनमें से १५० को मुआवजा मिल चुका है बाकी १०० के करीब रहते हैं जिनको मिलना बाकी है।

(घ) चित्तौड़ जिले में ३,८१,५८१ रु० शरणार्थियों को कर्जा दिया गया।

(ङ) जी हां। स्टेशन व कस्बे वाली सरायों के शरणार्थी लोग छोड़ना नहीं चाहते हैं। उक्त सरायों में शरणार्थियों के आबाद होने से अन्य यात्रियों को कोई खास तकलीफ नहीं है, क्योंकि चित्तौड़ में इनसे भी अधिक आरामवाली दूसरी धर्मशालाएं हैं जहां यात्री लोग ठहर सकते हैं।

(च) जी हां, १०० मकान वहां बनाने की तजवीज सरकार के विचाराधीन है, जमीन लेने की कार्यवाही हो रही है।

श्री जगतसिंह झाला—१०० आदमी बकाया बताया है, उनको कब तक मिल जायगा ?

श्री रामनिवास मिर्धा—उनके लिये कार्यवाही चल रही है और जल्दी ही मिल जायगा।

प्रश्न संख्या १८२

तहसील मावली जिला उदयपुर के चंगेडी नामी बीड़ में सहकारी खेती की भूमि

श्री जगतसिंह झाला—क्या सहकारी मंत्री निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

(क) क्या यह सत्य है कि तहसील माहोली जिला उदयपुर के चंगेड़ी नामी बीड़ में सहकारी विभाग द्वारा सहकारी खेती करने के लिये जमीन दी गई है ?

(ख) इस सहकारी फार्म में कितने यादव सदस्य व कितने अन्य सदस्य हैं ?

(ग) क्या यह सही है कि इन्हें हर साल कर्ज दिया जाता है ? यदि हां, तो क्या उसकी अदायगी बराबर होती है ?

Page No.23

श्री रामनिवास मिर्धा (कृषि मंत्री, सहकारी मंत्री की अनुपस्थिति में) — (क) हां।

(ख) यादव ६७। अन्य कोई नहीं।

(ग) हर साल कर्ज नहीं दिया जाता है। कर्जे की अदायगी भी होती है।

श्री जगतसिंह झाला—केवल यादवों पर ही इतनी कृपा होने का क्या कारण है ?

श्री रामनिवास मिर्धा—सिर्फ उन्होंने ही सोसायटी बनाई है।

श्री जगतसिंह झाला—क्या और लोगों की दरख्वास्तें पेश नहीं हुई थीं। और भी आना चाहते थे लेकिन उनको नहीं लिया गया है, सरकार के ध्यान में है ?

श्री रामनिवास मिर्धा—जो कोई भी लोग सोसाइटी बनाकर कर्जे की दरख्वास्त देते हैं उन्हें बैंक नियमानुसार कर्जा देते हैं।

श्री जगतसिंह झाला—क्या यह माना जाय कि मिनिस्टर साहब के कृपा-पात्र होने की वजह से उन्हें दिया गया है।

श्री अध्यक्ष—श्री जगतसिंह झाला, नेक्स्ट क्वेश्चन।

प्रश्न संख्या १८३।

जिला चित्तोड़गढ़ की तहसीलवार सहकारी समितियां एवं उन्हें ऋण

श्री जगतसिंह झाला—क्या मन्त्री सहकारी विभाग निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे :

(क) जिला चित्तौड़गढ़ में तहसीलवार अब तक कुल कितनी सहकारी समितियां कहां कहां पर स्थापित हो चुकी हैं ?

(ख) गत तीन वर्षों में इन सहकारी समतियों को कितना कितना कर्ज दिया जा चुका है ?

श्री रामनिवास मिर्धा—(कृषि मंत्री, मंत्री सहकारी विभाग की अनुपस्थिति में)—(क) जिला चितौड़गढ़ में तहसीलवार अब तक निम्न लिखित संख्या में सहकारी समितियां स्थापित हो चुकी है, जिनके नाम तथा स्थान की सूची सदन की मेज पर रखी गई है।

(कृपया परिशिष्ट ४ देखिये)

श्री जगतसिंह झाला—मुझे नहीं मिली है।

श्री जसवन्तसिंह—आपको ताज्जुब क्यों होना चाहिये, इस तरह की बातों से।

श्री रामनिवास मिर्धा—नाम तहसील संख्या समितियां

नाम तहसील	संख्या समितियां
छोटी सादड़ी	५
प्रतापगढ़	११
बेगूं	४
अचनारा	४
बड़ी सादड़ी	१
कपासन	६
चित्तोड़गढ़	६
राशमी	१
निम्बाहेड़ा	२
डूंगला	१
गंगराड़	२
मीजान	४६

(ख) गत तीन वर्षों में इन सहकारी समितियों को जो कर्जा दिया गया है वह निम्नलिखित है:

सन् ५३—५४ में १७२६ रु०
सन् ५४—५५ में ५८५० रु०
सन् ५५, ५६ में ४०५२५ रु०।

प्रश्न संख्या १८४

कस्टम विभाग के नाकेदारों की प्रोवीजनल सूची का प्रकाशन एवं उनके अनुसार ग्रेड देना

श्री जगतसिंह झाला—क्या पृथक राजस्व मन्त्री निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे: (क) क्या कस्टम विभाग के नाकेदार की प्रोवीजनल लिस्ट को प्रकाशित हुए करीब एक वर्ष हो चुका है?

(ख) यदि हां, तो कितने व्यक्तियों को लिस्ट के अनुसार ग्रेड मिल चुका है व कितने को मिलना बाकी है।

[श्री जगतसिंह झाला]

(ग) क्या यह सच है कि इनको मौजूदा तनख्वाह लोअर ग्रेड के क्लार्कों से भी कम मिल रही है ?

(घ) सरकार इनको भविष्य में लिस्ट के माफिक कब तक ग्रेड देने का विचार रखती है ?

श्री रामनिवास मिर्धा (कृषि मन्त्री, पृथक, राजस्व मन्त्री की अनुपस्थित में) :

(क) हां।

(ख) नई वेतन श्रृंखला में फर्स्ट ग्रेड के नाकेदारों का वेतन अभी मन्जूर नहीं किया गया है।

(ग) कुछ मामलों में हो सकता है। समस्त नाकेदार सेकिन्ड ग्रेड ५०.३.८० में कभी के फिक्स किये जा चुके हैं। लोअर डिवीज़नल क्लर्क का ग्रेड ५०.४.६० ई.बी.५. १२० का है अतः ऐसे मामलों में वेतन में अधिक अन्तर नहीं होना चाहिए।

(घ) मामला सरकार के विचाराधीन है और जल्दी ही निर्णय की आशा है।

प्रश्न संख्या १८५

धौलपुर शहर में प्रति माह निष्क्रान्त सम्पत्ति से प्राप्त आय एवं उसकी वसूली

श्री हंसराज जटिया—क्या निष्क्रान्त सम्पति मन्त्री निम्न लिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे: (क) धौलपुर शहर में हर माह निष्क्रान्त सम्पत्ति से कितने किराये की आमदनी है ? क्या किराये की वसूली बराबर होती रहती है ? यदि नहीं, तो उसकी वसूली के लिये क्या कार्यवाही की जा रही है ?

(ख) बाड़ी नगर में किराये की हर मास कितनी आमदनी होती है , कितनी बकाया है और उसकी वसूली के लिए क्या कार्यवाही की जा रही है ? अब तक बकाया रहने का क्या कारण है ?

श्री रामनिवास मिर्धा (कृषि मन्त्री , श्री पुनःस्थापन मन्त्री की अनुपस्थिति में)—

(क) निष्क्रान्ति सम्पत्ति शहर धौलपुर की हर मास किराये की आमदनी ३२१ रु० ११ आना है। किराये की बराबर वसूली नहीं हो पाती है। ३६६८ रु० ३ आ० अक्टूबर, सन १९५५ तक की बकाया है। जिन लोगों ने किराया नहीं दिया है, उनको डिमान्ड नोटिस भेजे जाते हैं तथा वसूली बकाया के समय समय पर रीजनल सेटिलमेंट कमिश्नर को भी लिखा जाता है।

[श्री रामनिवास मिर्धा]

(ख) बाड़ी में हर मास किराया निष्क्रान्त भूमि का ६५० रु० है। बकाया अक्टूबर सन १९५५ तक १४,९५६ रु० ८ आ० है। जिन लोगों का किराया बाकी है उनके प्रति ऊपर (क) के उत्तर के अनुसार कार्यवाही की जा रही है।

प्रश्न संख्या १८६

श्री अध्यक्ष—186 is kept for tomorrow.

प्रश्न संख्या १८७

श्री अध्यक्ष—श्री संग्रामसिंह।

(प्रश्नकर्त्ता अनुपस्थित -कृपया परिशिष्ट १ देखिये)

प्रश्न संख्या १८८

जिला जैसलमेर में एफोरेस्टेशन के कार्य की प्रगति

श्री हनवन्तसिंह—क्या वन मन्त्री निम्न प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे : एफोरेस्टेशन के कार्य में जिला जैसलमेर में कितनी प्रगति हुई है ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा (वन मन्त्री)—जैसलमेर जिले में एफोरेस्टेशन का कोई कार्य अभी तक नहीं हो रहा है।

श्री हनवन्तसिंह—तो फिर कहां हो रहा है ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा—बाकी दूसरे और जिलों में हो रहा है। जैसलमेर में उपयुक्त स्थान नहीं मिला है।

श्री खेतसिंह—इसका क्या कारण है कि जैसलमेर में अभी तक एफोरेस्टेशन नहीं हो रहा है ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा—वहां शीघ्र नहीं हो रहा है, और स्थान ऐसे हैं जहां यह काम जल्दी लिया जा सकता है।

Page No.27

कुं० श्री जसवन्तसिंह—क्या इसलिये जैसलमेर में एफोरेस्टेशन नहीं हो रहा है कि कहीं एफोरेस्टेशन के साथ साथ मलेरिया भी नहीं फैल जाय ?

वृज सुन्दर शर्मा—इस साल तो वाकई में वहां वर्षा ज्यादा हुई पर आयन्दा हो या नहीं हो यह नहीं कहा जा सकता।

कुं० श्री जसवन्तसिंह—क्या वहां मेडिकल डिपार्टमेंट की राय से एफोरेस्टेशन नहीं हो रहा है ?

श्री वृज सुन्दर शर्मा—जैसलमेर में कहीं मलेरिया नहीं हो जाय, इसलिये एफोरेस्टेशन नहीं किया गया।

(हंसी)

श्री अध्यक्ष—हवाई जहाज से जैसलमेर में भी बीज डाले तो गये थे ?

श्री वृज सुन्दर शर्मा—जैसलमेर में नहीं डाले गये थे।

सदन से अनुपस्थित रहने की अनुमति

श्री अध्यक्ष—सभा की कार्यवाही प्रारम्भ होने से पूर्व मैं माननीय सदस्यों को सूचित करता हूँ कि श्री लक्ष्मणसिंह, विभाजन संख्या ८६, ने दिनांक ५ दिसम्बर, १९५५ से सत्र के अन्तिम दिवस तक विधान सभा की बैठकों से अनुपस्थित रहने की आज्ञा के लिये प्रार्थना की है। क्या सदन की अनुमति है कि आज्ञा प्रदान की जाय ?

(स्वीकृत)

आज्ञा प्रदान की गई।

आज नोन ओफिशियल डे (Non Offfcial Day) है। We take the Resolutions.

सदन के भविष्य के कार्य-क्रम सम्बन्धी वाद-विवाद

श्री कुं० जसवन्तसिंह—Sir, before the work starts, I would like, since many of the members on our side as well as on the other side are anxious, to know the programme of the Assembly. We have to make our own programmes. So how long are we going to sit. I am not suggesting that we should not work or that we should immediately adjourn--nothing of the kind, still we have our own

Page No.28

[कु० श्री जसवन्तसिंह]

plans to make and therefore would like to know the programme of the Assembly as to how long we will sit and when we will adjourn. If some light can be thrown...

श्री रामकिशोर व्यास (गृह मंत्री)—जब तक म्युनिसिपेलिटीज़ बिल खत्म नहीं हो जाय तब तक तो सदन चलेगा ।

कु० श्री जसवन्तसिंह—That means about a month more

श्री रामकिशोर व्यास—जितना भी वक्त इसमें लग जायं ।

कु० श्री जसवन्तसिंह—Probably the Leader of the House will throw more light on this.

क्वेश्चन यह है कि हम कब तक मीट कर रहे हैं; हम लोग भी अपने काम के लिये प्लान्स बनाना चाहते हैं ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री)—मैं समझता हूँ कि जो म्युनिसिपेलिटीज़ बिल विचारार्थ चल रहा है उसको समाप्त कर लिया जाय । इसको कितने दिन में समाप्त कर लिया जाय, यह तो मेरे हाथ में नहीं । मैं समझता हूँ, अध्यक्ष महोदय के हाथ में ज्यादा है ।

श्री अध्यक्ष—अगर इसी गति से कार्य हुआ तो मैं समझता हूं जल्द ही समाप्त हो जायगा । How many hours are needed-that is the question for discussion. Over 100 hours or below 100 hours ?

Shri Jagat Singh Jhala to move his resolution.

अशासकीय संकल्प

धर्म-परिवर्तन करने वाली मिशनरीज संस्था को विदेशी सहायता बन्द करवाने सम्बन्धी संकल्प

श्री जगतसिंह झाला—माननीय अध्यक्ष, मेरा प्रस्ताव इस प्रकार है :

"इस सदन की सम्मति है कि राजस्थान में धर्म परिवर्तन करने वाली क्रिश्चियन-मिशिनरी संस्था को विदेशी सहायता बन्द करवाने के लिये भारत सरकार से प्रार्थना की जाये ।"

[श्री जगत सिंह झाला]

राजस्थान में ईसाई मिशनरियों का प्रचार दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। इसके बारे में हमने सदन में समय समय पर निवेदन किया है पर सरकार द्वारा इस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। जिस वक्त अंग्रेजों का शासन भारतवर्ष में था उस समय से कांग्रेस का शासन हमारे देश में होने के बाद इन क्रिश्चियन मिशनरीज़ का प्रभाव दुगुना बढ़ गया है। सारे राजस्थान में, खास कर डूंगरपुर–बांसवाड़ा में इनका प्रचार बहुत बढ़ा हुआ है। वहां के भीलों को, जो गरीबी और अशिक्षा के कारण बहुत पिछड़े हुए हैं, धन का लोभ देकर और दूसरी प्रकार की सहायताएं देकर उनका धर्म परिवर्तन करते हैं। इस प्रकार धर्म–परिवर्तन किया जाना अच्छा नहीं।

हम जानते हैं कि हमारे संविधान में इस प्रकार की बात मंजूर की गई है कि धर्म में कोई आक्षेप नहीं करे, जो मर्जी से धर्म परिवर्तन करना चाहें उन्हें करने दिया जाय। परन्तु हमारे यहां तो ऐसा है जो लोग धर्म परिवर्तन नहीं करना चाहते उनका जबरदस्ती धर्म परिवर्तन कराया जाता है। इस तरह के समाचार आये दिन अखबारों में आते हैं। अभी दो—तीन महीनों पहले नाइके ग्राम में एक भील को बहुत पीटा गया और इस कारण से बाद में उसकी मृत्यु भी हो गई। धर्म परिवर्तन करने के लिये उसे मजबूर किया गया, पीटा गया था, उसके लिये क्या कदम उठाया गया, यह तो मन्त्री महोदय ही बता सकते हैं। इस तरह की कार्यवाहियों से आम लोगों में क्षोभ बढ़ रहा है। इसलिये सदन को ऐसी राय पास करनी चाहिये कि क्रिश्चियन मिशनरीज़ को जो इस प्रकार बढ़ावा दिया जा रहा है उसको रोकने के लिये भारत सरकार से प्रार्थना की जाय कि इनको जो विदेशी सहायता दी जा रही है उसको बन्द कराया जाय।

राजस्थान में खास तौर से डूंगरपुर बांसवाड़ा सुकेत और भवानी मंडी के हिस्सों में इनका प्रचार बढ़ गया है। खास तौर से डूंगरपुर बांसवाड़ा में इनका प्रचार इतना ज्यादा हो रहा है कि ये गांव गांव में जाकर भील लोगों को जो कि गरीबी से बिलकुल दबे हुए हैं उनको दवाइयां देते हैं और उनके घरों में छोटे—छोटे बच्चों को और बड़े लोगों को धर्म-परिवर्तन करने के लिये मजबूर करते हैं।

अब मैं बड़े कस्बों के लिये भी निवेदन करूं, किस किस प्रकार इनका प्रचार चलता है। हमारे जयपुर शहर में सेंट जेवियर्स है, जिसके विषय में कई बार यहां भी चर्चा चली। उसके बारे में मैं दो एक आदमियों की बातें प्रस्तुत कर देना चाहता हूं जिससे जनता और सरकार को सावधान होना चाहिये। यह पुस्तक आर्य समाज की ओर से प्रकाशित हुई है। इसकी कुछ बातोंकी ओर सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, जिनसे आपको मालूम होगा कि ये राष्ट्र विरोधी बातें उग्रता से बढ़ती जा रही हैं और अगर सरकार ने सावधानी से काम नहीं लिया तो सरकार को एक दिन बुरी तरह से दबना पड़ेगा और यह राष्ट्र विरोधी भावना उग्र रूप धारण कर लेगी।

यहां सेंट जेवियर्स में राष्ट्रीय झंडे का अपमान किया गया, इस बात का सदन में जिक्र किया गया था; पर सरकार की ओर से कोई जांच नहीं कराई गई। राजस्थान सरकार का बनाया

[श्री जगतसिंह झाला]

हुआ शिक्षा विभाग का जो कोड है उसकी धारा का उल्लंघन करके वहां धार्मिक शिक्षा का पीरियड रखा जाता है और बालकों को पढ़ाया जाता है। हिन्दू और दूसरे संप्रदाय मानने वाले मास्टर हैं उनके साथ बर्ताव बुरा रहता है और क्रिश्चियन मास्टर हैं उनके साथ अच्छा बर्ताव किया जाता है। लड़कों के अन्दर भी इसी तरह का बर्ताव किया जाता है। रेड क्रोस सोसाइटी की ओर से दूध वगैरह वितरित किया जाता है वह हिन्दुओं के बच्चों को कम देते हैं और क्रिश्चियन लड़कों को ज्यादा देते हैं। ये सारी घटनाएं नई घटनाएं नहीं हैं और राजस्थान सरकार हजारों-लाखों की एड इसको देती है।

इन सब बातों को देखते हुए अगर उचित समझा जाय तो मध्य भारत और मध्य प्रदेश की तरह यहां पर भी जांच कमीशन बैठाया जाय कि ये लोग हमारे यहां धर्म-परिवर्तन कराने के लिये क्या क्या कार्यवाहियां कर रहे हैं और जांच से ठीक पाया जाय तो भारत सरकार से निवेदन किया जाय कि इन क्रिश्चियन मिशिनरीज़ को जो विदेशों से सहायता मिलती है उसे बन्द किया जाय और फ्रांस और इटली के एजेंट जो यहां प्रचार करते हैं उनको रोका जाय।

अगर ऐसा नहीं किया गया तो जिस प्रकार पाकिस्तान बना उसी प्रकार यहां पर ईसाइस्तान का नारा एक दिन बलन्द कर सकते हैं और यह हमारे देश के लिये घातक हो सकता है। यह प्रश्न बड़ा गम्भीर प्रश्न है और इस पर हर एक माननीय सदस्य को सदन में अपनी राय प्रकट करके इस प्रस्ताव को पास करना चाहिये।

(राज श्री हिम्मत सिंह अटरू, सभापति, पदासीन)

श्री भैरोंसिंह (दांता रामगढ़)—माननीय सभापति महोदय, ईसाई धर्म की मिशनरीज के सम्बन्ध में चित्तौड़ से आने वाले माननीय सदस्य ने जो प्रस्ताव रखा है उसका में समर्थन करता हूं।

इस प्रस्ताव के द्वारा यह मांग की गई है कि ये ईसाई मिशनरियें जो कि भारत वर्ष में फिर, विशेष तौर से राजस्थान प्रान्त में, धर्म-परिवर्तन सम्बन्धी कार्यवाहियां करती हैं और इसके लिये उनको विदेशी सहायता दी जाती है उस सहायता को बन्द कराने के लिये भारत सरकार से प्रार्थना की जाय।

यह प्रश्न बड़ा महत्वपूर्ण है और मैं समझता हूं कि राजस्थान विधान सभा में कई दफा प्रयत्न करने के बाद आज इस पर कामयाबी हुई है कि इस पर सदन में आज विचार किया जाय और आवश्यक हो तो जांच कराई जाकर आयन्दा के लिये जो कार्यवाही उचित हो सकती है, अमल में लायी जावे।

[श्री भैरोंसिंह कछवाहा]

भारत सरकार ने जो इस सम्बन्ध में पार्लियामेंट में अपना रुख बताया उस रुख से भी स्पष्ट है कि अपना देश आजाद होने के बाद इस प्रकार की मिशिनरियों ने गरीब इलाकों में हर प्रकार से लोगों को प्रलोभन देकर इस बात की प्रेरणा दी है कि वे ईसाई बनें और जिस प्रकार कई मित्रों ने आंकड़े बताये थे भारतीय संसद में कि १९४७ से ५२ तक इन क्रिश्चियन मिशनरियों की संख्या दुगुनी हो गई है। उन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि मध्य प्रदेश, मध्य भारत और राजस्थान में खास तौर से इन मिशनरियों की कार्यवाहियां बढ़ गई हैं।

माननीय सभापति, मध्यप्रदेश और मध्य भारत, इन दोनों देशोंकी सरकारोंने इस संबन्धमें उचित कार्यवाही करने के संबन्ध में एक जांच कमेटी मुकर्रर की जिसने जांच की और वह इस नतीजे पर पहुंचे कि धर्म परिवर्तन की कार्यवाही ज्यादा से ज्यादा की जा रही है। मध्य भारत की विधान सभा में यह प्रश्न आया कि राजस्थान के इलाकों में इस प्रकार की मिशनरी का कार्य बढ़ रहा है इसलिये यह आवश्यक है कि राजस्थान सरकार किसी भी तरह से इसको रोकने की कार्यवाही करे। लेकिन राजस्थान सरकार ने अभी तक न मालूम क्यों उनकी एक्टीवीटीज़ पर ध्यान नहीं दिया ? ये लोग कई तरह के कार्य कर रहे हैं। कई क्षेत्रों में चिकित्सा का कार्य करते हैं व कहीं शिक्षा और कहीं गरीबों को कपड़ा आदि देने का कार्य करते हैं और गरीबों के बच्चों को किस प्रकार अंग्रेजी ढांचे में ढालने की कोशिश करते हैं। आज-कल कई शिक्षा संस्थाएं उनके लिए आमदनी का साधन बन रही हैं और जितने भी पढ़े लिखे और मालदार लोग हैं उनको वे अपनी तरफ इसके द्वारा आकर्षित करते हैं। मालदार लोगों के बच्चे पढ़ने के लिये वहां जाते हैं और उनके माता पिता अपने बच्चों को इसलिये वहां पर भेजते हैं कि उनके बच्चे वहां पर अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकें और जल्दी से जल्दी शिक्षा प्राप्त कर सकें। लेकिन होता क्या है ? जैसा वे चाहते वैसा नहीं होता, होता कुछ और ही है। वहां पर इन लोगों को अपनी भारतीय संस्कृति के अनुसार शिक्षा नहीं देते बल्कि भारतीय संस्कृति के विपरीत उनमें किस तरह से संस्कार निर्माण किये जावें, इस प्रकार की शिक्षा दी जाती है। छोटे छोटे क्षेत्रों में जहां गरीब लोग रहते हैं और जो इन लोगों के मकसद को समझ नहीं सकते उन लोगों में इसतरह का वाता वरण बनाया जाता है कि उनकी सहानुभूती सरकार के प्रति नहीं रहे और उनकी तरफ आकर्षित हो जाएं। इस तरह का वे वातावरण बनाते हैं; खास तौर से बांसवाड़ा डूंगरपुर आदि इलाकों में जहां पर गरीब लोग रहते हैं। प्रतापगढ़ में भीलों की आबादी है, वहां पर इन लोगों ने अपनी संस्थाएं खोल रखी हैं। कोई संस्था बच्चों में वहां पर दूध बांटने का काम करती है तो कहीं कोई गरीब लोगों में कपड़े और पुस्तकें बांटने का काम करती है व कई संस्थाएं दवाइयें लोगों में बांटती है और वहां के गरीब लोगों को बताते हैं कि तुम्हारी सरकार से तुम्हारा भला होने का नहीं है, यदि तुम्हें तरक्की करना है, यदि तुम्हें सुखी और सुविधाओं से रहना है तो जिस तरह से हम बतावें कार्य करो। वे लोग उनको पैसा भी दे देते हैं। पैसों के लालच में आकर गरीब लोग धर्म परिवर्तन का फैसला कर देते हैं। उस तरह का आडम्बर रख कर गरीब लोगों को यह कहते हैं कि अमुक भारतीय जिसके पास

[श्री भैरोंसिंह कछवाहा]

कपड़ा नहीं था, जिसके पास खाने को पैसा नहीं था, उसकी हालत को देखो; वह हमारे संपर्क में रह कर कैसा हो गया है? अब उसके बच्चे स्कूल में पढ़ते हैं, अच्छे कपड़े पहनते हैं उसको कितनी सुविधाएं हमने दी है; जितनी हम उसको दे सकते थे दी है। ऐसी सूरतमें सारे के सारे गरीब लोग यह अनुभव करते हैं कि हमारी सरकार वास्तव में हमारे लिए कुछ नहीं कर रही है और न कुछ कर सकती है, अगर हम इनकी संगत में आ जावें तो हमारी दशा भी इसी प्रकार सुधर जावेगी। इस तरह से ये लोग दूर दूर धर्म परिवर्तन की कार्यवाही में सफल होते जा रहे हैं। यह मैं मानता हूं कि वे सेवाएं करते हैं। यह भी मैं मानता हूं कि सरकार उन गरीबों की जितनी भी मांगे आवश्यक हैं उनको पूरा नहीं कर सकती। सरकार को चाहिये कि वह इस ओर ध्यान दे।

जहां तक उन लोगों के स्वास्थ्य का सवाल है सरकार कुछ ध्यान नहीं देती है और इस कारण वे लोग कहते हैं कि हमारे साथ रहने में आपकी तरक्की होगी। इन लोगों ने अपने अड्डे सब जगह लगा रखे हैं और ज्यादातर जहां जहां गरीब लोग रहते हैं, लगाये हैं। वह इसलिये और यह सोच कर कि गरीबों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने से वे उनके जाल में जल्दी फंस जाते हैं। इतना ही नहीं, अब तो उन्होंने पढ़े लिखे लोगों में भी अपना यह जाल फैलाना शुरू कर दिया है। बड़े बड़े और पढ़े लिखे लोग यह चाहते हैं कि उनके बच्चे जल्दी से जल्दी अंग्रेजी पढ़लें और अंगरेज बन जावें; अंग्रेजी भाषा सीख कर लड़के पाश्चात्य सभ्यता में रंग जावें। इसीलिये मालदार और पढ़े लिखे लोग अपने बच्चों को इनकी शिक्षा संस्थाओं में भर्ती कराते हैं। ये लोग कहते तो यह है कि भारतीय लोगों को शिक्षित बनाने के लिए यह संस्थाएं खोली जा रही हैं मगर होता क्या है? इस विषय में सेन्ट जेवियर्स हाई स्कूल का ही उदाहरण ले लीजिये। अगर कोई यह कहे कि भारत के लोगों को शिक्षित बनाने के लिये ये संस्थाएं है और ये संस्थाएं यह चाहती हैं कि भारतीय ज्यादा से ज्यादा तादाद में शिक्षित बनें और उनको सुविधा मिले और वे लोग ज्यादा से ज्यादा तरक्की करें, यदि इस प्रकार की वास्तव में चीज होती तो कोई बात नहीं थी। मगर जिन्होंने भारत को वर्षों तक गुलाम बनाये रखा। भारत की संस्कृति आदि को नष्ट किया क्या ऐसे लोगों से आशा की जा सकती है कि वे लोग भारतवर्ष के लिये कोई इस प्रकार की कार्यवाही करेंगे। उनका सारा मकसद यह है कि भारत के लोगों में देश प्रेम की जो भावना बनी हुई है वह नष्ट हो जाए और उस देश प्रेम की भावना को नष्ट करके वे अपने पैर भारत में बनाये रखना चाहते हैं। जब भारतवर्ष के लोगों के दिलों से देश-प्रेम की भावना नष्ट हो जावेगी तभी ये लोग रह सकते हैं। आसाम में जिस तरह से इन लोगों ने नागा प्रान्त में किया वह हमारे सामने है। आसाम में गरीब लोग रहते हैं। वहां पर इन्होंने धर्म परिवर्तन किया और आज वहां के लोग नागा प्रान्त की अलग मांग कर रहे हैं और वहां के लोग सरकार से मुकाबला करने के लिये तैयार हो रहे हैं। यह सारी की सारी चीज इन्हीं मिशनरियों की देन है। आज सेंट जेवियर्स हाई स्कूल में अच्छी शिक्षा दी जाती है, यह लोगों का अनुमान है। मैं मानता हूँ कि १२ महीनों में या डेढ वर्ष में बच्चे अंग्रेजी

[श्री भैरोंसिंह कछवाः]

बोलना सीख जाते हैं और अंग्रेजी के उपन्यास अच्छी तरह से समझ लेते हैं, मगर उनकी भावना भारतीय संस्कृति के अनूकूल जैसी बननी चाहिये वैसी नहीं बनती। उनकी भावना पंडित जवाहरलाल नेहरू या डा० राजेन्द्रप्रसाद के प्रति या भारतवर्ष के प्रति कैसी होनी चाहिये, इसका नमूना सेन्ट जेवियर्स हाई स्कूल में आपको मिलेगा। जिस प्रकार की भावना होनी चाहिये नहीं होती। आप देखेंगे कि हर जगह, हर स्कूल और ओफिसेज़ में पंडित नेहरू, महात्मा गांधी आदि के चित्र होते हैं, राष्ट्रपति के चित्र होते हैं जिससे भारतीय बच्चों का प्रेम उनके प्रति बढ़े, लेकिन यहां इस स्कूल में उसकी जगह क्रोस के अलावा कुछ नहीं मिलेगा। इतना ही नहीं, इसके अलावा जितने भी हिन्दुओं और मुसलमानों के त्योहार होते हैं सभी स्कूल में मनाये जाने चाहिये, लेकिन इन स्कूलों में एक भी त्यौहार हिन्दू, मुसलमानों का नहीं मनाया जाता है। कृष्ण जन्माष्टमी और ग्रहण की ही बात बताता हूं। उस दिन जितने भी हैं उनको मांस चढ़ाया जाता है। इन धार्मिक दिनों में मांस का इस्तेमाल नहीं होता। मगर इन स्कूलों में मांस चढ़ाया जाता है। इस प्रकार के मांस के वातावरण में पले हुए बच्चे कैसे होंगे, इसका अनुमान आप लगा सकते हैं? उस दिन हमारा धर्म इस बात को स्वीकार नहीं करता कि उस दिन किसी प्रकार की हिंसा हो। मगर ये लोग हिंसा करते हैं और बच्चों को यह कहा जाता है कि यह तो भगवान की चीज है। गेहूं, फल, फूल आदि सभी भगवान की चीजें हैं, इसी प्रकार ये भी भगवान की चीज है। यदि कोई खावे तो इसमें क्या हर्ज है? यों तो देखा जाए तो सारी चीजें भगवान की ही हैं। मगर फिर भी इसके लिए कुछ सीमा निर्धारित है। इस प्रकार हमारे मूल-धार्मिक सिद्धान्तों की अवहेलना होती है। अगर इसके प्रतिकूल कोई कार्यवाही होती है...।

श्री खेतसिंह—यह मूल सिद्धान्त किसका है, जनसंघ का है या आपका?

श्री भेरूसिंह—यह जनसंघ और हमारा सबका सिद्धान्त है। इस प्रकार के संस्कारों का निर्माण किया जा रहा है। इसका आखिर में लोगों पर असर क्या होगा इसका असर यह होगा कि लोगों में भारत के प्रति प्रेम नहीं होगा, बल्कि प्रेम की बजाय घृणा होगी। इसलिये सरकार को चाहिए कि सबसे पहला कदम यह उठावे कि एक कमीशन इसके लिए कायम करे और वह इसकी जांच करे कि दरअसल किस प्रकार से इनको इन कार्यवाही पर रोक लगाई जाए और इस मिशन को जो सरकारी सहायता मिलती है, तुरन्त बन्द की जावे। बस इतना ही निवेदन करके अपना भाषण समाप्त करता हूं।

श्री हरिकृष्ण व्यास—माननीय चेयरमेन,....

श्री मानसिंह महार—चेयरमेन महोदय,...

श्री सभापति—श्री मानसिंह महार।

श्री मानसिंह महार—चेयरमेन महोदय, सदन के समक्ष एक ऐसा मामला पेश हुआ है जिसमें कि मुझे कुछ मजबूर होकर बोलना पड़ता है। जो रिज़ोल्युशन हमारे सामने है वह एक तरह से ऐसा दिखाई देता है कि वह वाजिब है किन्तु मुझे देखना पड़ता है कि जिस लाइट में मेरे मित्र दांता रामगढ़ से आये हुए सदस्य ने इस चीज को तोड़ मरोड़ कर रखा है उसको देखने के बाद यह बात महसूस होती है कि मैं भी चन्द शब्द सदन को बताऊं।

मैं इसके बारे में जो कुछ निवेदन करूंगा वह व्यक्तिगत एक्सपीरियेन्सेज़ के आधार पर निवेदन करूंगा। मेरे मित्र ने जितने कि यहां सेन्टजेवियर हाईस्कूल के बारे में दस पांच इधर इधर की बातें बटोर-बटुराकर कहीं उनके मुतल्लिक खास तौर पर निवेदन करूं। मैं यह समझता हूं कि सेंटजेवीयर हाईस्कूल एक बहुत ही अच्छी हाईस्कूल है।

श्री भैंरूसिंह—आपके कितने बच्चे पढ़ते हैं?

श्री मानसिंह महार —(अपना भाषण जारी रखते हुए)वह भी मैं बता दूंगा। यह कह देना कि सेंट जेवियर हाईस्कूल में अनर्थ होता है, वहां बच्चों का धर्म परिवर्तन होता है, वहां ग्रहण के दिन बच्चों को जबरदस्ती मांस खिलाया जाता है, ये सरासर गलत बातें हैं। असलियत यह देखी गई है कि यदि कोई बच्चा मांस नहीं खाये तो उसको जबरदस्ती मांस नहीं खिलाया जाता है। यह उनके बच्चों और उनके माता पिता के ऊपर निर्भर करता है कि जिस तरह से बच्चे वहां चाहें रह सकते हैं और उनके माता पिता उनको रख सकते हैं। इस तरह की शिक्षा भारतवर्ष में अन्य बोर्डिंग हाउस द्वारा संचालित जो स्कूल्स हैं उनमें भी होती है कि जिससे यही होता है कि जिनके बच्चे या माता पिता यह चाहते हैं कि वे वेजिटेरियन रहें तो वे वेजिटेरियन रह सकते हैं और यदि बच्चे चाहते हैं और उनके मातापिता चाहते हैं कि वे नोन वेजिटेरियन रहें तो उसी प्रकार रखे जाते हैं। यह बात सरासर गलत है कि जबरदस्ती उनको मांस खिलाया जाता है। हिन्दुस्तान की और स्कूलों में जो बातें होती हैं वे भी यहां होती हैं। यह कहा जाय कि हिन्सा के नाम पर बच्चों के धर्म का परिवर्तन किया जाता है या उनके दिमाग का परिवर्तन किया जाता है, तो इसको मैं सरासर गलत मानता हूँ।

मेरे मित्र ने अभी शंका करते हुए पूछा कि आपके कितने बच्चे पढ़ते हैं। मैंने इसलिए यह बात कही कि मेरे दो बच्चे हैं। चार वर्ष से उस स्कूल में पढ़ते आ रहे हैं। मुझे पर्सनल तजुर्बा है। जब से इस प्रकार की उस स्कूल के बारे में बातें आई हैं मैं कई मर्तबा पहले भी वहां जाता था, मैंने अन्दरूनी बातें उनकी देखी हैं; जो बातें कही जाती हैं वे निराधार हैं। मेरी जहां तक इत्तला है मैं समझता हूँ कि राजस्थान सरकार ने भी इन बातों की जांच करवाई थी और उनको भी कोई तथ्य नहीं मिला।

इसके अलावा माननीय चेयरमेन महोदय, इस प्रस्ताव के जो प्रस्तावक महोदय हैं उनके सब बच्चे मिशनरी स्कूल में पढ़ रहे हैं। मैं नहीं समझता कि एक तरफ तो जहां धर्म परिवर्तन होता

[श्री मानसिंह महार]

है वहां ऐसे गन्दे स्कूल में बच्चों को भेजते हैं और दूसरी तरफ सदन में प्रस्ताव रखते हैं कि यह कराया जाय, वह कराया जाय। प्रस्तावक के अलावा जो मेरे मित्र दातां रामगढ़ से तशरीफ लाये हैं, जिन्होंने बहुत उछल कर इस प्रस्ताव का समर्थन किया है। जिन लोगों के औलाद नहीं है, हिन्दुस्तान में उनके बच्चे काबिल न हों जिनके औलाद है; ईर्ष्या की दृष्टि से वे चाहते हैं कि सब मेरी तरह हो जायें और बच्चे नालायक हो गये।

(हंसी)

इसलिए प्रस्तावक महोदय ने जो कहा है उस तरफ ध्यान नहीं देना चाहिये। वह बहुत अच्छी स्कूल है।

श्री खेतसिंह—कौनसे मिशनरी स्कूल में ?

श्री मानसिंह महार—उनसे ही पूछ लीजिये ? जिन्होंने इसका समर्थन किया। उनकी चिन्ता नहीं, वे इससे मुक्त हैं। कितना भी बोलिये ? ये तो इन दोनों महानुभावों की बातें हुई।

इसके बाद इस प्रस्ताव का अनुमोदन करने के लिए मेरे बाद एक मित्र खड़े होंगे और वे इसका जोरदार अनुमोदन करेंगे। उनके लिए भी मैं कह दूं कि ये मिशनरी अमेरिका से आये हुए हैं, अमेरिकन पादरी लोग इस स्कूल में पढ़ाते हैं। वे तो चाहे कितनी ही अच्छी बात हो, वहां पर पं० जवाहरलाल नेहरू, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जाकर उसकी सराहना करें, लेकिन जब तक लालफीताशाही जाकर बढ़ाई नहीं करेंगे वे कुछ नहीं कह सकेंगे। इसलिए माननीय चेयरमेन महोदय, आपके जरिये सदन के दोस्तों से यह कहूंगा कि जो कुछ राय बनावें उन लोगों पर राय बनावें जिनके बच्चे वहां पढ़ते हैं।

श्री भैरूंसिंह (वि० सं० १६)—जिनके हर साल बच्चे होते हैं उनकी राय मानें ?

(हंसी एवं करतलध्वनि)

श्री मानसिंह महार—(अपना भाषण जारी रखते हुए) हम तो देश की सम्पत्ति को बढ़ाते हैं, यह कह देना भद्दी बात नहीं। हिन्दू धर्म में यह अच्छी बात है। मेरे मित्र हिन्दू धर्म को मानते हैं कि जिनके बच्चे न हों उसका मुंह न देखा जाय।

(हंसी एवं करतलध्वनि)

यह वास्तविक है। ईसाई धर्म में ऐसा हो सकता हैं क्योंकि वहां पर बच्चों के पैदा होने को रोकने के लिए अक्सर कार्य किया जाता है, लेकिन हमारे देश में तो बच्चे पैदा करना, आवश्यक चीज़ मानी गई है और धार्मिक भी।

[श्री मानसिंह महार]

(हंसी)

अतः ये बातें कहते हुए सदन से निवेदन करूंगा कि इस प्रकार की जो अनर्गल बातें कही गई हैं उन पर ध्यान न दें। वहां पर बच्चों को अच्छी शिक्षा दी जाती है। बाहर इलाकों में ऐसी बात हो तो सरकार जांच कराले, लेकिन इस प्रकार की स्कूलों में व्यर्थ में सरकार अपनी एनर्जी न खोये। ये ही चन्द शब्द कहकर मैं सदन का ज्यादा समय न लूंगा क्योंकि आगे भी सदस्य बोलेंगे।

रावत श्री शंभूसिंह—चेयरमेन महोदय,......

श्री सभापति—श्री हरिकृष्ण व्यास।

श्री हरिकृष्ण व्यास—जमुआ रामगढ़ से आये मेरे माननीय मित्र ने प्रोडक्शन-मेन्युफेक्चर कारखाने में दिलचस्पी ली लेकिन उसके लिए उन्हीं पर छोड़ देता हूं। जो विषय हमारे सामने है उस विषय पर मजाकबाजी और चुटकियां काट कर शायद कुछ अपने ढांचे के साथ सम्बन्ध निभाने की बात तो हो जाय, लेकिन राष्ट्र की दृष्टि से और अपने मुल्क की उन्नति की दृष्टि से यह खतरनाक चीज़ होगी, अगर हम जिस समस्या का उल्लेख इस प्रस्ताव के द्वारा किया गया है उस पर ध्यान नहीं देते। यह क्या बात हुई कि किसके बच्चे कहां पढ़ते है और कहां नहीं पढ़ते हैं? प्रश्न यह है, मैं ठीक अर्ज कर रहा हूं कि पहले इस चीज़ की ओर हमारा ध्यान नहीं गया। अगर कुछ घटनाओं से आज हमारा उस ओर ध्यान जा रहा है; यह हर एक की जिम्मेदारी समझते हुए, न सिर्फ संकेत की बल्कि शीघ्र कार्यवाही करने की आवश्यकता है।

चेयरमेन महोदय, कई दिनों से यह सेन्ट जेवियर का प्रश्न अपने सदन में आ रहा है, न सिर्फ सदन में आ रहा है, लेकिन राजस्थान के समाचार-पत्र जिनसे वाकई मेरा मतभेद रहता है, इस काम के लिए बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने राजस्थान के अन्दर विदेशी साम्राज्यवादी अड्डों की ओर संकेत करके लोगों का ध्यान आकर्षित किया। जिसका नाम है नवयुग और जिसके लिए मेरे माननीय मित्र यह कह गये कि यह तो बड़ी अच्छी संस्था है। मामूली बातें नहीं है चेयरमेन महोदय। उनके बारे में ख्याल कीजिये। मेरी ऐसी मान्यता है, आप सुनेंगे, गौर से सुनेंगे तो आपको हैरत होगी और गुस्सा आयगा और खुद जिम्मेवार से जिम्मेवार सदस्य को आयगा, यह जानकर कि सेन्ट जेवियर स्कूल के बच्चों की मनःस्थिति को किस तरह से बिगाड़ने का प्रयत्न किया जा रहा है। एक-दो दिन पहले का किस्सा है। किसी सिनेमा के अन्दर सब के सब बच्चे गये और किसी प्रसंगवश महात्मा गांधी के ऊपर हमला होकर उनकी मृत्यु का दृश्य दिखलाया गया तो बच्चों की आंखों में पानी आगया लेकिन उस सेन्ट जेवियर स्कूल वालों ने, यह शर्म की बात है कि उनमें से कुछ लोगों ने तालियां बजाई। जो मासूम बच्चे कल जाकर देश के भावी निर्माता होंगे उनके लिए अगर अभी ध्यान नहीं देंगे

[श्री हरिकृष्ण व्यास]

तो आगे जाकर मुल्क को एक जबरदस्त खतरे का सामना करना पड़ेगा। यह कई माननीय सदस्यों के जानकारी की बात है और खुद मुख्यमन्त्री जी के लिए यह जानकारी की बात है। अभी अभी यह कहा गया कि यह तो मामूली बात है और जमुआ रामगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य जानते हैं तो ऐसी जानकारी का दुर्लक्ष्य भी जरूरी नहीं है। मैं बता दूं कि गोरखपुर के अन्दर राष्ट्रविरोधी कार्य करने के अपराध में एक पादरी को, जिनके लिए यू० पी० की सरकार ने जानकारी प्राप्त करके हिरासत में लेने के आदेश जारी किये और जिनके नाम का एक सरकुलर भी भारत सरकार के होम डिपार्टमेन्ट ने जारी किया है।

चेयरमेन महोदय, वे फादर यहां थे सेन्ट जोवियर में, चार महिने रहे इस बात का सुबूत मिल सकता है इस स्कूल के एक मासिक पत्र से। एक मासिक पत्रिका निकलती है जिसका नाम है एक्स रे। उसके अन्दर उस महिने के अंक में लिखित रूपमें प्रमाण है। जब जांच पड़ताल हुई और वे अन्यत्र चले गये, इस प्रकार का लिखित रूप में एकसरे में एक सेन्टेन्स मौजूद है। अगर ऐसे व्यक्ति, राष्ट्र विरोधी कार्य के लिये जिस पर जांच पड़ताल चल रही हो, शेल्टर मिलता रहे एक स्कूल के अन्दर, एक संस्था के अन्दर फिर भी उसके लिये यह कहा जाय कि यह तो कोई खतरनाक बात नहीं है। १५ अगस्त के दिन जिस संस्था में राष्ट्रीय झंडा फहराने के बारे में अपमान किया गया, यह भी सबको मालूम है। मैं बहुत जिम्मेवारी से बताता हूं दो साल पहले इसी सेन्ट ज़ेवियर के संचालकों ने काश्मीर सरकार से और भारत सरकार से बातचीत करके अपने टीचर्स और कुछ छात्रों का एक डेलीगेशन काश्मीर में भेजने का प्रयत्न किया, लेकिन उस वक्त उनको इजाजत नहीं मिली। लेकिन पिछले वर्ष चेयरमेन महोदय, इसी सेन्ट जोवियर स्कूल के टीचर्स, दो टीचर्स और बाकी के कुछ लड़के वे गये काश्मीर और वे कैसे गये मैं आपको बताता हूँ। अहमदाबाद की एक ट्रेवल एजेन्सी के जरिये इन्होंने वहां के पासपोर्ट लिये। जो एप्लीकेशन इस ट्रेवल एजेन्सी के जरिये प्रस्तुत की उस एप्लीकेशन के अन्दर दो अमेरिकन पादरी जो उस वक्त यहां थे, जो अमेरिकन सिटीजन्स थे उन्होंने अपने आपको इन्डीयन सिटीजन का उल्लेख करके गलत बयान लेकर एप्लीकेशन प्रस्तुत की। ये सब कागजात आज भारत सरकार के पास मौजूद हैं ये सब राजस्थान सरकार की जानकारी में भी लाये जा सकते हैं। जब एक बार एप्लीकेशन मन्जूर नहीं हुई, तब दूसरी दफा उन अमेरिकन पादरियों ने जो अमेरिकन सिटीजन्स थे चुपके चुपके इन्डियन सिटीजन बनकर जयपुर से नहीं बल्कि अहमदाबाद की टूरिस्ट एजेन्सी के जरिये पासपोर्ट बनाने की नौबत आती है और उनके साथ एक्सपर्ट फोटोग्राफर और केमरा मेन भी जाते हैं। आगे क्या होता है, अगर कोई इसके छानबीन में जाय तो मैं आपको बता दूं। जिन लड़कों को साथ में ले जाया गया उनमें से पांच-छः लड़के ऐसे थे जिनके पिता काश्मीर के अन्दर फौज में आला दरजे के आफिसर थे या जिनके पिता का फौजसे सम्बन्ध था। यह एक एक्सीडेन्ट है। अनजाने में होने वाली बात नहीं। क्या कारण था कि इस प्रकार से चाल बाजी की गई? इस तरह से ये हमारी राष्ट्रीय संस्कृति को हानि पहुंचाने वाले अड्डे हैं, एस्पीनोज हैं, जासूसी के अड्डे

[श्री हरिकृष्ण व्यास]

हैं, राष्ट्र की एकतामें विदेशी ताकतों का फौजी साधनों के अन्दर प्रयोग में लाने वाले अड्डे हैं; इसके सबूत हमारे सामने है।

दैनिक नवयुग के अन्दर एक के बाद एक समाचार छपे और दूसरी संस्थाओं द्वारा भी बुलेटिन छापा किये गये और समय समय पर एक संस्था के बारेमें जितनी जानकारी हमें होनी चाहिये उसको देने में कभी पीछे नहीं हटा; फिर भी मैं यह समझता हूं इसका इलाज कुछ नहीं हुआ।।

गोआ भारत का एक अंग है, अविभाज्य अंग है। इस बात पर पुर्तगाल के अधिकार के संबन्ध में अमेरिका के विदेश मंत्री डलेस और मि. कुन्हाने उसे पांचुर्गीज़का साम्राज्य कहा है, लेकिन सेन्ट जेवियर के फादर की हिम्मत यहां तक बढ़ गई कि वे पुर्तगाल के अधिकारी यहां आते हैं और उनके यहां ठहरते हैं, जो यह कहते हैं कि गोआ पुर्तगाल का अंग है। अगर आपको पुर्तगालका अंग बनाना है, पुर्तगाली साम्राज्य अमेरिका की गुलामी से जिन्दा रहना चाहते हैं; लेकिन हमारे देश की धरती पर इस प्रकार की साजिश करने वालों को हम कभी भी बरदाश्त नहीं कर सकते। आज हो क्या रहा है? जहां इस प्रकार के प्रचार होते हैं, जहां लड़कों के दिमाग में सुबह-शाम इसी प्रकार की भावना भरी जाती है उनके साथ हम कितनी सहूलियतें दे रहे हैं। जब हम इस प्रकार की कोई बात कहते हैं तो यह कहा जाता है कि ये लाल भाई हैं, जो इस प्रकार की बातें फैलाते रहते हैं लेकिन जब हम इस प्रकार की हरकतें और बातें देखते हैं, जहां देश द्रोहियों को पोषण दिया जाता है; ये साम्राज्य वादी देश यह चाहते हैं कि वे अपने मन चाहे जुल्म कर सकें। उस इरादे से वे चाहते हैं कि ऐसे हिस्से हमारे पास हों जिससे हम दूसरे देशों के ऊपर अपना कब्जा रख सकें। इसी लिये ये साम्राज्यवादी देश यह चाहते हैं कि गोआ पर पुर्तगाल का ही कब्जा रहे, लेकिन ये सब हरकतें जिस जगह आश्रय पाती हों उनको कोई भी देश—भक्त बरदास्त नहीं कर सकता, जिनमें थोड़ा बहुत भी देश भक्ति का माद्दा होगा, वे कभी भी ऐसी संस्थाओं को प्रोत्साहन नहीं देंगे। आज हमारे यहां का सेन्ट जेवियर स्कूल उसी साम्राज्यवादी ताकतों का पोषक है और उसी प्रकार के विचार उन लड़कों के अन्दर रात-दिन भरे जाते हैं। यहां पर रंगभेद बरता जाता है; हिन्दुस्तानी और गैर हिन्दुस्तानी में भेद बरता जाता है। क्या कभी किसी ने इस इन्स्टीटयूशन को देखा है? किसी ने इसके हिसाब की जांच की है ? कभी किसी ने यह पता लगाने की कोशिश की है कि सैंकड़ों रुपया जो फीस के रूप में लिया जाता है उसका खर्च किस प्रकार होता है? इन सब बातों की जांच करने में मुझे मालूम नहीं क्या कठिनाई आती है। यहां कोड मेसेज आते हैं। अगर कोई अवान्छनीय घटना घटित होती है देश के किसी भी कोने में उसका असर यहां होता है। पुर्तगाल के एम्बेसेडर किस प्रकार यहां पर चक्कर लगाकर चल देते हैं। यहां के फादर किस प्रकार कौन्सिल ऑफिस में रहकर आते हैं, ये सब बातें ऐसी हैं जिन पर वास्तव में विचार करना होगा। जिन माननीय सदस्य ने यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया है वे वास्तवमें बधाईके पात्र हैं। उन्होंने यह प्रस्ताव रखकर न सिर्फ राष्ट्र विरोधी हरकतों की ओर ध्यान दिलाया बल्कि ऐसी संस्थाओं के अन्दर किस किस प्रकार की प्रवृत्ति

[श्री हरिकृष्ण व्यास]

चल रही है, ईसाई पादरियों में किस प्रकार की भावना हो रही है; इन सब बातों की ओर आपका ध्यान आकर्षित किया है। मैं इस प्रस्ताव का पूरे दिल से समर्थन करता हूँ और आशा करता हूँ, उधर बैठने वाले हमारे माननीय मित्र हैं और सरकार है उससे मैं यह आशा करूंगा वे इस पर गंभीरता से विचार करेंगे और इन पादरियों को जो पीछे से आने वाली सहायता है जिनके बूते पर आज वे इस प्रकार के कार्य करने में संलग्न हैं बन्द करवायेंगे। इन शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

श्री हरिदेव जोशी—सभापति महोदय, मैं इस प्रस्ताव के समर्थन के लिये उपस्थित नहीं हुआ हूं। जहां तक इस प्रस्ताव की भाषा और विचार-धारा का सवाल है मैं इससे सहमत नहीं हूँ। क्योंकि मैं यह समझता हूं कि धर्म मनुष्य की व्यक्तिगत चीज है। जो व्यक्ति जिस धर्म में आस्था रखता है वह पूजा करे, इबादत करे अथवा जो कुछ भी करे वह स्वतंत्र है।

मैं यह भी महसूस करता हूं कि जिस सेन्ट जेवियर के बारे में कहा गया और कुछ सदस्य यह भी महसूस करते हैं कि सेन्ट जेवियर में हिन्दू धर्म के बच्चों को ईसाई धर्म की शिक्षा दी जाती है या उनको प्रभावित किया जाता है; मैं उन लोगों में से हूं जैसा कि मेरे एक मित्र ने कहा, इस बातका तीव्रतम विरोध किया और मैं यह भी मानता हूं कि राजस्थान के इतिहास में शायद ही कभी किसी ने इतने संगठित रूप से इतना तीव्रतर विरोध इससे पहले किया हो। लेकिन मुझे अफसोस है कि आज राजस्थान के गण्यमान्य ऊंचे ऊंचे लोगों के बच्चें यहां पढ़ने जाते हैं। मुझे यह महसूस होता है, मिनिस्टरों के बच्चों से लेकर हाई कोर्ट के जजेज़ के बच्चे और दूसरे उच्च पदाधिकारियों के बच्चे और ऐसे लोगों के बच्चे जो समाज के अन्दर प्रतिष्ठित व्यक्तियों में गिने जाते हैं उन सब के बच्चे इस स्कूल में पढ़ने जाते हैं। वे महसूस करते हैं कि इसके सिवाय उनके पास दूसरा कोई स्थान नहीं जहां वे अपने बच्चों को पढ़ने के लिये भेज सकें। मैं यह कहने की अपेक्षा कि वे सब लोग अपने बच्चों को वहां से हटा लें राजस्थान सरकार से निवेदन करता हूं कि वे ऐसी संस्था बतावें जहां पर ये माता पिता अपने बच्चे भेज सकें, आज वे लोग यह महसूस करते हैं। कई बार मेरे पास इस प्रकारके लोग आये हैं उन्होंने मुझसे कहा आप हमें ऐसा स्थान बतलाइये जहां हम अपने बच्चों को वहां से हटा कर भेज सकें। तो क्योंकि ऐसा कोई दूसरा स्थान नहीं है इसलिये आज मजबूर होकर अपने बच्चों को उनके माता-पिताओं को वहां रखना पड़ता है। इसलिये क्योंकि यह ऐसा मौका आया, ऐसा एक प्रसंग आया है जब कि मैं सार्वजनिक रूप से अथवा अधिकृत रूप से अपील कर सकूं सरकार से, मैं सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि इन बच्चों के अभिभावकों को कोई ऐसा स्थान दिया जाना चाहिये जहां ये अपने बच्चों को अपनी इच्छा के अनुसार शिक्षण दे सकें, जो ज्यादा खर्च करना चाहते हैं, जो अफोर्ड कर सकते हैं वे अपने बच्चों को ऐसी जगह बिठा सकें और उनको ऐसी सुविधाएं दी जाएं जहां उनको अच्छी और उचित शिक्षा मिल सके।

जो बाहरी शिक्षण संस्थाएं हैं, उनके अन्दर क्या होता है और क्या नहीं होता है, इसके, विषयमें मुझे बहुत अधिक नहीं कहना है। पर मुझे उन मिशनरीज़ के द्वारा उन भोले-भाले लोगों में जो

[श्री हरिदेव जोशी]

काम हो रहा है उस पर निश्चित रूप से एतराज है। मुझे इसमें कोई ऐतराज नहीं कि यहां के किसी जस्टिस या चीफ जस्टिसके बच्चे क्रिश्चियन हो जावें, किसी उच्च अधिकारी के बच्चे क्रिश्चियनहो जावें, या किसी पैसेवाले के बच्चे क्रिश्चियन हो जावें। अगर वे क्रिश्चियन हों जावें तो हो जावें, मुझे इसमें कोई ऐतराज नहीं होगा क्योंकि मैं यह समझता हूँ कि वे आगे जाकर देशद्रोही नहीं होने वाले हैं। क्योंकि उनके माता पिता देशद्रोही नहीं हैं। किन्तु मुझे ऐतराज है इस बात में कि हजारों की तादाद में आज डूंगरपुर में, बांसवाड़ा में और उदयपुर के जिलों में भीलों को और दूसरी ऐसी पिछड़ी जाति के लोगोंको क्रिश्चियन बनाया जा रहा है। गांव के गांव क्रिश्चियन बने हुए हैं और बन रहे हैं, जहां ये मिशनरीज लोग बड़ा भोंडा और भद्दा प्रचार करके उनकी कोमल भावनाओंको उभाड़कर उनका धर्म परिवर्तित करते हैं और उनकी भावनाओं को एक्सप्लोइट करते हैं, उनकी भावनाओंके साथ खिलवाड़ करते हैं। आप लोगों में से शायद कई लोग उनकी वास्तविक स्थिति से अवगत भी नहीं होंगे, जितने इन इलाकों के लोग हैं। वे लोग इस प्रकार का प्रस्ताव नहीं करते। आप लोग ऐसे प्रस्ताव लाते हैं। मैं इस प्रस्ताव का इसलिये विरोध नहीं कर रहा हूँ कि हम उन लोगों की हरकतों को कोई ठीक समझते हैं, मगर इसलिये करता हूँ कि उन्होंने जिस प्रकार एक वर्ग की भावनाओं को उभाड़ कर एक प्रकार का काम किया है या कर रहे हैं। वहां इस प्रस्ताव से हम दूसरों की भावनाओं को उभाड करके दूसरी प्रकार का काम करना चाहते हैं। इन क्रिश्चियन मिशनों को रोकने का जरिया कानून नहीं है, सरकार के प्रति दुर्भाव प्रकट करना नहीं है; इसको रोकने का जरिया हमारी सामाजिक चेतना है, सामाजिक जिम्मेदारियां हैं। आज हमें उन्हें समझना है और ईमानदारी से उन्हें पूरा करना है। हमें अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरा करने के प्रति जागरुक रहना है। आज भील और भीलेतर जितनी पिछड़ी जातियां हैं उनके प्रति आज तक सामाजिक रूप से हमने जितना अन्याय और अत्याचार किया है उसका प्रायश्चित्त करना चाहिये हिन्दू समाज को और इस प्रायश्चित्त का एक ही तरीका है, हमें छूतछात के भेदभाव की दीवार को समाप्त करके उनके बीच जाकर काम करना चाहिये, मिशनरी स्पिरिट से हमें उनके बीच रहकर उनकी बदतर समाजिक स्थिति, जो आज हमने पैदा कर दी है, को सुधारना होगा। इसकी जरूरत है। उनके बीच जाकर हमें सामाजिक चेतना के बारे में प्रचार करने की जरूरत है। उनके बीच में मर—मिटने की जरूरत है, उनमें घुलमिल कर एक हो जाने की जरूरत है। आज हमारे में वह स्पिरिट ही नहीं है। हममें से अधिकांश लोग केवल बातें करना अधिक पसन्द करते हैं, गांवों में बैठकर उनके साथ काम करने में उन्हें संकोच अनुभव होता है। आज गांवों से निकल कर शहरों में वे आना चाहते हैं, चाहते है कि हम अधिक से अधिक सुविधापूर्ण समाज अथवा शहरों में रहें, उठें, बैठें, फिरें, आज सामाजिक संस्थाओं की और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं की यह मनोदशा बनती जा रही है। पर आज इस स्थिति को देखते हुए सामाजिक संस्थाओं को और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को अपनी जान की बाजी लगाने की जरूरत है, उनके बीच में जाकर मर खप जाने की जरूरत है। मुझे इसमें शंका नहीं है कि ये क्रिश्चियन मिशनरीज वे चाहे विदेशी हों, या चाहे इंडियन हों ये जो काम उनके बीच करते हैं वह कोई बहुत ऊंचे

[श्री हरिदेव जोशी]

आदर्शों से प्रेरित होकर करते हैं या इस देश के भले के लिए करते हैं, वे तो उन भोले भाले लोगों के अभावों को एक्सप्लोइट करते हैं । उनका उद्देश्य अकाल आया कुछ देकर उनकी भूख मिटाकर उनके बच्चों को खरीदना है, महामारी आई तो उनका काम है उनमें प्रवेश करना और उनकी इस हालत का अनुचित फायदा उठाना मात्र है और उनके अन्दर कोई किसी प्रकार से सामाजिक-उत्थान का काम करना, यह उनकी इच्छा नहीं होती । आज एक भील है; दो चार, दस, बरस के बाद में क्रिश्चियन बना है तो वह भील का भील ही रहने वाला है, उसके बदन पर वही आधा फटा अंगोछा ही रहने वाला है, उसके बदले पूरी धोती नहीं मिलने वाली है, बाल भले ही फिर अंग्रेजी ढंग के कटे हों पर सिर के अन्दर जूएं वैसी की वैसी ही रहने वाली हैं । बदन के ऊपर चिथडा का चिथडा ही रहने वाला है, पहनने के लिए पूरा कपड़ा नहीं मिलने वाला है, खाने के लिए वही आधा पेट रहना है अनाज नहीं मिलने वाला है । क्रिश्चियन होने के बाद में उनकी कोई ऊंची स्थिति आ जाने वाली है यह भी स्थिति नहीं है, क्योंकि समाज में उनके पुरानी प्रवृत्तियां काफी जड़ पकड़े हुए है । वे हिन्दू हैं, और हिन्दू धर्म से प्रभावित हैं । अगर आज वे क्रिश्चियन होते हैं तो समाज से च्युत हो जाते हैं, दूसरे तरीकों से क्रिश्चियनिटी उन्हें ऊंचा उठा नहीं सकती बल्कि स्थिति यह होती है कि क्रिश्चियन होने के बाद में वे अनाथ हो जाते हैं, न तो हिन्दू धर्म के रहते हैं और न क्रिश्चियन ही रहते हैं । जिस प्रकार से हमारे यहां अंग्रेजों ने क्लर्क पैदा किये हैं इसी प्रकार से ये भी बने हैं । इनमें सिवाय छोटे मोटे क्लर्क बना देने के और स्त्रियों को मिडवाइफ का काम सिखाने करने के इनको ऊंचा उठाने का विशेष काम नहीं करते । इसलिये उनका यह कहना कि वे यहां पर इस देश में सेवा करते हैं मिसगाइड करने के और कुछ नहीं है । यह एक धोखा है, फरेब है. आंखों में धूल झोंकना है कि वे हमारे इस देश के लोगों को ऊंचा उठाने और उनकी सेवा करने के लिए आये हैं । वे अपनी धार्मिक भावनाओं की तुष्टि के लिए यहां आये हैं. यह मैं मान सकता हूं और सेवा का अगर एक मात्र तरीका यही है उनका तो यही मैं मान सकता हूं कि इस उद्देश्य में वे इमानदार हैं । पर वे अगर यह कहते हैं कि इस देशवासियों की वे सेवा करते हैं तो मैं यह मानता हूं कि वे सेवा नहीं कुसेवा करते हैं ! मैं यह आपसे नम्रता पूर्वक निवेदन कर देना चाहता हूं और इसके लिए मैं अपने सामाजिक कार्य कर्ताओं और सामाजिक संस्थाओं से नम्र निवेदन करना चाहता हूं कि वहां उनके जाकर रहने की जरूरत है । काम करने के साधन उनके मुकाबले में जुटाने की जरूरत है ।

आज तो स्थिति यह है कि उनके पास असीम साधन हैं । जैसे उदाहरण के तौर पर मैं बांसवाड़ा का जिक्र कर दूं । वहां क्रिश्चियन हैं और हजारों की तादाद में हैं । उनमें जो प्रचारक पादरी हैं उनके पास जीपें हैं, काफी पैसा है, और कई आला ढंग के साधन हैं । वे उन सबके जरिये घूमते फिरते रहते हैं और अपना काम करते हैं । राजाओं के जमाने में भी घूमते थे पर राजाओं पर उन दिनों में पोलिटिकल एजेन्ट का बड़ा भारी दबाव होता था, उनकी व्यक्तिगत

[श्री हरिदेव जोशी]

इच्छाओं के विपरीत भी उस दबाव के कारण उनको सारे साधन और सारी सुविधाएं उपलब्ध थीं। मैं जानता हूं कि महाराज पृथ्वीसिंहजी जमीन उन लोगों को नहीं देना चाहते थे, पर उनको ऊपर के दबाव के जरिये जमीन दिलवाई गई। पर आज तो आज की सरकार पर कोई ऐसा दबाव नहीं है। मैं नम्रता पूर्वक यह निवेदन कर देना चाहता हूं कि आज इनके कारनामों से अवगत रहना है, उनके प्रति सरकार को जागरूक रहना है, पूरा पूरा सतर्क रहना है उनकी हरकतों से और अगर हम इनकी हरकतों से अवगत नहीं रहेंगे, पूर्ण सतर्क नहीं रहेंगे तो मैं कह सकता हूं कि ये फिफ्थ कॉलमिस्ट आगे जाकर न जाने क्या कर डालेंगे ? इन्हें फिफ्थ कॉलमिस्ट समझ कर सरकार को पूरी सावधानी से काम लेना चाहिये। इसी दृष्टि से धर्म प्रचार की आड़ में ये यही हरकतें करते हैं। देश की सुरक्षा के लिये इनका घूमना फिरना खतरनाक है। इस दृष्टि से मैं सरकार से इस प्रसंग पर नम्रता पूर्वक निवेदन कर देना चाहता हूं कि वह इस ओर कड़ा कदम उठावे। इस प्रस्ताव की जरूरत नहीं है। मैं मानता हूं, हमें ऐसे प्रस्ताव नहीं करने चाहिये। पर उनके बीच रचनात्मक काम करने की जरूरत है, और जो ऐसी रचनात्मक संस्थाएं, सामाजिक संस्थाएं हैं जो सही रूप में देश के हित में उनके बीच काम करती हैं। सरकार को चाहिये कि उनके प्रति सहानुभूति दिखलाए, उनकी मदद करे। यही मेरा निवेदन है।

श्री तनसिंह—माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं नम्रता पूर्वक निवेदन करूंगा कि मैं मेरे साथी, जो कि चित्तौड़ से आये हैं, उनका बड़े खेद के साथ विरोध करूंगा। कारण यह है कि साम्यवादी विचार-धारा के कुछ पैंतरे होते हैं और वे पैंतरे इस प्रकार के होते हैं कि अपने उद्देश्य तक पहुंचने के लिए जिन चीजों को लोगों के दिमाग में पहुंचाना है उस बात को, उन चीजों को पहुंचाने के लिए जिस प्रकार का भी काम वे कर सकते हैं करने का एक भी मौका चूकना नहीं चाहते। चाहे भावनाओं को उभाड़ने का प्रश्न है, तो वहां भी वे चूकेंगे नहीं, लोगों के सेन्टीमेन्ट्स पर अधिकार करना होगा तो उनसे भी चूकेंगे नहीं। इस प्रस्ताव के बारे में भी यही उन्होंने किया। प्रस्तावक महोदय का, प्रस्ताव सामने आया। उसमें चीज तो कुछ और है और जो बात बताई जा रही है वह कुछ और ही है। पर उनको इससे मतलब नहीं, उनको तो लोगों की भावनाओं को उभाड़ने से मतलब और अपना मतलब सीधा करने से मतलब। बताया यह जा रहा है कि क्रिश्चियन मिशनरी स्कूलों में जो शिक्षा दी जा रही है वह बिलकुल ही भौंडी शिक्षा है, पर जो प्रस्ताव आया है उसको यदि आप गौर से पढ़ेंगे तो स्पष्ट रूपसे मालूम होगा कि प्रस्ताव क्या है। प्रस्ताव यह कि सदन का सुझाव है कि धर्म परिवर्तन करने वाले क्रिश्चियन मिशनरीज़ संस्थाओं को विदेशी सहायता बन्द करवाने के लिए भारत सरकार से प्रार्थना की जाय। अब इस प्रस्ताव की शव परीक्षा की जाय तो यह स्पष्ट प्रतीत होगा कि प्रस्तावक महोदय यह कहते हैं कि धर्म-परिवर्तन करने वाले कौन हैं ? धर्म परिवर्तन करने वाले यदि क्रिश्चियन मिशनरीज हैं, वे हो सकते हैं तो दूसरे भी हो सकते हैं। मैंने अखबारोंमें सुना है कि एक जगह शुद्धि आन्दोलन भी शुरु हो रहा है। फिर क्रिश्चियन मिशनरीज़ के लिए ही इतनी अनुदारता क्यों ? क्यों नहीं फिर शुद्धि आन्दोलन चलाने वालों पर प्रस्ताव लाते। (हंसी) जब आप बलात्

[श्री तनसिंह]

धर्म परिवर्तन की बात कहते हैं तो वह बलात् धर्म परिवर्तन की बात तो इस प्रस्ताव में नहीं है। ऐसा अगर है तो फिर हमारे सामने भी बलात् धर्म-परिवर्तन की बात लाते।

दूसरी बात मैं यह कहूँगा कि अगर बलात् धर्म-परिवर्तन से आपका मतलब है तो फिर इसके लिए तो पहले से और भी कानून बने हुए हैं। किसी पर अनुचित दबाव डाला जाय, शारीरिक दबाव डाला जाय, किसी को टोर्चर किया जाय; तो भी हो सकता है, इसके लिए भी विचार किया जा सकता है। पर मेरी समझ में नहीं आता कि प्रस्तावक महोदय ऐसे सब कामों को बन्द करने के लिए भी चाहते क्या हैं कि विदेशी सहायता बन्द हो जावे और यह मेरे दोस्त, समाजवादी मित्र तो एक दिन कह रहे थे कि इस शैक्षणिक संस्था में जो खर्चा होता है उससे आमदनी अधिक होती है। वह अपने ही पैरों पर खड़ी होने वाली संस्था है, उसे विदेशी सहायता की आवश्यकता नहीं है। लेकिन मेरे मित्र चाहते हैं कि इस संस्था का कार्य बन्द हो और अच्छा हो कि विदेशी सहायता आने वाली है वह बन्द हो जाय। मैं नहीं समझता कि विदेशी सहायता बन्द हो जाय तो उसको काम नहीं चल सकता है..........

श्री हरिकृष्ण व्यास—वह एस्पोनेज के लिए होता है।

श्री तनसिंह—एक अमेरिका का होता है तो एक रूस का होता है।

श्री हरिकृष्ण व्यास—जहां कहीं भी एस्पोनेज होता है वह बन्द किया जाय, लेकिन सामने होने वाले की गिरफ्तारी नहीं की जाय और बाकी हो तो जानकारी प्राप्त की जाय कि क्या बात है ?

श्री तनसिंह—यह एस्पोनेज जितना एक के लिए लागू होता है उतना दूसरों के लिए। बात यह है कि पहले अपना घर देख लिया जाय। जो कहने वाले हैं उनको यह चाहिए कि सबसे पहले वह अपना हृदय साफ करके जो कुछ कहना चाहते हैं कहें।

श्री हरिकृष्ण व्यास—बिल्कुल साफ है।

श्री तनसिंह—यह तो हम जानते हैं।

अब रहा धर्म-परिवर्तन का प्रश्न। अध्यक्ष महोदय, चाहे हमारे प्रचलित विधान को लिया जाय, मैं राम राज्य की विचारधारा को रिप्रेजेन्ट करता हूं तो उस रामराज्य की विचारधारा के अनुसार यह मानता हूं कि किसी का कोई भी धर्म हो, उसको पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता है कि वह किसी प्रकार के भी धर्म में विश्वास रखता है, उसको आजादी मिलनी चाहिए कि वह अपने धर्म में विश्वास रखते हुए, जैसी कुछ भी अपनी उपासना की प्रणाली है उसके

[श्री तनसिंह]

अनुसार कार्य करें। तो फिर मेरे दोस्त जहां तक प्रस्तावकर्ता का सवाल है मेरे खयाल से सम्भवतः वह ऐसे प्रभाव में आ गये हैं जो कि प्रभाव नमूने के रूप में प्रकट हुआ है। इससे मैं यह निवेदन करूंगा कि जहां तक हमारी सांस्कृतिक विचारधारा का सवाल है, जहां तक कि आज तक की परम्पराओं का सवाल है, मैं यह निवेदन करूंगा कि हिन्दुस्तान में धार्मिक उदारता इस दूरी की रही है, इस हद की रही है कि यहां अनेक प्रकार के धर्म आये हैं, अनेक प्रकार के धर्म मतावलम्बी आये हैं उन सबको खपाया है, उन्हें आजादी दी है। हम ऐसी संकुचित विचारधारा के कभी नहीं रहे हैं। हमने कभी विशेष विचारधारा को लेकर, विधर्मियों की विचारधारा को लेकर घृणा नहीं की है।....

श्री जगतसिंह झाला—आपके यहां हरिजनों के बारे क्या व्यवस्था है, रामराज्य सभा में

श्री तनसिंह—आप समय पर देख लीजिये, आप कोई प्रस्ताव रखियेगा। जो विचार धारा है वह निवेदन करूंगा। यहां पर मैं, प्रस्तावक महोदय ने जो कुछ रखा हुआ है, उस पर बोल रहा हूँ। जो धर्म परिवर्तन करने के लिए या धर्म परिवर्तन के लिए मिशिनरियों पर आक्षेप हो रहे है वह मेरा खयाल है कि एक धार्मिक अनुदारता, एक परम्परागत अनुदारता होगी, और वह ऐसी अनुदारता होगी कि हमें कभी शोभा नहीं देती है। जहां तक बलात् धर्म परिवर्तन का सवाल है वह मेरे माननीय मित्र ने नहीं कहा है। विशेष सहायता के लिए कुछ नहीं कहूँगा। वे कहना कुछ और चाहते हैं और करना और कुछ चाहते हैं। मैं निवेदन करूंगा कि सदन के एक सदस्य की तरफ से धर्म के बारे में जो कुछ कहा जाता है वह ठीक नहीं है। इसलिए इस प्रस्ताव को पास न करें।

कुं० श्री जसवन्तसिंह—मि० चेयरमेन, सर, यह जो सदन के सामने श्री जगतसिंहजी ने प्रस्ताव रखा है, मेरा ऐसा खयाल है कि इसमें बहुत कुछ गलतफहमी है...

श्री सभापति (श्री हिम्मतसिंह)—(सदन में परस्पर वार्ता होने पर) Order please ! There is too much talking.

श्री जसवन्तसिंह—मैने इस प्रस्ताव को पढ़ा और बहुत ही कोशिश की, परन्तु मेरी समझ में नहीं आया कि माननीय प्रस्तावकर्त्ता क्या चाहते हैं ? जो क्रिश्चियन धर्म है अगर उसका कोई विरोध है तो उसके लिए मुझे कुछ नहीं कहना है। लेकिन मैं तो यह समझता था कि एक हिन्दुस्तानी होने के नाते हिन्दू धर्म पर आघात हो रहा है, उस पर प्रस्ताव लाते तो और बात होती। हमने भारतवर्ष में, जो भारतवर्ष का संविधान स्वराज्य मिलने के बाद बनाया है, उसमें हम अपने आपको एक सेक्युलर स्टेट समझते हैं और इसमें कोई धर्म, हिन्दू; मुसलमान, क्रिश्चियन या कोई धर्म हो जब तक कि कोई खास देश पर आपति या दूसरों पर जबरदस्ती नहीं आये हर धर्म वाले आदमी को इस बात का हक है कि वह अपने धर्म को अपनी मरजी के मुताबिक बरते और वैसा ही आचरण करे। उनके पास माद्दा है,

[कु० श्री जसवन्तसिंह]

उनके पास जरिया है, साधन है और वह दूसरों को बगैर दूसरों के धर्म पर आघात किये हुए अगर उनको विश्वास दिला सकें तो जहां तक केन्द्रीय सरकार की नीति है, इस बात की अभी तक, उन्होंने किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया है।

यह क्रिश्चियन मिशनरीज़ भारतवर्ष में ही नहीं हैं, यह क्रिश्चियन धर्म एक ऊंचा धर्म है जो कि मिशिनरियों द्वारा फैलाया जा रहा है और भारतवर्ष के अलावा आप चाइना में देखिये या दूसरे देशों में देखिये यह मिशिनरीज़ कुछ कार्य करते हैं और लोगों को राहत भी पहुंचाते हैं, और जो गरीबी हालत में जनता होती है वह उनके लुभाव में आ जाते हैं, यह दूसरी बात है, लेकिन प्रस्ताव के नाम के पीछे जो इस सदन में बातें कही गई हैं वह कुछ बढ़ाकर की गई हैं, और उन में बहुत कुछ हद तक तथ्य भी नहीं है। अगर माननीय प्रस्तावकर्ता यह चाहते हैं कि यह क्रिश्चियन मिशिनरीज़ भारतवर्ष में जो कुछ लाभ पहुँचा रही हैं या भारतवासियों को लाभ पहुँचा रही हैं वह लाभ नहीं पहुँचायें, तो वह दूसरी बात है। मि० चेयरमेन, सर, मैं आपसे निवेदन करूंगा कि दो साल पहले मुझे कैलाश मानसरोवर की यात्रा करने का अवसर प्राप्त हुआ, और भारतवर्ष के किनारे का आखिरी हिस्सा जो कि तिब्बत से मिलता है, और जो भारतवासी उस आखिरी कस्बे में रहते हैं, वह चार महीने साल में वहां रहते हैं, जिस स्थान का नाम मीलम है, वहां पर वे साल में ४ महीने रहते हैं और ८ महीने नीचे आजाते हैं; वह मीलम करीब १२००० फिट की ऊंचाई पर है सी लेवल से वहां पर भारत को स्वतन्त्रता मिलने के बाद में उन लोगों से बात करने से ऐसा प्रतीत होता है कि वहां पर जो कि आखरी पुलिस स्टेशन है गवर्नमेंट का वहां कोई असिस्टेन्ट कलेक्टर या और कोई बड़ा अफसर वहां तक नहीं पहुँचा है, और भारतवर्ष की केन्द्रीय सरकार द्वारा या यू. पी. सरकार द्वारा, जिसका कि वह प्रान्त है वहां पर कोई कार्यवाही नहीं की गई। वहां पर भी कठिन स्थिति में मिशिनरीज़ बहुत बड़ा कार्य कर रहे थे। जो लोग वहां बीमार पड़ते हैं, सर्दियों की वजह से वहां के आदमियों को और उनके बाल-बच्चों को बीमारी हो जाती है तो वहां भारत सरकार या यू. पी. सरकार द्वारा किसी प्रकार का बन्दोबस्त नहीं था। उनको राहत देने वाले मिशिनरीज़ थे जो कि हार्डशिप और तकलीफ को उठाकर उनकी मदद करते थे। तो जब तक मिशिनरीज़ में मिशिनरी स्प्रिट है और जहां तक अच्छा कार्य करते हैं तो उसके लिए किसी को कोई एतराज नहीं होना चाहिये। यह सारे भारतवर्ष में ही नहीं भारतवर्ष के बाहर भी ऐसे मुल्कों में जहां कि उस देश वाले जो कार्य नहीं कर रहे हैं लेकिन जिनमें मिशिनरी स्प्रिट होती है, वह कार्य करते हैं।

अब सवाल इस बात का रहा कि इस प्रस्ताव के अन्दर कुछ ऐसी बातें कह दी गई हैं कि पोलिटिक्स भी उसमें शामिल लगा दी गई है, तो वह प्रस्ताव के बाहर हमारे साथी चले गये हैं। यह मेरे से पूर्व वक्ता ने बात बिलकुल साफ तौर पर कही कि यहां पर चीन का न सवाल है और न कोरिया का सवाल है और न मि० डलेस का सवाल है। बड़ा ताज्जुब हुआ है कि इस बात को जोर दे कर कहा है? यही बातें दूसरे देशों के लिए भी कही जा सकती है, लेकिन इस प्रस्ताव

[कु० श्री जसवन्तसिंह]

से उसका कोई ताल्लुक नहीं है और मैं नहीं समझ सकता हूँ कि इससे मदद भारतवर्ष को क्या मिल सकती है और क्या नहीं मिल सकती है ?

इस प्रस्ताव के पीछे यहां की जो सेंट जेवियर्स स्कूल है उसको भी घसीट लिया गया है। इस पर यहां दूसरे देशों द्वारा जो सिडिशन हमारे देश के प्रति,करीब करीब मेरे ख्याल से मेरे जोधपुर से आने वाले मित्र ने भाषण दिया उसका यही तात्पर्य था कि देश-द्रोहिता जान बूझ कर कुछ तत्वों द्वारा यहां फैलाई जा रही है। यदि इस प्रकार की सूचना उन्हें मिल सकती है तो केन्द्रीय सरकार को उनसे ज्यादा मिल सकती है, हमारी राजस्थान सरकार को भी इस प्रकार की सूचना मिल सकती है कि हमारे देश में दूसरे देशों के दूत, जयपुर में आकर पादरियों से सलाह-मशविरा करके हमारे विद्यार्थियों के दिमाग दूषित कर रहे हैं कि नहीं, यह तो केन्द्रीय सरकार को और राजस्थान सरकार के महकमों को, माननीय सदस्य से ज्यादा मालूम होना चाहिये। दूसरों के कहने से या इसे भी एक पोलिटिकल इश्यू बना कर और अपनी पार्टी के सिद्धान्त हैं उनको आगे बढ़ाने की नीयत से कहा जाता है तो दूसरी बात है। पर वास्तव में भाषण दिया उन बातों का इससे कोई ताल्लुक नहीं है।

सेंट जेवियर्स के बारे में कहा गया, उसके बारे में मैं निवेदन करना चाहता हूँ। पढ़ाई के बारे में मेरे खुद के निजी सन्तान नहीं होने के कारण वहां मेरा कोई बच्चा नहीं पढ़ता है परन्तु मेरे नजदीकी रिश्तेदारों के लड़के वहां पढ़ते हैं; मेरी बहन के लड़के, मेरे भाइयों के लड़के, कम से कम १५,२० नजदीकी रिश्तेदारों के बच्चे वहां पढ़ते हैं। उनसे बात करने से मालूम होता है कि आपको जयपुर में और राजस्थान राज्य में कहीं भी जो पढ़ाई आपको मिल सकती है, उससे अच्छी पढ़ाई सेंट जेवियर्स में हो रही है। जहां तक इन २०,२५ बच्चों के बारे में मेरा तजुर्बा है किसी में देश-द्रोहिता का सवाल पैदा नहीं हुआ है। मैं अक्सर उनसे पूछते रहता हूँ कि तुम्हें वहां क्या पढ़ाया जाता है, क्या सिखाया जाता है तो उन्होंने कोई संकेत भी नहीं किया कि इस तरह की बातें उन्हें सिखाई जाती है।

हमारे भारतवर्ष के बच्चों को अच्छे नागरिक बनाना है कि नहीं ? अगर बनाना है तो ऐसे शिक्षा केन्द्रों में हमारे बच्चों को भेजना पड़ेगा। इन मिशनरी स्कूलों की पढ़ाई एक मामूली स्कूल से अधिक अच्छी है। खास तौर से इंगलैंड, जो कि पार्लियामेंटरी राज्य प्रणाली में बढ़ा चढ़ा देश है, जिसकी नकल हम करते हैं, वहां जितने बड़े बड़े आदमी हैं वे प्रायः पब्लिक स्कूलों के स्नातक हैं। यह जो सेंट जेवियर्स पर इस प्रकार का दोषारोपण किया गया है कि इसे बन्द कर दिया जाय, पर मैं पूछना चाहता हूँ कि इसका दूसरा आलटरनेट क्या है। बच्चों की इस तरह की पढ़ाई का और प्रबन्ध क्या है ? जैसा कि अभी माननीय हरदेवजी जोशी ने कहा, या तो सरकार इसका कोई दूसरा आल्टर्नेट ढूंढे और इस प्रकार की कोई दूसरी स्कूल खोले।

सेंट जेवियर्स राजस्थान में एक बहुत बड़ी सेवा करती है और जब तक कि हमें इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं दिया जाय कि वहां ऐसी देश-द्रोहिता सिखाई जाती है और केन्द्रीय सरकार

Page No.47

[कुं० श्री जसवन्तसिंह]

या राजस्थान सरकार इस बात का जब तक कोई सबूत नहीं दे तब तक इस तरह की बात को हम नहीं मान सकते और अगर वास्तव में इस तरह की बातें होती हैं तो इसके लिये मैं दोष दूंगा केन्द्रीय सरकार को और राजस्थान सरकार को कि वे क्यों इस तरह की बातों को अलाउ होने देते हैं ? पर जहां तक पढ़ाई का सवाल है मैंने बच्चों को खुद अच्छी तरह से पूछा है, इसमें ऐसी बात नहीं है। हां, थोड़े बहुत दोष हो सकते हैं, उनको बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहा गया है।

हमारे साथी ज्यादा जोर इस बात पर इसलिये लगा रहे हैं कि ये मिशनरीज़ हिन्दू धर्म पर आघात कर रही हैं। मैं बड़ी नम्रता पूर्वक और बड़े जोर से, जितने जोर से कह सकता हूं, कहता हूँ कि क्या हमारी सरकार और क्या हमारे हिन्दू भाई जो अपने आपको मोडर्न आधुनिक समझते हैं, वे क्या हिन्दू जाति पर और सनातन धर्म पर आघात नहीं कर रहे हैं ? हमारे ऋषियों द्वारा जो धर्म प्रणीत किया गया है हमारे वेदों में जो बताया गया है, उन सब पर क्या वे आघात नहीं कर रहे है ? सनातन धर्म के सिद्धान्त लाखों करोड़ों वर्षों से चले आ रहे हैं, हिन्दुस्थान बहुत बढ़ा चढ़ा देश था। सैकड़ों वर्षों पहले, २० सदी पहले हमारा हिन्दुस्थान आज से कहीं ज्यादा बढ़ा चढ़ा नहीं था ? हमारी संस्कृति, हमारा कल्चर बढ़ा चढ़ा नहीं था ! वह सब कहां चला गया ? इन पर आज आघात कौन कर रहा है, क्रिश्चियन मिशनरीज़ कर रही हैं या हम खुद कर रहे हैं ? अगर हम यह कहें कि हमारे देश में कोई धर्म नहीं रहे; सब कूंडा पंथी हो जायं, जो ऋषियों ने धर्म बताया है उसको मिटा दें तो क्या हम खुद धर्म पर कुठाराघात नहीं कर रहे हैं। जब हम खुद अपने आपको नहीं बचा रहे हैं, ऋषियों से, वेदों से, जब से सृष्टि बनी है तब से वर्णाश्रम और सनातन धर्म के सिद्धान्त चले आ रहे हैं, उनको हम खुद मिटा रहे हैं तो फिर मिशनरीज़ पर दोष क्यों देते हैं ? मिशनरीज़ के लिये मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि धर्म परिवर्तन के अलावा बहुत बड़े काम वे कर रहे हैं। गरीब लोग जिनको हम किसी प्रकार की राहत नहीं दे सकते, जिनको सरकार राहत नहीं दे सकती, उन्हें ये हर प्रकार की राहत पहुँचाती हैं, उन्हें दवा दारू देती हैं और बीमारों की सेवाएं करती हैं। इनकी सेवाओं से खुश होकर लोग धर्म परिवर्तन करते हैं तो वह तो हम हमारे यहां सेक्युलर स्टेट होने के कारण-धर्म-निरपेक्ष राज्य होने के कारण रोक नहीं सकते। इसके लिये मुझे तो सबसे बड़ा दोष यह नजर आ रहा है कि हम खुद अपने हाथों से धर्म को मिटा रहे हैं, हम खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी चला रहे हैं और पता नहीं कि कुछ वर्षों बाद सनातन धर्म रहेगा या नहीं रहेगा। पर मुझे दृढ़ विश्वास है, हमारे देश में, हमारे धर्म पर इस वक्त ही आघात नहीं आ रहा है, कई कई दफा सनातन धर्म पर आघात आये हैं; फिर भी वह दबाव नहीं है आगे ही बढ़ता रहा है। इसलिये मुझे पूरा विश्वास है कि क्या मिशनरीज़ और क्या दूसरे कितने ही आघात सनातन धर्म पर करें यह खत्म नहीं होगा, यह सनातन धर्म है। अपने खुद को दोष नहीं देकर हम इसके लिये ऐसे तत्वों को दोष दे रहे हैं जो कम से कम और किस्म से लोगों को लाभ ही पहुँचा रहे हैं।

इस प्रस्ताव की ओट में कुछ बातें ऐसी कही गई हैं जिनसे पोलिटिकल इश्यूज़ शामिल कर दिये गये हैं।

[कुं० श्री जसवन्तसिंह]

इन सब बातों को देखते हुए माननीय चेअरमेन, मैं यह निवेदन करूंगा कि जहां तक इस प्रस्ताव का ताल्लुक है, इसमें ऐसे तथ्य नहीं हैं कि यह सदन भारत सरकार के पास प्रार्थना करे। भारत सरकार को भली भांति विदित है कि क्रिश्चियन मिशनरीज़ कहां तक देश को हानि पहुँचा रही हैं, कहां तक लाभ पहुँचा रही हैं और कहां तक कार्य कर रही हैं ? इस लिये इन शब्दों के साथ मैं यह कहता हूं कि यह प्रस्ताव कोई माने नहीं रखता। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए मैं यह समझता हूं कि यह प्रस्ताव जो सदन रखा गया है इसका कोई मतलब नहीं है।

श्री शम्भूसिंह—माननीय चेयरमेन, प्रस्ताव के शब्दों से जो भावना निकलती है उसके औचित्य से मतभेद नहीं हो सकता। यह विदेशी मिशनरी जो यहां इस प्रकार की पाठशालाएं चला कर जिस प्रकार का वातावरण पैदा कर रहे हैं उसके पीछे राजनैतिक दुर्भावना जरूर प्रतीत होती है और इस प्रकार की विदेशी दुर्भावनाएं इस प्रकार की संस्थाओं के पीछे, चाहे ये संस्थाएं अमेरिका की तरफ से हों चाहें अंग्रेजों की तरफ से हों, किसी प्रकार से सहन नहीं की जा सकती है। माननीय चेयरमेन, एक माननीय सदस्य ने यह बतलाया कि धर्म परिवर्तन करने पर मैं इतना महत्व नहीं देता कि धर्म—परिवर्तन किया जावे, मगर उसके साथ राजनैतिक उद्देश्य नहीं होने चाहिये मैं यह समझता हूँ माननीय चेयरमेन, कि धर्म परिवर्तन ही राष्ट्रीयता का परिवर्तन है। धर्म के साथ ही राष्ट्रीयता चलती है और जब धर्म परिवर्तन हो जाता है तो राष्ट्रीयता में इतना अच्छापन नहीं रहता जितना कि धर्म परिवर्तन से पहले होता था। हिन्दुस्तान में कुछ ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने भारत की एकता के विरुद्ध मांग की और उनकी मांग के फलस्वरूप हिन्दुस्तान के टुकड़े हुए और इन मांग करनेवालों का कोई धर्म नहीं था, जो बाकी हिन्दुस्तान के दूसरे निवासियों का धर्म था। इससे धर्म परिवर्तन के साथ साथ राष्ट्रीयता का परिवर्तन हो जाता है। जो इस प्रकार की मांग की गई थी उसके फलस्वरूप पाकिस्तान बना। पाकिस्तान के लोग कोई बाहर से आए हुए नहीं थे, लेकिन केवल एक धर्म परिवर्तन से यह परिणाम देश को भुगतना पड़ा। इसलिये धर्म परिवर्तन नहीं होना चाहिये और इस प्रकार की संस्थाओं को सहायता नहीं मिलनी चाहिये।

आप गोआ को ले लीजिये। यह भारतवर्ष का ही अंग है, मगर वहां पर वह स्थिति पैदा हो गई है अगर वहां पर आप प्लेबिसाइट करावें तो आपको मालूम होगा कि वहां पर हिन्दू धर्मावलम्बी कम रह गये हैं और दूसरे धर्म परिवर्तन हुए लोग ज्यादा हैं। इस कारण से यदि गोआ का प्लेबिसाइट कराया जावे तो वहां के अधिकांश लोग हिन्दुस्तान में रहने के पक्षपात करेंगे या नहीं, इसके लिये कुछ कहा नहीं जा सकता। इसका कारण भी ईसाई धर्म परिवर्तन ही है। इस प्रकार हिन्दुस्तान में ईसाइयों की तादाद ज्यादा बढ़ रही है, आदिवासी क्षेत्रों में जहां पर गरीब लोग रहते हैं। वहां पर उनकी भलाई करने के बहाने उनके भोलेपन का फायदा उठा कर, धर्मपरिवर्तन किया जा रहा है। माननीय चेयरमेन, इस धर्म परिवर्तन का क्या परिणाम हुआ; इसका यह परिणाम हुआ कि

[रावत श्री शम्भूसिंह]

ईसाइयों का बहुमत होता ज रहा है और एक विधर्म जाति के बहुमत होने से बहुत नुकसान होता है। हिन्दुस्तान के दो टुकड़े होने का परिणाम हुआ, वह भी धर्म परिवर्तन से ही हुआ। इसलिये धर्म परिवर्तन के प्रचार को रोका जावे और किसी प्रकार की सहायता धर्म परिवर्तन के संम्बन्ध में नहीं होनी चाहिये।

परन्तु केवल इस बात का प्रस्ताव यहां पर रखने से ही इसको सफल नहीं बना सकते। माननीय चेयरमेन, हम प्रस्ताव करते हैं, मगर उसके माफिक हमारा आचरण भी होना चाहिये। हम प्रस्ताव करें और हमारा आचरण बिलकुल अनुकूल नहीं होवे। इस सदन में मेरे एक मित्र द्वाया जो जमुआ रामगढ़ से आये हैं सुनने को मिला कि प्रस्तावक महोदय के बच्चे भी कदाचित इसी स्कूल में पढ़ते हैं जो पादरियों द्वारा संचालित है। यह बात कहां तक सच है, मैं नहीं कह सकता ? अगर सच है तो यह अच्छी बात नहीं है।

(हियर, हियर)

(श्री लालसिंह शक्तावत, उपाध्यक्ष, १०.४१ बजे पदासीन)

महात्मा गांधीजी में यह विशेषता थी कि जो कुछ वे कहते उसके अनुसार आचरण करते थे। उनका आचारण उसी अनुकूल होता था और उसी के मुतल्लिक वे कहते थे और इसीलिये महात्मा गांधी का इस देश में इतना अधिक प्रभाव पड़ा। यह बुरी बात है कि हम आचरण जैसा कहें उसके मुताबिक नहीं करें। हमको चाहिये कि हम अपने आचारण से सिद्ध करें कि जो कुछ हम चाहते हैं उसी प्रकार कार्य होना चाहिये। माननीय उपाध्यक्ष, मैं यह कहने जा रहा था कि हमारे देश में ये संस्थायें जो इस प्रकार का कार्य कर रही हैं कदापि अच्छी नहीं कही जा सकतीं। अब यह बात रही कि सेंट जेवियर स्कूल में लड़के अच्छे ढंग से रखे जाते हैं, उनको अच्छे ढंग से शिक्षा दी जाती है। उनका रहन-सहन का ढंग अच्छा है तो यह हमारे लिए एक लज्जाजनक बात है कि विदेशियों द्वारा एक संस्था अच्छी तरह से चले और उसके समक्ष कोई दूसरी संस्था न बनाई जावे। माननीय उपाध्यक्ष, यहां पर हमारे पब्लिक स्कूल हैं, वहां पर बच्चों को भेजा जा सकते हैं। मैं सरकार का खास तौर से ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि जैसा कि कहा जाता है कि हमारे यहां की संस्थाओं में अच्छा डिसिप्लिन नहीं है तो सरकार का यह कर्तव्य है कि इस प्रकार की संस्थायें शिक्षा विभाग द्वारा खोले। यह हमारी सरकार के लिए बड़ी लज्जा जनक बात है कि विदेशों से आकर लोग अच्छी संस्थायें चलाए और हमारे देश में उनके मुकाबले की कोई विद्या देनेवाली संस्था सरकार कायम नहीं कर सके। उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि आप अपने बच्चों को गुरुकल में शिक्षा के लिए क्यों नहीं भेजते ? चित्तौड़ में गुरुकुल श्री श्रद्धानन्दजी का है वहां पर क्यों नहीं भेजते ? क्या कारण है कि आप अपने बच्चों को विदेशियों द्वारा संचालित स्कूलों में ही

[रावत श्री शम्भूसिंह]

भेजें। यह बात सच है कि सेंट जेवियर स्कूल में भी अच्छी शिक्षा दी जाती है, मगर जयपुर नगर के एक दैनिक पत्र में एक लेखमाला प्रकाशित हुई थी जिसमें इसके सम्बन्ध में काफी प्रकाश डाला था कि जिस प्रकार की शिक्षा वहां पर दी जाती है उसका परिणाम बुरा होता है।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह अर्ज कर रहा था कि धर्म परिवर्तन करने की जो प्रवृत्ति है उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाना चाहिए और सरकार को इस तरफ पूरा ध्यान देना चाहिये कि इसके समक्ष भी विद्या देनेवाली संस्था शीघ्रातिशीघ्र खोले। ऐसी संस्थाओं में मैं देखता हूं कि मुसलमान भाई अपने बच्चों को बहुत कम भेजते हैं। जहां तक मैं समझता हूं कि सेन्ट जेवियर स्कूल में एक भी मुसलमान बच्चा नहीं होगा। इस सम्बन्ध में मैं अपने मुसलमान भाईयों की बहुत कद्र करता हूं कि धर्म पर वे कितने दृढ़ हैं और अपने मजहब के कितने पाबन्द हैं। अगर मुझे अपने मुसलमान भाईयों के प्रति श्रद्धा है तो वह इसीलिए कि वे अपने धर्म पर बड़े दृढ़ हैं। यह हम लोगों की खुद की कमजोरी है कि हम खुद अपने बच्चों को भेजते हैं।

श्री मोहन लाल सुखाडिया (मुख्य मन्त्री)—माननीय उपाध्यक्ष, यह चर्चा विषय के बाहर हो रही है।

रावत श्री शम्भूसिंह—(जारी) उपाध्यक्ष महोदय, इस प्रस्ताव में धर्म परिवर्तन शब्द है इसलिए मैं धर्म के ऊपर दो शब्द कह रहा था।

श्री उपाध्यक्ष—इससे सम्बन्धित बातें ही कहें।

(राज्य पक्ष द्वारा करतलध्वनि)

रावत श्री शम्भूसिंह—उपाध्यक्ष महोदय, भारतवर्ष की एकता को कायम रखने के वास्ते यह जरूरी है कि विदेशियों द्वारा संचालित संस्थाओं को यहां प्रोत्साहन नहीं मिलना चाहिये और यदि यहां इस प्रकार की अच्छी संस्थाओं की कमी है तो अच्छी से अच्छी संस्थायें आप खोलें। मगर यह तो एक शर्मनाक बात होगी कि हम अच्छी संस्थाओं के अभाव में विदेशियों द्वारा संचालित संस्थाओं में अपने बच्चों को भेजें। "Charity begins at home." तो हम उन संस्थाओं से बच्चों को हटावें और उन संस्थाओं में भर्ती करावें जहां भारतीय संस्कृति के अनुकूल शिक्षा दी जाती है। अतः मैं प्रस्तावक महोदय के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए पुरजोर कहता हूं कि राजस्थान सरकार शीघ्र से शीघ्र ऐसी संस्थाओं के वास्ते जो कुछ प्रस्ताव में कहा गया है उस पर अमल करेगी और हमारे राजस्थान में शीघ्र से शीघ्र इसके समकक्ष संस्थायें खुलवायेगी।

श्री खेतसिंह—माननीय उपाध्यक्ष, सदन के सामने प्रस्ताव यह है कि "इस सदन की सम्मति है कि राजस्थान में धर्म परिवर्तन करने वाली क्रिश्चियन मिश्नरी संस्थाओं को विदेशी सहायता

Page No.51

[श्री खेतसिंह]

बन्द करने के लिए भारत सरकार से प्रार्थना की जावे।" इसमें मुख्यतया दो बातें प्रस्तावक महोदय ने बतायी हैं; एक तो यह है कि भारत सरकार को प्रार्थना की जावे कि उनको जो बाहर से सहायता मिल रही है वह बन्द की जावे और दूसरा यह है कि जो क्रिश्चियन मिश्नरी काम कर रही हैं और धर्म-परिवर्तन का काम कर रही है। उसका मूल कारण क्या है! मैं पहले यह बताने का प्रयत्न करूं कि क्रिश्चियन मिशनरीज़ जो यह कार्य कर रही हैं जिससे कि हिन्दू धर्म को अपनाने वाले कई व्यक्ति क्रिश्चियन बनते जा रहे हैं इसका मुख्य कारण क्या है? यदि आप इस पहलू पर ठीक तरह से ध्यान देंगे तो हकीकत मालूम हो जायगी और उस पर किसी कॉन्क्ल्यूजन पर अवश्य पहुंचेंगे।

आप रोजाना यह देखते हैं कि कोई भी ब्राह्मण आज तक क्रिश्चन बना हुआ, मैंने न तो देखा है और न इसी प्रकार से कोई महाजन भी क्रिश्चियन बनता है और न आज तक किसी भी राजपूत को क्रिश्चियन बनते देखा है।

श्री सन्तोषसिंह कछवाहा—सर महाराज सिंह है।

(हंसी)

श्री खेतसिंह—(अपना भाषण जारी रखते हुए) राजपूतों में भी जिनको दरोगा कहते हैं उनको क्रिश्चियन बनते देखा है; लेकिन राजपूत जिसके पास जमीन है उनमें से किसी को भी क्रिश्चियन बनते हुए नहीं देखा है। मुख्यतया क्रिश्चियन बनते हैं जो हरिजन हैं, दलित वर्ग के लोग हैं और जिनके लिए अभी डूंगरपुर से आये हुए माननीय मित्र ने कहा था कि बांसवाडा डूंगरपुर में भील क्रिश्चियन क्यों बन रहे हैं। मैं आपको बताऊं कि इसका मुख्य कारण क्या है? जोधपुर में तो दरोगा क्रिश्चियन बनते हैं। उसका मुख्य कारण क्या है, इस पर आप ध्यान देंगे तो आपको हकीकत मालूम होगी।

हिन्दू धर्म के अन्दर भेदभाव बहुत बढ़ा है। तीन वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ऊंचे वर्ग के समझे जाते हैं, हमेशा से ये हरिजनों से नफरत करते रहे हैं। हालांकि भारत आजाद हुआ, गांधीजी ने उपदेश दिए, पं० जवाहरलाल नेहरू कहते हैं, इस सदन में व्यासजी ने कहा और सुखाड़ियाजी रोज यही गीत गाते हैं; लेकिन ऐसी कोई बात दिखाई नहीं देती,

(हंसी)

विरोधी पक्ष में बैठे माननीय सदस्य भी कह रहे थे आज भी मैं देखता हूँ कि यह नहीं चाहेंगे कि कोई हरिजन पास में आकर बैठकर खाना खाये। प्रयत्न यह किया जाता है कि अलग आराम से टेबल पर बैठ कर अन्न खायें क्योंकि आज कल यह जमाना ऐसा बदल गया है कि कहा तो कुछ नहीं

[श्री खेतसिंह]

जाता । मेरे एक मित्र ने कहा कि उनको अनुभव नहीं है और वे अनभिज्ञ हैं इसलिए क्रिश्चियन बनते हैं । अनभिज्ञ नहीं हैं । जब कोई जेटा भील क्रिश्चियन बन कर जोन्स बन कर आता है तो वह आकर वहीं बैठता है जहां कि आप खाना खाते हैं और आपको उससे नफरत नहीं होती, लेकिन वही भील जेटा भील की हैसियत से आता है तो नफरत करते हैं । मैं क्षत्रिय हूँ, मैं ब्राम्हण हूं, और यह भील है और यह पास में आकर कैसे बैठता है ? और यही कारण है कि अमूमन हरिजन लोग क्रिश्चियन बनते जा रहे हैं । बाकी विश्व शांति की, गोआ की और डलेस की बातें कही गई, खामख्वाह प्रोपोगेन्डा करने की बातें हैं ।

(विरोध पक्ष द्वारा करतल-ध्वनि)

सार यही है कि आज यह तय करलें कि हरिजनों से घृणा नहीं करेंगे, उनको बराबर-बराबर बिठावेंगे, एक होकर रहेंगे और जिस प्रकार हिन्दू शास्त्रों में लिखा है कि चारों वर्ण एक हैं, सब इन्सान एक हैं; ऐसा वातावरण पैदा कीजिये तो ऐसे रिज़ोल्युशन की कोई आवश्यकता ही नहीं होगी । यह नहीं होगा कि हिन्दू धर्म के और जनसंघ के नेता बने फिरें और उनको दूर रखने की कोशिश करें और फिर बतावें कि ऐसा रिज़ोल्यूशन लाये हैं, उन्होंने कहा कि देखो हमने हिन्दू धर्म की रक्षा की है; तो मैं आपको कहूँगा कि वह फिजूल है, इससे धर्म की रक्षा नहीं होने वाली है लेकिन पहले आप उनको अपनाइये, उनको पास रखिये फिर ऐसा नहीं होने वाला है कि वे हिन्दू धर्म को छोड़ कर दूसरा धर्म ग्रहण करें । लेकिन आप उनसे घृणा करते हैं । यह नहीं सोचते हैं कि उसके क्रिश्चियन बन जाते ही घृणा मिट जाती है । यह कहा गया कि क्रिश्चियन बन जाने पर भी जुएं रहती हैं और चिथड़े रहते हैं ! मेरी समझ में यह नहीं आया । जब कोई क्रिश्चियन बन जाता है तो वह पेन्ट कोट और टाई लगाकर सामने आता है, उसको नौकरी मिलती है, तालीम भी दी जाती है, एटीकेट भी सीख जाता है । जेटा भील नाम बिगड़ कर जोन्स बन गया, वह सब के साथ बैठकर बातें करता है, उसकी एक स्टेटस बन गई है, दूसरे लोग उसको अपनाते हैं । यही कारण है कि यह समस्या बढ़ रही है इसको मिटाने के लिए रिज़ोल्यूशन काम नहीं देगा, किन्तु इस चीज को मिटाने के लिए तो अपने दिलों को साफ करिये, घृणा मिटाइये, ऊंच-नीच का भेद न हो और जब यह नहीं रहेगा तो फिर कोई नहीं चाहेगा कि एक धर्म छोड़कर दूसरा धर्म अपनाये । यही पहला मुख्य कारण है ।

दूसरा यह बताया कि भारत सरकार से प्रार्थना की जाय कि इनको एड न मिले । अगर ऐसी प्रर्थना भारत सरकार को करेंगे तो आप देखेंगे कि वे कहेंगे कि वे सारे के सारे बेवकूफ थे, इन बातों के लिये प्रार्थनायें नहीं हुआ करती । इन बातों के लिए तो समाज के ढांचे को ऊंचा बनावें, और जब उसको बना देंगे तो ऐसी आवश्यकता ही नहीं होगी । भारतीय संविधान में सब को हक-हकूक दिये गए हैं, किसी प्रकार से नहीं रोक सकते । मैं एक खाना खाता हूँ और आप दूसरा खाना खाते हैं । आपको मुझसे घृणा है । मैं एक कमरे में रहता हूँ, मेरा परिवार गोस्त खाने में

[श्री खेतसिंह]

खाता है, पड़ौसी नहीं खाता है और वह मुंह बिगाड़ता है, बिगाड़ते रहें, मैं तो खाता हूँ खाऊंगा, यह मेरी स्वतन्त्रता है। आप पगड़ी देखते हैं, स्वतन्त्रता आई है, गोल साफा बांधते हैं, अपने आपको यह समझें कि राजपूती का नशा मुझ में ही है, मैं समझता हूं कि ऐसा नहीं है, वह पाखंड भी है। ऐसी हालत में उस आदमी को स्वतन्त्रता है।

(हंसी)

इसलिये यह रोक नहीं लगा सकते। अब सवाल आता है सेन्ट जेवीयर का जिसके बारे में मैं कम जानता हूं और न मेरे बच्चे वहां तालीम पा रहे हैं। मैं यह अवश्य कहूंगा कि जिस समाज में जैसा सदस्यों ने माना है उच्च स्तर के लोग इसमें तालीम दिलाते हैं। यही मतलब हुआ कि समाज के अच्छे उच्च स्तर के लोग हैं उनमें दिमाग नहीं है या अपने में दिमाग नहीं है, क्रिटिसाइज़ करते हैं। आखिर में क्या बात है ? सारे के सारे लोग जो यहां बच्चों को शिक्षा दिलाते हैं, सोसइटी में मूव करते हैं, एटीकेट उनका बढ़ाते हैं, और उसीका तो कारण यह है कि उनके बच्चे तालीम पाते ही यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन में सटाक से इंगलिश में जबाब देते हैं, हमारे या भैरूसिंहजी के जावेंगे तो जयहिंद, 'मजरोसा' करेंगे।

(हंसी)

दूसरी स्कूलों के बच्चे आई. ए. एस. और आई. पी. एस. आफिसर नहीं बन सकते, वे तो सड़कों पर नारे लगाते फिर सकते हैं। आम तौर पर यह देखा जाता है जिनके बच्चे मिशनरी स्कूल में तालीम हासिल करते हैं उनकी अंग्रेजी भाषा पर कमान्ड होता है तो वे जितने भी टेस्ट होते हैं उनमें पास हो जाते हैं......

श्री भैरूसिंह—(अश्रव्य)

श्री खेतसिंह— (जारी रखते हुए)मैंने सुना नहीं, नहीं तो आपको माकूल जवाब मिलता। इसके बाद में क्या होता है, इन्टरव्यू भी होता है, उसमें वे लड़के जो मिशनरी स्कूलों में पढ़े हुए होते हैं वे तपाक से जवाब देते हैं? इसका नतीजा क्या होता है कि व ही लोग ज्यादातर उच्च सेवाओं में लिये जाते हैं। जिनके लिये कभी २ यह भी कहा जाता है, वहां पर तो प्रांतीय भावनायें हैं मद्रासी ज्यादा है राजस्थानी कोई नहीं। राजस्थानियों के नहीं आने का कारण यह है कि उनको अंग्रेजी बोलना ठीक प्रकार से आता नहीं और मद्रासी अपने बच्चों को बचपन से ही इस भाषा का ज्ञान कराते हैं। नतीजा यह होता है कि उन्हीं की संख्या आज हमें ज्यादा दिखाई देती है। ज्यादातर आप हाइयर सरविसेज़ में मद्रासी या बंगाली लोगों को देखेंगे, उनमें राजस्थान वालों का नम्बर नहीं आता है। आज जयपुर में इस प्रकार का स्कूल है, उसके दरवाजे भी आप बन्द करवाना चाहते हैं इसका मतलब यह हुवा कि जो स्तर आपका बनता जा रहा है उससे भी आप नीचे

[श्री खेतसिंह]

गिराना चाहते हैं। आखिर आप राजस्थानियों को ले जाना कहां चाहते हैं, अगर दांता रामगढ से आने वाले माननीय सदस्य के सजेशन्स को माना गया तो मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि जो कुछ भी आज राजस्थानियों का स्तर है उससे बहुत नीचे हम गिरा देंगे।

श्री गोरीशंकर आचार्य—सभापति महोदय, जहां आज सेन्ट जेवियर स्कूल की सभ्यता की तारीफ की जा रही है और वह भी राजस्थान के गौरव के नाम पर, तो मैं उसकी सख्त निन्दा करता हूं। अगर आपको देहातों में स्कूल खोलने के लिए पैसा नहीं देना है और उसके लिये यह कहना कि, अगर देहात के निवासी अपने यहां स्कूल खोलना चाहें तो वह भवन बनाकर दें, तो यह ठीक नहीं है। आज जयपुर में ऐसी ऐसी आलीशान इमारतें बन सकती है, वहां उन गरीब लोगों को यह कहा जाय कि आप भवन बनाकर दें यह किसी भी सरकार के लिये शोभा कि बात नहीं है।

श्री खेतसिंह—इसमें गरीबों का पैसा नहीं, मिशनरी लोग अपना पैसा लगाते हैं।

श्री हरिकृष्ण व्यास—सरकार द्वारा भी इस संस्था को मदद दी गई है।

श्री गौरीशंकर आचार्य—(जारी रखते हुए)मैं माननीय सदस्यों को यह बताना चाहता हूं कि जब देहातों में स्कूल खोलने के लिए सरकार से पैसा मांगा गया उस वक्त देहातों में स्कूल खोलने के लिये पैसा नहीं दिया गया, बल्कि सेन्ट जेवियर को एड दी गई।

(करतल ध्वनी)

जो सरकार अपने देहातों की आगे बढाना चाहती है, गरीबों को आगे बढ़ाना चाहती है, गरीबी को मिटाना चाहती है वह उन अमीरों की स्कूलों को पैसा दे इसे हम बहुत पुण्य का काम नहीं कह सकते।

जहां तक इस शिक्षा नीति का प्रश्न है, हमारे शिक्षा शास्त्रियों का एक सिद्धान्त है और मैं इससे सहमत हूँ और यह शिक्षा के क्षेत्र में सर्व विदित होना चाहिये। और इसलिये किसी भी शिक्षण संस्था में किसी प्रकार का भेद करना उचित नहीं मानता। मैं यह मानता हूँ कि जो भी शिक्षण संस्था यहां ईसाई मिशनरियों द्वारा चालू है उसमें सरकार को भेद भाव नहीं करना चाहिये बल्कि सहयोग देना चाहिये, लेकिन इसके लिये यह कहना कि यह राजस्थान के लिये गौरव की बात है मैं इसको उचित नहीं समझता। आज भी हिन्दुस्तान में ऐसे लोग हैं जो आज भी साम्राज्यवादी मनोवृत्ति के पोषक है और ये संस्थायें उन्हीं द्वारा पालित और पोषित है, ऐसे व्यक्तियों के बच्चे इन संस्थाओं में पढ़ने जाते हैं। जो लोग यह समझते हैं कि ऐसे साम्राज्यवादी लोग देश का नेतृत्व करेंगे मैं समझता हूँ वे गलती में हैं। आज देश का नेतृत्व जिन व्यक्तियों के हाथ में है उनमें से कोई भी ऐसा नहीं जो ऐसी संस्थाओं से निकला हो। बड़े बड़े व्यक्ति जो आज शासन का

[श्री गौरीशंकर आचार्य]

काम कर रहे हैं वे सब ऐसी संस्थाओं से निकले हों, यह बात नहीं। कुछ व्यक्तियों का कहना है कि इन पब्लिक स्कूलों में बहुत अच्छी शिक्षा दी जाती है, उनको मैं यह कहना चाहता हूँ जो आश्रम व्यवस्था हमारे प्राचीन काल में प्रचलित थी जितना शिक्षा स्तर उच्च था, जो देहात का वातावरण उस समय की शिक्षा प्रणाली में था आज इन पब्लिक स्कूलों में वह कतई देखने को नहीं मिलता। हमारे यहां भी कुछ लोग ऐसे हैं जो पब्लिक स्कूलों का पोषण करते हैं जिनकी नीति हमेशा यह रही कि एक देश दूसरे देश पर शासन करे, सामाजिक भेद भाव बरतना चाहते हैं; उन संस्थाओं को कभी भी प्रोत्साहन नहीं दिया जाना चाहिये। जहां तक शिक्षा नीति का सम्बन्ध है हमें इसमें भेद भाव नहीं करना चाहिये लेकिन साथ साथ यह जरूर चाहता हूं कि इन लोगों की मनोवृत्ति में परिवर्तन लाने के लिये और जहां तक ईसाई मिशनरियों का प्रश्न है हमें गंभीरता से विचार करना चाहिये। भारत में इन ईसाई मिशनरियों ने बहुत शानदार पार्ट अदा किया है। मैं इस बात में विरोधी सदस्य की मान्यता से सहमत हूं। भविष्य में कभी कभी इनके द्वारा राष्ट्र विरोधी काम भी हो सकते हैं। अगर आप पुराने इतिहास को देखते हैं तो आपको पता चलेगा कि जो देश दूसरे देश को अपने आधीन रखना चाहते हैं वे ऐसे कारनामें किया करते हैं और इसी प्रकार से विभिन्न देशों को गुलाम बनाया जाता रहा है। लेकिन जब अपनी सरकार है जहां धर्म निरपेक्ष राज्य है ,जहां यह मानकर चला जाता है हरेक को अपनी धार्मिक आजादी है तो वहां पर इस संबन्ध में विचार करना होगा। इसलिये मैं यह चाहता हूँ कि ईसाई मिशनरियों ने जो कार्य किये हैं उन पर गंभीरता पूर्वक गौर करें। जो लोग इस प्रकार की संस्थायें बनाकर काम करते हैं, जहां इस देश में गरीबी फैली हुई है, जहां सामाजिक भेद भाव है उसको दूर करने की कोशिश करें। लेकिन ये छोटे मोटे काम सरकार के कन्धों पर गिरा देना उचित नहीं। जहां तक कांग्रेस पार्टी का ताल्लुक है या अन्य पार्टियों का ताल्लुक है राजनैतिक कार्य के साथ साथ ईसाई मिशनरी जो कार्य कर रहे हैं या अन्य संस्थायें कर रही है उन पार्टियों के कार्यकर्ताओं को भी वह कार्य करना चाहिये। राजस्थान के एक इलाके में जहां ईसाई मिशनरी ऐसे कार्य करते हैं वहां हमें भी यह चाहिये। राजनैतिक कार्य के अलावा इसतरह का भी कार्य करें, जिससे हम देश की गरीबी को हटा सकें और सामाजिक भेद भाव को मिटा सकें। अगर मेरे इलाके में ऐसे कार्य ईसाई मिशनरियों द्वारा होते हों, चाहे उसके पीछे अमेरिका या अन्य किसी जबरदस्त सरकार का हाथ क्यों न हो, हमें अपने बाहुबल से हैं। अपनी सेवा से और त्याग से कार्य करते और उनको वहां से निकाल देते। मैं अपने कार्यकर्ताओं से चाहता हूं कि वे यह सेवा का कार्य सरकार के कन्धों पर न डालें।

अन्त में मैं इतना ही कहना चाहता हूं; जहां धर्म का प्रश्न है वहां शिक्षा के प्रश्न को, संस्कृति के प्रश्न को सरकार के कन्धों पर रखना किसी भी प्रकार से उचित नहीं कहा जा सकता। मैं यह भी मानकर चलता हूं कि शिक्षा, संस्कृति ये महत्व के प्रश्न हैं वहां, इन क्षेत्रों में स्वाधीनता का भी होना जरूरी है, आजादी जरूरी है, अपनी इच्छानुसार कार्य करना जरूरी है। इसलिये हमारी सरकार को यह गौरव प्राप्त है कि इस क्षेत्र में स्वाधीनता दे रखी है। इसलिये हमें भारत सरकार से यह निवेदन नहीं करना चाहिये और न हमारी राजस्थान सरकार से ही निवेदन करना चाहिये

[श्री गौरीशंकर आचार्य]

लेकिन जिन जगहों पर ऐसे कार्य हो रहे हों उन जगहों पर हमें काम करना चाहिये और ज्यादा जोर से करना चाहिये ।

श्री हरिराम निनामा—अध्यक्ष महोदय, सवाल इस बात का है जो मैं तो आपसे कह देना अपना फर्ज समझता हूं । मैं जिस आदिवासी परिवार में से हूं, राजस्थान में १६ लाख आदिवासी हैं उनके परिवार में से हूं ।

यह जो प्रस्ताव आया है उसका मैं मानवता के नाते समर्थन करने में असमर्थ हूं । ये पादरी लोग इन्सान हैं, इनमें इन्सानियत है । इनकी नीति किसी और माने में बुरी हो सकती है, पर हम लोगों के बारे में, हमारे में सुधार करने के बारे में इनकी नीति ठीक है । मैं बता देना चाहता हूं कि हमारी नीति क्या है और उनकी नीति क्या है ? ये लोग क्रिश्चियन बनाते हैं इसलिए इस प्रस्ताव को रखने वाले उनका विरोध करते हैं । मैं विरोध नहीं करता । मैं उनके उसूल का समर्थन करता हूं । मैं बता देना चाहता हूं, दुनिया में ऐसे व्यक्ति कौन होंगे दूसरे जिन्होंने हम आदिवासियों के बच्चों को, बालकों को अपने कन्धे से कन्धा लगाया है, अपने गले लगाया है, उनकी टट्टियां तक साफ की हैं, बहनों और माताओं के उन्होंने लूगड़े तक धोये हैं । उन्होंने उनमें हिलमिल कर काम किया है । जहां कि प्रस्तावक महोदय के साथी लोगों ने हमें दुत्कारा है, गालियां दी हैं, धक्के देकर बाहर निकाला है । ये हम लोगों को शिक्षा देते हैं, हमारे बच्चों को गोद में लेते हैं, बढ़ाते हैं, खिलाते हैं धीरे धीरे हमें पनपाना चाहते हैं । जहां कि इन राजे महाराजों ने हमारा विरोध किया है, हमारी समाज का विरोध किया है, छूआछूत किया है, कहा है और आज भी कहते हैं कि उनको घरों में मत आने दो, अगर बच्चे साथ में ले जाते हैं तो उनको छिटक देते हैं, कोई छू जाता है तो पानी के छींटे देते हैं । वे आज प्रस्ताव ला रहे हैं । उनका समर्थन कर रहे हैं ।

(हियर, हियर, की आवाज)

हम इसका समर्थन नहीं करेंगे । यह गलत तरीका है । अपने स्वार्थों के खातिर उनको हटाना चाहते हैं, गौ हत्या का नाम लेते हैं; किन्तु कभी इन्सानियत का भी नाम लेते हैं ? यह गलत तरीका है और बिलकुल बिना पैंदे की बात है । यह हम कभी मंजूर नहीं कर सकते ।

(करतल-ध्वनि)

हमारे कुछ उसूल हैं । सरकार आज हमारी हमारे लिए काम कर रही है । आज सावधानी से काम करना होगा । हमारी सरकार सावधान रहे । इन्सान से विरोध नहीं करना है, उनकी देश के विरुद्ध गलत हरकतों का विरोध करना है । इसका हम हौंसले से डटकर मुकाबला करेंगे । हम

[श्री हरिराम निनामा]

गरीबों को उठाएंगे, हमारी सरकार हमें मदद देगी, आर्थिक स्थिति हमारी ठीक करेगी। हम अच्छा काम करेंगे। हम हजारों की संख्या में ज्यादा से ज्यादा संस्थाएं पैदा करेंगे। हम घर घर गांव गांव कौने कौने में अपनी संस्थाएं कायम करेंगे। इस गरीबों की सच्ची सेवा करेंगे। यही हमारी सरकार का प्रयत्न है। जो उन लोगों के काम करने के तरीके हैं वैसे ही हमारी सरकार भी काम करेगी। इस पर मुझे पूरा विश्वास है। हम आदिवासियों और हरिजनों को, सब को हमारी इस सरकार पर पूरा पूरा विश्वास है। यह सरकार हमें सहयोग देगी, हमें दुख नहीं देगी।

आज एक भाई आगे बात करना चाहते हैं, नतीजा जानना चाहते हैं। (**हंसी**) पर हम जानते हैं कि हम आदिवासियों पर हरिजनों के ऊपर क्या क्या अन्याय और अत्याचार राजे महाराजों के वक्त में हुआ है। यह हम अच्छी तरह से जानते हैं। हमारे नौकर से नौकरी तो करा लेते थे, पर उनके बच्चों को उनके साथ नहीं रहने देते थे। बच्चों को बाहर धक्का लगाते थे। कहते थे बच्चे क्यों आये तुम्हारे साथ में, उनको धक्का लगाओ। तुम तो नौकरी यहां करो, मैला साफ करो पर तुम्हारे बच्चे जो चिल्लाते हैं उससे हमें आपत्ति होती है, हमें एतराज होता है। इस तरह की बातें करने वाले, इस तरह की वृत्ति रखने वाले ये प्रस्ताव आज लाये हैं? हम इसका विरोध करते हैं।

हम जानते हैं कि आज की सरकार हमारे लिए बहुत अच्छा काम कर रही हैं। हम हरिजन आदिवासियों को आगे लाने के लिए उन्होंने बहुत कुछ किया है और करेंगे और हम भी करेंगे। हमारी सरकार से भी कहूं इसलिये कि हमारा काम करने का उसूल है। ऐसा काम करें। एक बात बता दूं, बांसवाडा का जिक्र कर दूं, एक आदिवासी भाई तीन महीने से टी० बी० होने से अस्पताल में हैं। उसके बच्चे दो हैं, गरीब हैं, पास पैसा नहीं है। उसके बीबी बच्चे मशीन में काम करते हैं बरतन साफ करते हैं; इसके बदले में उनको खाना मिलता है। एक वक्त खाने के बदले काम करते हैं। ऐसे भाई सैंकड़ों हैं। मैं अध्यक्ष महोदय, आपके जरिये सरकार से भी निवेदन करूंगा कि उन गरीबों की सम्भाल करें खाने के बदले में जीवन भर उनसे बरतन मजाएं। उनका बाप टी० बी० से बीमार होकर अस्पताल में पड़ा है और उनके पास पैसा नहीं है। ऐसी स्थिति में वे जो हमारी मदद करते हैं उनको भुलाया नहीं जा सकता। यह है ईसाइयों की इन्सानियत। हजारों किसानों को मुट्ठी भर अनाज दिया, कपड़ा भी दिया। बच्चों के सिर में जुएं पड़ गई तो जुएं निकाल देते हैं। आप लोगों ने कभी उनके बच्चों की जुएं निकाली! नहीं निकाली इसलिये मैं कभी उनका विरोध नहीं करूंगा।

हमारी सरकार से भी प्रार्थना करूंगा कि वह भी इन बातों को ध्यान में रक्खेगी और जो ऐसा काम करते हैं उनको मदद करनी चाहिये और उनको हर तरह की सहायता देनी चाहिये और हमें ज्यादा से ज्यादा अच्छा काम करना चाहिये और यह प्रस्ताव जो लाया गया है गलत तरीके से लाया गया है, इसलिये इसका तो मैं विरोध ही करता हूँ।

श्री **मुक्तिलाल मोदी**—माननीय उपाध्यक्षजी, श्री जगतसिंहजी ने प्रस्ताव रक्खा है राजस्थान की और हिन्दुस्तान की संस्कृति को देखते हुए उसका समर्थन करना चाहिये। आज जो

[श्री मुक्तिलाल मोदी]

भी मेरे दोस्त उसके विरुद्ध बोले वे नहीं समझे कि आज हिन्दुस्तान की इज्जत बाहर के देशों में क्यों है । आज वहां हमारी इज्जत है हमारी संस्कृति की वजह से । हमारी इसी संस्कृति के नाम पर भारत भारत है, जिसको वे आज इज्जत की दृष्टि से देखते हैं । आज उसी संस्कृति की हत्या जहां की जाती है उसका समर्थन कैसे किया जा सकता है ? अब चाहे वहां कोई मजिस्ट्रेट के लड़के पढ़ते हों, या किसी आई० ए० एस० या आर० ए० एस० या एम० एल० एज० के लड़के--बच्चे पढ़ते हों, मैं तो इसका विरोध करता हूँ। क्योंकि माननीय उपाध्यक्षजी, उनके अन्दर ।······

श्री मानसिंह महार—आपके बच्चे कहां पढ़ते हैं ?

श्री मुक्तिलाल मोदी—मेरे बच्चे आपके घर पर पढ़ते हैं ।

(हंसी)

कु० श्री जसवन्तसिंह – उनका घर स्कूल है क्या ?

श्री मुक्तिलाल मोदी—उनके बच्चे मेरे बच्चे हैं साहब, एक ही बात है ।

तो माननीय उपाध्यक्षजी, यह जो एक बात कही गई माननीय जसवन्तसिंहजी द्वारा और दूसरे मित्रों ने, कि वे काफी सेवा का काम करते हैं, अस्पतालों में काम करते हैं, सेवा का काम करते हैं और दूसरे दूसरे सेवा के काम करते हैं, परन्तु आज ८, ६ वर्ष पहले तो उन लोगों का शासन हिन्दुस्तान में जमा हुआ था, जिस शासन की बदौलत वे लोग दूसरों को पनपने नहीं देते थे और हिन्दुस्तान की संस्कृति को मिटाना चाहते थे । लेकिन आज उस शासन के जाने के बाद भी, आजादी आने के बाद भी हिन्दुस्तान में वह संस्कृति ज्यादा बढ़ी है, न कोई कम हुई है । हिन्दी का प्रचार भी दूर दूर और दूसरी संस्कृतियों का प्रचार भी दूर दूर, बनिस्बत ज्यादा बढ़ा होगा न कि कम हुआ है और जो दूसरे देशों में आपकी हिन्दुस्तान की संस्कृति को ले जाकर बड़े बड़े देशों में उसको पढ़ाने के लिए एक एक लड़के पर लाख दो लाख रुपये खर्च कर रहे हैं; अगर आप लोग दूसरे देशों की संस्कृति हिन्दुस्तान में लायेंगे तो वह आपके देश की उन्नति कैसे कर सकेगी । दूसरे देश की संस्कृति कभी नहीं कर सकती है । (हियर, हियर) और जो लोग उनकी तारीफ करते हैं कि ईसाई धर्म या दूसरे २ धर्मों की बात देखेंगे कि आज अमेरिका में चले जाइये, आज रशिया में चले जाइये या और दूसरे देशों में चले जाइये, वे लोग अपने अपने धर्मों को तरक्की देंगे, बनिस्बत दूसरे धर्म के और आप लोग दूसरे देशों के धर्म को यहां हिन्दुस्तान में जो तरक्की देते है वह मानने लायक बात नहीं है । हिन्दुस्तान की जो संस्कृति है, हिन्दुस्तान की जो कला है उसको ज्यादा महत्व देना चाहिये बनिस्बत इसके कि लड़कों को अंग्रेजी पढ़ायेंगे । अंग्रेजी पढ़ कर क्या करेंगे ? अंग्रेजी तो अब मिटने वाली है । आज नहीं, कल, वह

[श्री मुक्तिलाल मोदी]

मिट कर रहेगी। अंग्रेजी तो जब कि राजा लोग खत्म हो गये, आई० सी० एस० की तनख्वाह कम हो जायगी, जजेज़, और वकीलों की वकालत नहीं चलेगी तो अपने आप कमती हो जायगी। तो जो अंग्रेजी को पढ़ाने वाले हैं वे लोग भी नहीं पढ़ाने वाले हैं। तो माननीय उपाध्यक्षजी, जो शेरगढ़ के माननीय सदस्य ने यह बताया कि वह तो बिल्कुल अंग्रेजी पढ़ेंगे, अगर इस तरह से होगा तो यह तो बिल्कुल ही उनकी चेलेन्जेबल बात। तो क्यों नहीं उनको पादरी बना देना चाहिये। [हंसी]

वह, माननीय उपाध्यक्षजी, जो हिन्दी की चीज है तो जितने भी एम० एल० एज़० बैठकर यह कहते हैं कि हमने इतनी हिन्दी का प्रचार किया है, हमारी संस्कृति का प्रचार किया है, हमने किताबें भेजी हैं, उन लोगों को प्रोत्साहन दिया है, अगर वे हिन्दी का गांवों और कस्बों में प्रचार करते तो ज्यादा अच्छी बात होती बनिस्बत उस चीज को उठा कर दूसरी चीज को तरजीह दें और उसकी तारीफ करें। यह कहां तक ठीक है कि हिन्दुस्तान की संस्कृति को आप मिटाना चाहते हैं, आगे बढ़ाना नहीं चाहते हैं।

श्री संतोषसिंह कछवाहा—माननीय उपाध्यक्षजी, अभी जो सदन में प्रस्ताव पेश हुआ है उसके ऊपर काफी बहस हो चुकी है, मुझे कुछ विशेष ज्यादा नहीं कहना होगा, लेकिन....

एक माननीय सदस्य—आप थोड़ा ही कहें, कम से कम।

श्री संतोषसिंह कछवाहा—हां। माननीय उपाध्यक्ष जी, इस ईसाई मत के मुताल्लिक बाहर से एड आ रही है उसके मुताल्लिक यह अर्ज है। तो मैं इस प्रस्ताव में कुछ संशोधन के बाद इसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। वास्तव में बात यह है कि जैसे कि अभी श्री मुक्तिलालजी मोदी ने कहा है, जो कि बाहर घूमकर आये हैं उन्हें मालूम हुआ है कि जिस जिस मुल्क के अन्दर आप गये वहां पे अपने २ धर्म की बहुत प्रतिष्ठा करते हैं, लेकिन हमारे यहां को सरकार अपने यहां है, हिन्दुस्तान के धर्मों के अन्दर कुछ विश्वास नहीं रखती है और न उसके अन्दर उन्नतिके लिए सहयोग ही देती है। इसके लिए मेरा यही कहना है कि सेन्ट जेवियर स्कूलमें हमारी सरकार किस तरह की मदद देती है तो हमारी सरकार को खुले दिल से सहयोग, जो कि हमारी संस्थाएं हैं गुरुकुल चित्तौड़ और दूसरे जो कि राजस्थान में चल रहे हैं, उनको भी उसी हिसाब से एड देना चाहिए लेकिन जहां तक मैंने मालूम किया है हमारी सरकार इस तरह से धर्म के नाम पर कोई संस्था, कोई पाठशाला है, कोई स्कूल है, उसको किसी तरह की एड देने को तैयार नहीं है जब तक कि उस संस्था का विशेष दबाव नहीं हो या किसी वोटर पर कोई प्रभाव नहीं हो। अगर हो तो शायद कुछ एड मिल सकती है। जब कि सरकार सेन्ट जेवियर स्कूल जैसी विदेशी संस्था को पूरी एड देती है तो फिर जो हमारा चित्तौड़ का गुरुकुल है उसको वह एड क्यों नहीं दी जाय और ईसाई मत से सरकार को बिल्कुल सचेत रहना चाहिए। इस स्कूल के अन्दर जैसा कि कहा गया है बड़े प्रतिष्ठित आदमियों के पुत्र, लड़कों को भेजा जाता है पढ़ने के लिए, लेकिन उनको सोचना चाहिये

[श्री सन्तोषसिंह कछवाहा]

कि बच्चों का हृदय बड़ा कोमल होता है। उनमें इसी उम्र, ५,१०,१२,२५ वर्ष तक की उम्र में जैसे संस्कार पड़ेंगे वह आखिर तक काम में आयेंगे। इसलिए चाहे कुछ भी हो, उस स्कूल में जो पढ़ाने वाले हैं उनको बाद में मालूम पड़ेगा कि उनके लड़कों ने हिन्दुस्तान में कहां तक किया, मा बाप के लिए क्या किया? यह जरूर है कि वहां सफाई और खाने पीने का एटीकेट जरूर आ सकता है, लेकिन वह एटीकेट तो अगर गुरुकुलों में पढ़ाने के लिए भेजें तो वहां और ज्यादा हो सकता है। हमारी मारवाड़ी में एक कहावत है कि "दगाबाज दुगना नमे, चीता चोर कमान"। यह चीज फुसलाने वाली होती है, अपने पक्ष में लाने के लिए प्रत्यक्ष प्रमाण है कि जैसा कि अभी एक माननीय सदस्य ने काफी जोर से कहा है कि बांसवाड़े के अन्दर औरतों के घाघरे धोए और जुएं तक निकालीं; बड़ा अच्छा काम किया। यह सारी बातें इसी को साबित करती हैं कि वे लोग अपने मत को, धर्म को, फैलाने के लिए किस तरह से गरीब और ना-समझ लोगों को फुसलाकर अपने धर्म में लाने की कोशिश करते हैं। कांग्रेस की तरफ बैठे हुए भाई ने जो कुछ कहा है उससे सचेत होना चाहिए। यह ईसाई मत...

श्री **हरिराम**—यदि आप बांसवाड़ा आयें तो देखें।

श्री **संतोषसिंह कछवाहा**—कुछ समय के बाद बांसवाड़े में हाजिर होऊंगा, लेकिन आपके व्याख्यान से सब मालूम हो गया कि ईसाई मत किस तरह से फैलता है और किस तरह से वह चापलूसी करते हैं। इसीलिए मैंने मारवाड़ी का एक आख्यान कह दिया है कि "दगाबाज दुगनों नमे, चीता चोर कमान, धीरज दे दे धन हरे, रहे दास का दास।" औरतों के घाघरे धो धो कर इस बात के संस्कार पैदा करते हैं कि आपको ईसाई मत अच्छा लगे। (हियर, हियर) इसलिए हमारी सरकार को सचेत रहना चाहिये। ईसाई मत सेवा भाव से काम करता है तो नतीजा खराब यह समझ लेना चाहिए। जब कि राजाओं का राज्य था तो उनका राज्य बेटे-पोते से चलता था, लेकिन प्रजातन्त्र में वह बात नहीं है। अब राज्य होता है वोटों से। अभी जातिवाद १०,२० वर्ष तक मिटेगा नहीं, तो १०, २० वर्ष के अन्दर जब कि एक जाति को बनाने के लिए एक संस्था है, एक मिशन है; इसके लिए सरकार को सचेत रहना चाहिए। सचेत रहने के लिए मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ। इस प्रस्ताव में कुछ संशोधन करने के बाद इसको स्वीकार जरूर करना चाहिए। निश्चय ही सरकार को दूसरी संस्थाओं को भी बराबर की एड देने के अन्दर कुछ भी संकोच नहीं करना चाहिए। अभी बहुत से भाइयों ने कहा है कि इससे अच्छी सफाई की संस्था नहीं है। लड़कों को कहां भेजें? यह बात बिलकुल सही है। सरकार का काम है कि जब अपने स्कूलों को बढ़ाया जाय। एक मोडल उन्हें बनाया जाय। तो मोडल के आधार पर क्या सरकार अपने स्कूल में धर्म को एड देती है; उसको प्रोत्साहन देती है, तो उस पर उसका अंकुश रखे। वह जैसे दूसरे स्कूलों को अपने धर्मों का प्रचार नहीं करने देती है तो उस स्कूल में धर्म का प्रचार कभी भी नहीं होना चाहिए। उस स्कूल में भी बगैर किसी धर्म के: जैसे दूसरे स्कूलों में पढ़ाया जाता है उसी तरह पढ़ावें तो बिलकुल ठीक है। लेकिन वह अपने धर्म का प्रचार

[श्री सन्तोषसिंह कछवाहा]

करते हैं। मासूम बच्चे, जिनका हृदय कोमल होता है उन पर वह प्रभाव डालते हैं। वहां की प्रार्थना में ईसामसीह का नाम लेते हैं। तो आगे सरकार को सोचना चाहिए। दूसरी संस्थाएं ऐसी पैदा करके बताना चाहिए कि लड़कों को अच्छी संस्थाओं में भेजा जाय, इसलिए मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

श्री उपाध्यक्ष—(श्री रूपनारायण शास्त्री और श्री मोतीलाल चौधरी के एक साथ बोलने के लिए खड़े होने पर) श्री रूपनारायण शास्त्री।

श्री रूपनारायण शास्त्री—आज हमारे सामने एक संकल्प प्रस्तुत है और उस संकल्प के सम्बन्ध में अनेक विचार अनेक माननीय सदस्यों ने रखे हैं। मैं समझता हूँ कि मुझे इस विचारधारा के प्रति अपना मत प्रकट करना आवश्यक नहीं। क्योंकि जिस पार्टी से मैं आया हूं वह पार्टी इस सम्बन्ध में क्या मान्यता रखती है। मैं रामराज्य परिषद् से आया हूं, रामराज्य परिषद् इस सम्बन्ध में क्या मानती है। रामराज्य परिषद् कहती है कि हर एक आदमी जो अपने अपने विश्वास के अनुसार अपने धर्म का पालन करता है वह किसी भी धर्म का मानने वाला आदमी रामराज्य परिषद् का सदस्य बन सकता है और वे लोग रामराज्य परिषद् के मेम्बर होने के बाद भी अपने २ धर्म के अनुसार आचरण कर सकते हैं।

इसलिए इस सम्बन्ध में मैं कोई अपने विचार व्यक्त करूं, यह आवश्यक नहीं; पर मैं श्रीमान् झालासाहब के उन विचारों का समर्थन करता हूं।

जिस चीज को एक पार्टी मानती है उस चीज को उस पार्टी के सदस्य मानते हैं। मैं यह मानता हूं कि हमारे यहां सर्व धर्म सहिष्णुता मानी गई है और गीता में भगवान कहते हैं कि :

"ये यथा माम् प्रपद्यन्ते तान्तथैव भजाम्यहम्।

मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥"

जो मुझको जिस तरह प्राप्त करना चाहता है, "ये यथा माम् प्रपद्यन्ते तान् तथैव भजाम्यहम्"। भगवान कृष्ण कहते हैं कि जो उनको जिस रूप में स्वीकार कर लेता है, भगवान् उसे वैसे ही स्वीकार कर लेते हैं। चाहे कोई उन्हें क्रिश्चियन धर्म के अनुसार स्वीकार करे, चाहे कोई मुसलमान धर्म के अनुसार स्वीकार करे तो मैं उनको अपना लेता हूं।

"मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।"

[श्री रुपनारायण शास्त्री]

जितने मानव हैं वे सब मानवता रखते हैं, मेरे ही को तो प्राप्त होना चाहते हैं और मेरे ही मार्ग का अनुसरण करते हैं। इसलिए मुझे ईसाई धर्म के प्रचार में या उन लोगों के प्रति कोई द्वेष नहीं।

परन्तु हमारी गवर्नमेन्ट राष्ट्रीय गवर्नमेंट है और राष्ट्र को जो क्षति हुई है, जिसको हमने प्रत्यक्ष देखा है। हमारे यहां एक नारा लगाया गया। "इस्लाम धर्म खतरे में है," यह कह कर हिन्दू मुसलमानों में आपस में द्वेष बढ़ाया गया और उसका परिणाम यह हुआ कि पाकिस्तान बनाया गया। हमारे राष्ट्र के दो प्रदेश बन गये। कहा जाता है कि हमने भारत माता को स्वतन्त्र तो किया। हां, स्वतन्त्र तो किया पर कैसे किया ? भारत माता को रुंड मुंड विहीना कर दिया और यह स्थिति कर दी कि कहीं उसके हाथ काटे गये, कहीं उसके पैर काटे गये और पाकिस्तान और हिन्दुस्तान बने। राष्ट्र के ये जो टुकड़े दो हुए उसका मूल कारण धार्मिक क्रान्ति थी। तो इन स्थितियों को देखकर हमें आशंका होती है कि कहीं हमारी राष्ट्रीयता, ईसाई धर्म मानने वालों की संख्या हमारे यहां बढ़ जाने से खंडित तो नहीं हो जायगी।

पर इससे हम यह तो नहीं कह सकते कि ईसाई धर्म को हमारे यहां कोई नहीं मान सकता, या ईसाई धर्म बुरा है और यह संकल्प हमारे सामने रखा है उसके बारे में मुझे यह नहीं कहना है ईसाई धर्म बुरा है, या एक धर्म को ही सर्व श्रेष्ठ मान बैठते हो, या इससे अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता कम होती हो। मैं तो यह चाहता हूं कि तमाम धर्मों में सहिष्णुता हो, मुझे यह नहीं कहना है कि ईसाइयों को हिन्दू बना देना चाहिये, या मुसलमानों को हिन्दू बना दिया जाय, किसी का बलात् धर्म परिवर्तन किया जाय। भगवान् ने कहा है

"ये यथा माम् प्रपद्यन्ते तान् तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्या: पार्थ सर्वशः ॥"

और आगे कहा है :

"स्व धर्मे निधनं श्रेयः पर धर्मो भयावहः।"

इसका अर्थ स्पष्ट है कि अपने धर्म में मर जाना अच्छा है और दूसरे का धर्म ग्रहण नहीं करना चाहिये। परन्तु आज इसके प्रतिकूल आचारण किया जा रहा है। वे जो लोग हिन्दू धर्म को छोड़ कर ईसाई धर्म में दीक्षित होते हैं उनकी पुष्टि करते है, उनको शिक्षा-दीक्षा देते हैं और इस तरह का प्रचार करते हैं कि लोग हिन्दू धर्म से विमुख होकर ईसाई बनना चाहते हैं, यह ठीक नहीं वे ऐसा क्यों करते हैं। सर्व धर्म सहिष्णुता का मतलब यह है कि वे अपने धर्म में जो विश्वास है उसके अनुसार आचारण करें।

एक माननीय मित्र ने कहा कि ईसाई धर्म ने और उसके प्रवर्तकों ने सेन्ट जेवियर्स स्कूल खोलकर ऐसी अच्छी इंग्लिश का प्रचार किया है कि वहां से निकले हुए आई. सी., एस., आई. ए.

Page No.63

[श्री रूपनारायण शास्त्री]

एस. के बड़े बड़े पदों पर पहुंचे हैं। यह उनका बड़ा भ्रम है और मुझे उनकी बात पर तरस आता है। उन लोगों के ऊंचे पद पर पहुंचने में तो उनकी तीव्र बुद्धि कारण थी। सेन्ट जेवियर्स का मुंह भी नहीं देखा, पर कई लोग ऊंचे से ऊंचे पदों पर विद्यमान हैं। मैं हमारे माननीय गृह मन्त्रीजी के बारे में कह सकता हूं कि वे लॉ कॉलेज़ के प्रोफेसर थे; तो मैं उनसे पूछूं कि क्या कभी उन्होंने सेन्ट जेवियर्स स्कूल का मुंह देखा था ? इसके लिये शायद कहा जा सकता है कि गृह मन्त्री तो वे चुनावों के कारण बन गये परन्तु उनकी विद्वता के बारे में तो संदेह नहीं किया जा सकता और हमारे मुख्य मन्त्री भी किसी क्रिश्चियन कॉलेज़ में नहीं पढ़े हुए हैं, उनकी सफलता के बारे में प्रायः किसी को सन्देह तो नहीं है। इतना ही नहीं मैं भंडारीजी के बारे में कह सकता हूँ जो जयपुर के हैं, जो कि हाईकोर्ट के जज हैं, उन्होंने सेंट जेवियर का मुंह तक नहीं देखा। क्रिश्चियन स्कूल में पढ़ने से ऊंचे से ऊंचे पद पर जा सकते हैं, यह मैं मानने को तैयार नहीं हूँ।

एक सदस्य ने कहा कि क्रिश्चियन्स आ कर हमारी जूंए निकालते हैं, हमारी सेवा करते हैं। स्वार्थ के कारण अगर कोई हमारी सेवा करे, हमारी खुशामद करें तो इसका मतलब यह नहीं होता कि हम उसके धर्म को अंगीकार कर लें और अपना धर्म छोड़ दें। इसके लिये एक संस्कृत की कहावत है :

" रत्नावतंसां कुलटां समीक्ष्य किमार्य नार्यः कुलटा भवेयुः " ।

किसी कुलटा स्त्री को रत्नाभूषणों से सजी देख कर क्या सती स्त्री कुलटा हो सकती है ? अगर कोई कामी पुरुष किसी सती कुलांगना की सेवा करने लग जावे, उसकी वस्त्राभूषणों से सेवा करे तो क्या सतीत्व जैसे रत्न को उसकी सेवाओं से खुश हो कर उसे दे दे ? कभी नहीं। ईसाई हमारी सेवा करते हैं, हमारी खुशामद करते हैं तो उससे धर्म जैसी चीज को हम परिवर्तित कर दें, यह हमें नहीं करना चाहिये।

हम किसी भी धर्म को नीची निगाह से नहीं देखते, पर हम यह भी नहीं चाहते कि ईसाई धर्म हमारे धर्म पर आघात करे और ऐसे तत्वों को उत्पन्न कर दे कि आगे जा कर वे लोग पाकिस्तान की तरह क्रिश्चियनिस्तान मांगने लग जायें। उन माननीय सदस्य ने जिस वक्त अपना भाषण शुरु किया था मैं तो नहीं मानता कि कांग्रेस के सच्चे सिद्धान्त उनमें हैं। उन्होंने कहा कि हम अछूतों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं, इस लिये लोग धर्म परिवर्तन करते हैं। हमें दलित वर्ग को बड़ी आदर की दृष्टि से देखना चाहिये और उनको उत्तम से उत्तम अंग मानना चाहिये। केवल सिर ही हो तो काम नहीं चल सकता और केवल पैर ही हो तो उससे काम नहीं चल सकता, इसलिये सब अंगों को समान मानना चाहिये।

एक वक्ता ने कहा कि टेबल पर हरिजन और सवर्ण जहां साथ बैठ कर खाते हैं तो दूसरी प्लेट या पत्तल मंगा कर खाते हैं, तो मैं कहता हूं इसके कई कारण हो सकते हैं, इसका कारण घृणा नहीं हो सकता। इसका कारण यह नहीं हो सकता कि हम उनसे

[श्री रुपनारायण शास्त्री]

घृणा करते हैं या उनको घृणा की दृष्टि से देखते हैं। उदाहरण के तौर पर मैं यह कहूँगा कि हमारी धर्मपत्नि जो हमारी अर्धांगिनी होती है, मगर अर्धांगिनी होते हुए भी जब वह रजस्वला हो जाती है तो हम उसके साथ खाना नहीं खाते, इसलिये नहीं कि हम उससे घृणा करते हैं मगर इसलिये कि उसनें कुछ दोष आ सकते हैं। इसीलिये कई प्रकार के दोष आ जाने से उनके साथ भी खाना नहीं खाते। इसका मतलब यह नहीं कि हम उनके साथ नहीं खाते इसलिये हम उनसे घृणा करते हैं। इसलिये इस प्रकार की बात कह कर किसी प्रकार का मतभेद पैदा नहीं करना चाहिये। बुद्धि से सोचना चाहिये। जैसा गीता में कहा गया है:—

"न बुद्धि भेदं जनमे दज्ञनां कर्म संगिनाम्" ।

जो काम करने के लिये हमारे शरीर के अंग हैं, सार्थ हैं, और जो खुद कुछ विचार नहीं कर सकते हैं उनको इस प्रकार को बातें कह कर भेद भाव पैदा करना हमारे लिये शोभा की चोज नहीं। इसलिये मैं कहता हूं कि यह बात कोई तथ्य नहीं रखती। मैं तो इतना ही कहूंगा कि हमारे यहां सरकार किसी प्रकार उन संस्थाओं को मदद नहीं देगी जो धर्म का प्रचार करती हैं। सरकार ने इस प्रकार का प्रतिबन्ध लगाया कि सभी जगह राष्ट्रीय प्रार्थना होनी चाहिये। पहले किसी जगह सरस्वती की प्रार्थना होती थी तो किसी जगह दूसरी प्रार्थना होती थी; कहीं कुछ और कहीं कुछ प्रार्थनाएं होती थीं वहां पर भी हमने राष्ट्रीय प्रार्थना शुरू करा दी। आज अगर "जन मन गण" की प्रार्थना नहीं हो और केवल ईसाइयों के धर्म की ही प्रार्थना हो और ऐसी संस्था को हम सहायता दें तो इसका अर्थ क्या होगा ? इसका अर्थ यही होगा कि हम विदेशियों से डरते हैं और हम उनसे हमारे कानून का पालन नहीं करा सकते हैं। विदेशी लोग जो कुछ भी करते हैं, चाहे वे गल्त ही क्यों न हों, फिर भी हम उनको प्रोत्साहन देते हैं। धर्म के मामले में मैं कुछ कहना नहीं चाहता। लेकिन महाकवि कालीदास ने एक नाटक लिखा, उसमें यह कहा है कि —

"पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि सर्वं नव मित्य वधम्।
सन्तः परीक्ष्या न्यतरद् भजन्ते मूढ़ः पर प्रत्यनयबुद्धिः ॥"

कौन चीज अच्छी है और कौन चीज बुरी है इसका निर्णय करते हुए उन्होंने कहा है कि जो चीजें पुरानी हैं वे सभी अच्छी हो ऐसी बात नहीं है। दूसरा सिद्धान्त की बात उन्होंने कही कि नई जितनी भी चीजें है वे अच्छी हो यह बात भी नहीं है। न तो मैं यह कह सकता हूँ कि पुरानी चीजें ही सब अच्छी हैं और न यह कह सकता हूं कि नई चीजें हैं। यह कोई सिद्धान्त नहीं हो सकता कि सब नई चीजें ही अच्छी हों या पुरानी चीजें ही अच्छी हों; तो जो बुद्धिमान लोग होते हैं वे इसकी परीक्षा कर लेते हैं, उसकी उपासना करते हैं; केवल दूसरों के कहने से ही विश्वास नहीं करते और अगर जो लोग दूसरों के विश्वास और ज्ञान पर चलते हैं और अपनी बुद्धि से काम नहीं लेते वे मूर्ख हैं। इसलिये मैं यह कहूंगा कि बुद्धिमानी से काम लेना चाहिये। ईसाई धर्म

[श्री रूपनारायण शास्त्री]

सात समुद्र दूर से यहां आया। इंग्लैन्ड से आया। इसके लिये इंग्लैंड से किताबें आती हैं और धर्म का प्रचार होता है।

एक शख्स यह कहते हैं कि शकुन्तला नाटक बहुत अच्छा है और इसका ट्रान्सलेशन सभी भाषाओं में हुआ है और इंग्लिश में भी इसका अनुवाद हुआ है। शकुन्तला नाटक बहुत अच्छा है, इसको मैं मानने के लिये तैयार हूं लेकिन उन्होंने यह कहा कि यह अंग्रेजी में भी छपा है इसको मैं मानने के लिये तैयार नहीं हूं। मैं तो अच्छा बुरा अपने विश्वास से मानता हूं, मैंने अच्छा बुरा अपनी योग्यता से माना। ईसाई धर्म जो है वह सात समुद्र पार से आया और वहां से आकर लोग इसका प्रचार करते हैं और हमारे यहां पर आकर अच्छी शिक्षा देते हैं इसलिये हमें उनको सहायता देनी चाहिये और वे हमारे कानून की अवहेलना भले ही करें, यह बात ठीक नहीं। ऐसा नहीं होना चाहिये। अब बात यह है कि······

(घंटी)

अगर कानून की अवहेलना करने वाली स्कूलों को राजस्थान सरकार सहायता देती है तो उसे तुरन्त बन्द कर देना चाहिये।

अब रही भारत सरकार से इस सम्बन्ध में सिफारिश करने की बात। यह बात मेरी समझ में बैठी नहीं। राजस्थान सरकार को क्या आपत्ति है कि वह भारत सरकार को इसके लिये लिखे। अब यह कहा जाता है कि ईसाई धर्म से राष्ट्रीयता भंग होने का अंदेशा है। अगर ऐसी बात है तो भारत सरकार खुद इस पर सोच सकती है।

मैं किसी धर्म को अयोग्य बताने के सम्बन्ध में नहीं हूं कि यह धर्म अयोग्य है इसलिये मैं इतना ही कहता हूं और इस हद तक इसका समर्थन करता हूं।

श्री धूलजीभाई—माननीय उपाध्याक्ष,...

श्री हरिकृष्ण व्यास—Mr. Dy. Speaker, I propose that the question be now put.

श्री खेतसिंह—अभी तक तो बहुत से लोगों को बोलना है।

एक माननीय सदस्य—आप समर्थन में बोल रहे हैं।

श्री धूलजीभाई—मैं समर्थन में नहीं बोल रहा हूं। मैं बांसवाड़ा आदि जगहों के सम्बन्ध में चर्चा करूंगा और कुछ बातें बताऊंगा कि वे लोग आदिवासियों के लिए क्या काम कर रहे हैं।

श्री हरिकृष्ण व्यास—मेरे प्रस्ताव का क्या हुआ ?

श्री उपाध्यक्ष—इनको बोलने की इजाजत है।

श्री घूलजी भाई—उपाध्यक्ष महोदय, प्रस्ताव का समर्थन नहीं करूंगा, मगर इसाई और आदिवासियों से जहां तक सेवा--कार्य का सम्बन्ध है उसके बारे में कहना चाहता हूं कि वह कार्य बहुत ठीक है लेकिन उनको सेवा के साथ साथ, सेवाओं के बदले वे आदिवासियों को खरीद करते हैं यह महान् दुख भरी कहानी इस जिले की है और वह इसलिए कि सरकार की तरफ से उन लोगों के लिए उनके स्वास्थ्य के लिए कोई प्रबन्ध नहीं है और न कोई किसी प्रकार के इलाज की व्यवस्था है। इसलिए रियासतों के समय से ही वहां पर इसाई धर्म का प्रचार होता आया है, गरीबी और भुखमरी से लोग ईसाई हो जाते हैं। वे भूख के कारण हो जाते हैं, अपना इलाज कराने के लिए उनके पास पैसा नहीं होता और इस कारण से वे ईसाई बन जाते हैं। जब उनका इलाज करते हैं और उनको आर्थिक हालत कमजोर होती है उस कारण से वे पैसा नहीं दे सकते; तो फिर उनको, उनके बच्चों को ईसाई बना लेते हैं। इसका सेवा कार्य में बहुत बुरा असर पड़ता है और आदिवासियों में उम्र लायक जो बड़े आदमी होते हैं वे अपने जीवन में परिवर्तन नहीं लाते हैं, फिर भी वे ईसाई धर्म अंगिकार कर लेते हैं लेकिन इसका असर उनके छोटे बालकों पर पड़ता है। वे गरीबी के कारण उनके बालकों को ५ या १० रुपयों में खरीद लेते हैं। यह दुख की कहानी है। कैसे ? वे उन लोगों की सेवा व इलाज करते हैं। इलाज में ५० रुपये खर्च हो जाते हैं। दो-चार महीने बाद उनके प्रचार करने वाले उनके पास पहुंचते हैं और कहते हैं कि अब तो तुम अच्छे हो गये हो, अब तो पैसे दे दो। वह यह कहता है कि हमारे पास पैसा तो नहीं है। वह कहता है कि तुम अपने बच्चों को हमें दे दो, हम इनको पढ़ावेंगे। हम इनको शिक्षा देंगे, अच्छे कपड़े पहिनावेंगे। इस तरह उनके बच्चों को ४ या ५ रुपयों में खरीद लेते हैं और उनको शिक्षा देकर स्वस्थ रखते हैं। वे उनको अच्छी तरह से पढ़ाते हैं और अपने में मिला लेते हैं। यह चीज हो रही है, उसको हमें हमारी सरकार के सामने रखना है। जिस प्रकार की सेवा दी जाती है, श्री हरिरामजी ने बताया, मैं समझता हूं कि वे अपने भावों को अच्छी तरह से आवेश में व्यक्त नहीं कर सके हैं। इस प्रकार वे बच्चों को ले जाकर उनको अपने अनुकूल बनाते हैं। अधिकतर छोटे २ बच्चों को ले जाते हैं। और उन्हें नर्स कम्पाउन्डर इन भील जाति से तैयार करते हैं। उनको तालीम देकर योग्य बनाते हैं। ये मिशन अच्छा काम करते हैं यह बहुत अच्छी बात है लेकिन सेवाओं के बदले मानवता को खरीद लेते हैं, यह उनकी सेवा दोषपूर्ण है इस चीज को हटाना है। इसलिये मैं राजस्थान सरकार से कहना चाहती हूँ कि हमें इन हरिजनों और गरीब लोगों को अच्छी तरह से अपनाना है तो हमें अच्छी तरह से अपनाना चाहिये। यदि सरकार की तरफ से उनको हर प्रकार की स्वास्थ्य के लिये व दूसरे प्रकार की सेवाएं मिलती रहें तो धर्म का कोई परिवर्तन नहीं होगा, उन लोगों को अपने धर्म का कोई ज्ञान नहीं है। आदिवासी लोग मांस नहीं खाते हैं लेकिन आप देखेंगे कि जब वे लोग ईसाई हो जाते हैं तो गौ मांस खाने लग जाते हैं। हमारे यहां

[श्री धूलजी भाई]

आदिवासियों में दो तीन पंथ हैं। कबीर पंथी, दूसरे गोविन्दगुरू जमांत साधुओं को मानते हैं। वे मांस नहीं खाते और ईसाई होने को भील जाति कोई राजी नहीं, न कोई आदिवासी ईसाई होना चाहता है; यह इसीलिये कि वहां पर उनके स्वास्थ्य की सेवा करने के लिये कोई सरकार की तरफ से प्रबन्ध नहीं है। इसलिये विशेष कार्य उन क्षेत्रों में होना चाहिये ताकि उन लोगों के संस्कार बदलें और उनकी शिक्षा व स्वास्थ्य रक्षा के लिये कोई व्यवस्था हो, जो फिलहाल नहीं है।

हमारे जिले में स्वास्थ्य के बारे में बताऊं कि वहां पर, बांसवाड़ा जिले में एक ही अस्पताल है और वहां पर आदिवासी मरीजों को रखने की व्यवस्था नहीं है, इलाज का कोई इन्तजाम नहीं है, नर्स नहीं, अस्पताल में वार्ड नहीं, १०. ५ मरीजों को, आदिवासियों को रखने की जगह नहीं। इस कारण से वे लोग हताश हो जाते हैं और इसी कारण से अपनी जान बचाने के लिये वे मिशनरियों की सेवा केन्द्रों में जाते हैं और मिशनरी लोग गांवों में जाकर अपनी मोटरें ले जा कर अपने यहां लाते हैं, वे उनकी चिकित्सा करते हैं, उनको खाना देते हैं, दवा देते हैं और इस कारण से वे उन पर अच्छा प्रभाव डालते हैं और अपनी जान बचाने के लिए जैसा कि हरएक व्यक्ति के लिए होता है। हमारे यहां अस्पताल में इस बात की कमी है, आदिवासियों के स्वास्थ्य के लिए कोई व्यवस्था नहीं है। मोटर की भी व्यवस्था नहीं है कि गांवों से मरीज आदिवासियों को ला सके। आप यह देखेंगे कि आदिवासियों के लिए दो साल से चलता फिरता, दवाखाने के लिये मोटर की व्यवस्था की गई है, लेकिन गतवर्ष भी अफसर लोग उस गाड़ी में फिरते रहे हैं, और अब तक दवा-दारू के लिए मोटर नहीं पहुँची है, वहां के आदिवासियों की अकाल मृत्यु हो जाती है और वे अपनी जान को बचाने के लिए मिशनरियों की शरण में जाते हैं। इस प्रकार इस चीज़ की कमी हटाने के लिए, मिशनरियों के प्रचार को रोकने के लिए सरकार को सतर्क होना पड़ेगा, वहां सुचारू रूप से लोगों का इलाज हो। इस ओर खास तौर पर ध्यान देने की आवश्यकता है। बेकारी और भुखमरी मिटाने के लिए ऐसे स्तर पर उनको बसाने की भी आवश्यकता है, जहां पर उनकी अच्छी तरह से शिक्षा दी जा सके, शिक्षा के प्रचार और रहन सहन से उनके विचारों को बदला जा सके और उनके विचारों को ताजा कर सकें। अधिक से अधिक पैसा वहां लगाकर, आदिवासियों को अच्छा बनाने के लिए हमारे समान उनको अधिकार देकर बहुत कुछ करना है। उस ओर हमारी सरकार का वास्तविक रूप से ध्यान नहीं गया है और इसी वजह से वे आदिवासी ईसाइयों की शरण में चले जाते हैं, उन पर वे अच्छा प्रभाव डालते हैं, वे उनको ईश्वर मानने लगते हैं, क्योंकि वे ही उनको जीवन दान देते हैं, क्योंकि वे उनकी सेवा करते हैं और वे अपने को और अपने बच्चों को उन ईसाइयों की सेवा में गरीबी के कारण समर्पित कर देते हैं। इसलिये हमारा फर्ज हो जाता है और हिन्दू कहाने वालों का फर्ज हो जाता है कि हम उनको बचावें और उनकी सेवा करें।

[श्री धूलजी भाई]

अगर हम उनकी सेवा नहीं करेंगे तो इसमें कोई शक नहीं कि हम उनको नहीं अपना सकेंगे। ईसाई वास्तविक रूप में उनकी सेवा करते हैं। हमारा धर्मनिरपेक्ष राज्य है और उसमें न ईसाइयों से परहेज है और न दूसरों से। उनकी जो उनके प्रति सेवा है वह सुन्दर है, अमूल्य है। वे इन्सान को जान बचाने के लिए तन, मन और धन से सेवा करते हैं चाहे वह किसी भी जाति का हो, चमार हो, भंगी हो या ब्राम्हण हो और किसी भी जाति का हो, कोई भी हो, वे उसकी सेवा करते हैं, वे मानव समाज को समझते हैं। लेकिन हम उनसे घृणा करेंगे, उनको छुएंगे तक नहीं। उनमें जो गुण हैं उनको हमें अपना कर हम सारे भाइयों को सेवा करें, ईसाइयों के बजाय भी अच्छी सेवा करें। हमें उनको घृणा की दृष्टि से नहीं देखना है। वे सेवा कर रहे हैं लेकिन बदले में इन्सान को खरीद लेते हैं, जो गरीब हैं उनके बच्चों को भी खरीद लेते हैं; यह हमारे लिए बड़ी दुख की बात है। जो ईसाईयों ने आज कुछ कहना चाहा था वह इसी दृष्टि से सरकार के सामने लाया हूँ कि आदिवासियों को भविष्य में गलत रास्ते में न जाने दें ताकि वे सच्चा सही धर्म बदल कर ईसाई धर्म में परिवर्तित हो जावें। आदिवासी नहीं चाहते हैं कि वे अपना धर्म परिवर्तन करें। माननीय हरिदेवजी ने बताया, वह सही बात है। आदिवासियों में कई बातें पाई जाती है। आदिवासियों की सारी स्थिति का मुझे अनुभव है और रखता हूँ।

कुशलगढ़ में, मैं आपको बताऊं कि एक हजार बीघा जमीन राव राजा साहब ने, जिस पर चार सौ वर्षों से आदिवासी काश्त करते आ रहे हैं, जिनके पास उसके पट्टे मौजूद थे, उस जमीन को २५ हजार रुपयों में पादरियों को बेच दिया। परसों मैंने इस सम्बन्ध में एक प्रश्न भी रखा था, किसी कारण से उसको टाल दिया गया। आदिवासी भूख के मारे ईसाई होते जा रहे हैं। हमारी सरकार का उस ओर कोई ध्यान नहीं है। रावराजा साहब यहां आये हुए हैं टलाने के लिए, वे चाहते हैं कि यह प्रश्न टल जाय। उन्होंने पट्टे बदल दिये अधिकारियों से मिल कर। २५ हजार रुपये में उस जमीन को बेच दिया हैं। इसलिये मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि इस प्रकार की कार्यवाही हो रही है। आदिवासी अपने जीवन को बचाने के लिए, भूख से मरने के बजाय अपने को बचाने के लिए क्या न करें ? वे अपना धर्म का परिवर्तन नहीं करना चाहते लेकिन वे बाध्य होकर करते हैं। इसको रोकने के लिये सरकार की तरफ से कार्यवाही होनी चाहिये, उन लोगों को न्याय मिलना चाहिये, उनको बिना पैसा न्याय मिलना चाहिए। उनके लिए न्याय बड़ा मंहगा हो जाता है, यदि आदिवासी कोर्ट में जाते हैं तो हजारों रुपया वकीलों को फीस देनी पड़ती है, कहां से लावें, उनके पास कोई सुविधा नहीं। गरीबों के पास कहां इतना पैसा है कि उससे न्याय करा सकें। मैं आपको एक नहीं सैंकड़ों ऐसे केसेज़ बता सकता हूं। अगर इन आदिवासियों को ईसाइयों से बचाना है तो उनके लिए फ्री वकील देना चाहिये और उनकी जो न्यायोचित मांग है वह स्वीकृत होनी चाहिए और उनको बसाने के लिये शीघ्र व्यवस्था होनी चाहिये। जब तक उनको पढ़ाने के लिए उनकी स्वास्थ्य-रक्षा नहीं की जायगी तब तक वे अच्छी तरह से सुखी नहीं हो सकते हैं।

मुझे यही कहना है कि ईसाई धर्म दोषपूर्ण नहीं है। जो ईसा मसीह हो गये हैं उनका सच्चा धर्म यह था कि मानवता के अधिकारों की रक्षा करना। यह जो ईसाई धर्म है वह अमूल्य

[श्री धूलजी भाई]

चीज़ है। महात्मा गांधी ने बताया था कि उनकी सेवा अमूल्य है। लेकिन इसके अन्दर यह बात है कि सेवा के बदले मानवता को खरीद लेना ठीक नहीं है, सेवा के बदले दूसरे धर्म में बदल लेना ठीक नहीं है। धर्म निरपेक्ष राज्य में सब ही की इज्जत है और किसी से विरोध नहीं है यही मुझे कहना था।

श्री मोतीलाल चौधरी—माननीय उपाध्यक्ष,........

श्री उपाध्यक्ष—इस रिजोल्यूशन पर काफी बहस हो चुकी है। १५ सदस्य बोल चुके हैं। क्या सदन यह चाहता है कि यह प्रस्ताव रह जाय ?

(विराम)

मैं क्लोज़र अलाऊ करता हूं।

चीफ मिनिस्टर साहब जवाब देंगे और उसके बाद जो मूवर हैं वे थोड़ा सा कहेंगे।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री)—माननीय उपाध्यक्षजी, जो प्रस्ताव सदन के सम्मुख इस समय विचारार्थ है मैं समझता हूं कि उसी पर सीमित रह कर अगर हम चर्चा करते तो शायद इतना समय सदन का नहीं जाता। और फिर इस प्रकार का प्रस्ताव सदन के सामने आया है एक गलत बात है। इस पर जो चर्चायें हुई मैं समझता हूं उसे बहुत उचित कहा जाय, यह वाजिब नहीं होगा। प्रस्ताव यह था कि धर्म परिवर्तन करने वाली क्रिश्चियन मिशनरी संस्था को विदेशी सहायता बन्द करवाने के लिये भारत सरकार से प्रार्थना की जावे। हमारे देश के विधान में हम धार्मिक स्वतंत्रता पूर्ण रूप से देते हैं; चाहे ईसाई मत के मानने वाले हों संस्था हो, चाहे हिन्दू धर्म को मानने वाली संस्था हो, चाहे किसी भी धर्म को मानने वाली संस्था हो हरेक को यह स्वतंत्रता है कि वह अपने धर्म का प्रचार कर सकते हैं चाहे वे किसी धर्म को स्वीकार करें। जब इस प्रकार का हमारे देश का विधान है तो उसके अन्दर हम विशेष रूप से क्रिश्चियन धर्म के बारे में यह कहें कि इसे जो विदेशी सहायता मिलती है वह देने न दी जाय इसलिये कि वे क्रिश्चियन मत का प्रचार करती हैं, जिसका हमारा सैद्धान्तिक रूप से विरोध है। धर्म का परिवर्तन धर्म का आधार नहीं है। वह क्रिश्चियन धर्म के लिये समान रूप से लागू करने का प्रश्न हमारे सामने आयगा विदेशी सहायता भी एक धर्म विशेष को रोकने के लिये, कोई दूसरे के लिये नहीं; जहां यह डिस्क्रिमीनेशन की बात होती है वहां यह हमारे लिये उचित मालूम नहीं होता।

इसके अलावा मुझे बहस के दौरान में, जिस प्रकार की चर्चायें सुनने को मिली, उन्हें सुन कर दुख हुआ और ऐसा अनुभव हुआ जैसे खास तौर पर क्रिश्चियन धर्म के बारे में प्रचार होता है, उस चीज को नापसन्द करते हैं। उस धर्म की चर्चा के साथ साथ दूसरी चर्चायें भी हमारे सामने आईं।

[श्री मोहनलाल सुखाड़िया]

यह स्पष्ट है कि हम लोग जो देश की नीति है, जहां तक धर्म का प्रश्न है हम किसी के बीच में भेद भाव नहीं करते हैं; उसमें उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता है। एक क्रिश्चियन धर्म के बारे में सब जानते हैं, अच्छी तरह से, जैसी कि अभी चर्चा की गई है, हर भाग के अन्दर अधिकांश व्यक्ति जो रहते हैं वह क्रिश्चियन धर्म के मानने वाले लोग हों। अगर हम अपनी चर्चा इधर उधर की करते हैं, उसका असर किस प्रकार हो सकता है उस पर भी हमें गम्भीरता से विचार करना चाहिये। आखिर धर्म के अन्दर सब प्रकार के व्यक्तियों को समानता का स्थान देने की बातें करते हैं, किसी भी व्यक्ति पर उसके कारण ठेस पहुंचे मैं उचित नहीं मानता। कई प्रकार की प्रक्रिया हो सकती है। उन चीजों पर माननीय सदस्य विचार करें, चर्चा करें, यह वाजिब नहीं होगा। मुझे खुद इन चीजों को सुनकर आश्चर्य हुआ। हम इन सब पहलुओं पर विचार कर रहे हैं या नहीं केवल एक ही पक्ष को लेकर चल रहे हैं। उपाध्यक्ष महोदय, ऐसा लगता था कि सेन्ट जेवियर के बारे में नाराजगी निकालने की बात इस प्रस्ताव द्वारा कहने को मौका मिला सारी बातें कही गई जहां तक सेण्ट जेवियर का सवाल है इस प्रस्ताव से इसका कोई सम्बन्ध नहीं। जो बाते कही गई वे धार्मिक सम्बन्ध से ज्यादा एक राजनैतिक सम्बन्ध की चर्चा है। इसबात का आधार था। उनका सम्बन्ध किसी शिक्षा के साथ हो यह भी बात नहीं। उन्होंने कुछ उदाहरण भी दिया। मैं समझता हूं, उन चीजों की यहां चर्चा करना वाजिब नहीं होगा। इसलिये कुछ ऐसी चीजें हैं जिनकी सबकी जानकारी तो मैंने नहीं की लेकिन कुछ चीजों की मैंने जानकारी की, मुझे वे सही मालूम नहीं हुईं। हम उन चर्चाओं में यहां जायं जिसमें एक पक्ष कुछ बात कहें और दूसरा पक्ष कोई दूसरी बात कहे, यह मैं उचित नहीं समझता। मैं यह बात नहीं कहता कि सब लड़के जो यहां पढ़ते हैं वे योग्य होते हैं, दूसरे अयोग्य। हरेक संस्था के अन्दर सुयोग्य व्यक्ति निकला करते हैं। वे आगे चल कर देश की सेवा कर सकते हैं। ये सारी चीजें हो सकती हैं। मुझे किसी संस्था के विरोध में न कुछ कहना है और न किसी संस्था के पक्ष में दलील देने के लिये खड़ा हुआ हूं। मैं इतना ही कहना चाहता हूं, अगर कहीं राष्ट्र विरोधी कार्य चलता है और उसके काफी प्रमाण हमारे सामने हों तो ऐसे राष्ट्र विरोधी कार्य करने वाली संस्था को न भारत सरकार बरदाश्त कर सकती है और न हमारी सरकार ही, यह हमारी निश्चित नीति है। लेकिन वे सब बातें तथ्यों पर आधारित होनी चाहिये, तथ्यों पर जानकारी हमने की है; मैं माननीय सदस्यों को विश्वास दिलाना चाहता हूं। मैं उनके विस्तार में जाना नहीं चाहता और यह समय भी उचित नहीं समझता कि उनकी चर्चा के अन्दर हम जायें।

इसके साथ साथ यह भी कहा गया कि इस संस्था को सरकारी मदद भी दी जाती है। मैं आपकी सूचना के लिए निवेदन करूं कि राजस्थान के अन्दर मेरे ख्याल से चार पांच साल पहले एक मिनिस्ट्री थी, उस समय यह तय हुआ था कि इस संस्था को तीन लाख रुपये के आस पास रकम भवन निर्माण के लिए दे दी जाय। कुछ रुपया तो उसी वक्त दे दिया गया था और कुछ इन्स्टालमेन्ट जो बाकी था अभी कुछ महीने पूर्व दिया गया। नियमित रूप से कोई ग्रान्ट इन एड दी जाती हो यह बात नहीं जैसी कि दूसरी संस्थाओं को मिलती है सेन्ट जेवियर नहीं लेती। वह तो अपना खर्चा स्वयं अपनी फीस से या दूसरी तरह से चलाती है। सरकार बाकायदा एड देती हो, इस प्रकार की बात नहीं और देश के अन्दर जहां शिक्षा का प्रश्न है, मैं समझता हूँ यह सारी दुनियां के अन्दर

[श्री मोहनलाल सुखाड़िया]

इस बात का अनुभव हुआ है कि पब्लिक इन्स्टीट्यूशन्स जो होती है जिनको प्राइवेट लोग-बाग चलाया करते हैं उन संस्थाओं का शिक्षा-का स्तर सरकारी स्कूलों की अपेक्षा अच्छा गिना जाता है, वहां का शिक्षा का स्तर अच्छा होता है, नित नये परीक्षण किये जाते हैं; खासतौर से प्रजातान्त्रिक देशों में आमतौर से ये बातें मिलती हैं। इसी प्रकार हमारे राजस्थान के अन्दर न केवल सेंट जेवियर बल्कि दूसरी संस्थायें भी ऐसी हैं जिनका पढ़ाई का स्तर काफी अच्छा है। इसी प्रकार की और संस्था में भी इस प्रकार स्टेण्डर्ड बढ़े, इस सम्बन्ध में, सरकार जागरुक है। लेकिन एक संस्था को हम बन्द कर दें या उसके ऊपर सरकार बन्दिश लगा दे, यह वाजिब नहीं होगा। बजाय इसके हम सब मिलकर अच्छी संस्थाओं का निर्माण करें; जिसके अन्दर अधिक से अधिक लोगों को लाभ मिल सके।

अब सवाल यह है कि क्रिश्चियन धर्म के फैलने का डूंगरपुर, बांसवाडा और उदयपुर जिले के और चित्तौड़ जिले के कुछ भाग में जहां अधिकांश लोग रहते हैं, उन लोगों के अन्दर धर्म परिवर्तन की बातें हुई हैं और उन लोगों के धर्म परिवर्तन का मूल कारण जहां तक मैं समझ पाया हूँ वह है आर्थिक कारण। जो वहां के रहने वाले आदिवासी हैं, हम लोग जिन्हें ज्यादा निकट से जानते हैं, हमें पता हैं कि वह इलाका सदियों से पिछड़ा हुआ रखा गया और किसी प्रकार की तरक्की का काम वहां नहीं हुआ, अब धीरे धीरे वहां पर कुछ काम हो रहा है। मुझे अच्छी तरह से याद है जिस वक्त हममें से किसी ने भी इस क्षेत्र में काम करना शुरू नहीं किया उससे पहले मिशनरी ने जाकर उन इलाकों में काम शुरू किया। मुझे याद है जब मैंने अपना सार्वजनिक जीवन शुरू किया उस साल सन् १९३९ के अन्दर मैं इस भील क्षेत्र में गया, वहां पर मैंने देखा मिशनरियों द्वारा स्कूल, अस्पताल और बोर्डिंग हाउस तक मौजूद हैं, वे भी ऐसे जंगलों के बीच में जहां आज भी किसी को जाने को कहें तो जाने को तैयार नहीं होता। वहां पर आवश्यकता इस बात की है कि जो लोग वहां जाना चाहें वे अधिक से अधिक जावें और जो सुविधायें सरकार की तरफ से दी जा सकती हैं वे दें। लेकिन इन चीजों को प्रस्ताव के जरिये फैसला करने की चीजें नहीं। उन पर इस प्रकार के प्रस्तावों के जरिये बन्दिश लगाकर अच्छी चीजों को रोक दें, यह कदापि ठीक नहीं हो सकता। आज हम इस प्रकार का प्रस्ताव पास करके भारत सरकार के पास भेज देते हैं तो वह भी समझेगी और उनको अजीब मालूम होगा कि राजस्थान विधान सभा के सदस्यों द्वारा ऐसा प्रस्ताव पास किया गया। इतने घन्टे इस पर चर्चा कर ली वह बहुत काफी है इस प्रस्ताव को पास करने की बात न सोचें। यह चीजें ऐसी हैं जिसका सम्बन्ध अन्तर्राष्ट्रीय चीजों से रहता है, जिसका सम्बन्ध हमारे देश की मूल नीति से है। प्रस्ताव पास करके हम भेजें कि हमारे यहां यह हो रहा है, उसे उचित नहीं कह सकते। इससे कई गुणा ज्यादा मध्यप्रदेश में और आसाम की पहाड़ियों के अन्दर और मध्यभारत के अन्दर कुछ बम्बई के इलाके के अन्दर इस प्रकार की चीजों का प्रचार और संस्थायें बहुत काम करती हैं, यह शुरूआत तो दक्षिण से हुई है। आज सबसे ज्यादा क्रिश्चियन धर्म के मानने वाले दक्षिण में मिलेंगे ;

ट्रावन्कोर कोचीन में, मद्रास में और कुर्ग के अन्दर । इस तरह से धर्म यह अपनी नीति है, अगर यह समझते हैं कि इससे देश का नुकसान होता है तो इसमें धर्म का कारण नहीं है, पर और कारणों की वजह से है । तो इनको लोगों को समझाने की बात होती है । वह आप समझावें, कुछ काम करें; पर प्रस्ताव के जरिये अपनी मर्यादा से बाहर जाना उचित नहीं होगा । इसलिये मैं अर्ज करूंगा कि जिन्होंने प्रस्ताव पेश किया है, अच्छा तो यह हो कि वे स्वयं इसे वापिस ले लें बजाय इसके कि इस चीज पर हमारे यहां पर मतदान का प्रश्न भी खड़ा हो ।

श्री जगतसिंह झाला—माननीय उपाध्यक्ष जी, मेरे प्रस्ताव पर काफी बहस हुई और इस पर माननीय मुख्य मंत्री जी ने भी काफी गम्भीरता से फरमाया । मेरा तात्पर्य तो यह था कि इस ओर राजस्थान की सरकार की उपेक्षा वृत्ति है और इसलिये यहां अराष्ट्रीय तत्व फैलते जा रहे हैं । कोई क्रिश्चियन के नाम से दुर्भावनाएं हैं, ऐसी बात नहीं है । हम यह चाहते हैं कि जहां गांधी और नेहरू की निन्दा होती हो, जहां उनके चित्र हटाये जाते हों, जहां राष्ट्रीय झण्डे का अपमान होता हो और ये जो अराष्ट्रीय भावनाएं हमारे भावी राष्ट्र के कर्णधार रूप बच्चों के मन में घर करती जावें, उनके मनों में ये बातें बिठाई जाती हों तो यह भयानक खतरे की बात है और इस खतरे का निराकरण अवश्य किया जाना चाहिये । डूंगरपुर बांसवाड़ा से आने वाले मेरे मित्र ने कहा है कि वहां पर मिशनरी अपना धर्म प्रचार करते हैं और माननीय मुख्यमंत्री जी ने भी इस बात को स्वीकार किया; तो मैं भी मानता हूँ कि इसकी हमारे संविधान में भी छूट है । वे अपना धर्म प्रचार करना चाहें तो शौक से कर सकते हैं इससे हमें वास्ता नहीं, पर इसका यह मतलब तो नहीं कि गरीबी और अशिक्षा का नाजायज फायदा उठा कर वे अपना उल्लू सीधा करें और हमें निरे इसी सूरत से विवश करें, चूंकि हम अशिक्षित हैं, गरीब हैं और इसीलिये धर्म परिवर्तन करें । अगर ऐसी बात होगी तो निश्चित रूप से मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि यह देश के लिए अच्छी बात नहीं होगी और इसके दुष्परिणाम बड़े दूरगामी होंगे । बस इतना ही कहकर मैं सदन का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं । मैं मानता हूं कि कांग्रेस की ओर से इस पर व्हिप इश्यू हो गया है कि मेरे प्रस्ताव का वे समर्थन न करें । पर स्थिति जो है उसमें निवेदन करना चाहता हूं कि प्रश्न इसको वापिस लेने का अब नहीं है । मैं इसको प्रेस करता हूं । हार जावेंगे क्योंकि हमारा बहुमत नहीं है इस समय । तो इसकी चिंता नहीं । कभी हार सकते हैं कभी जीत सकते हैं, कभी हमारा भी बहुमत हो सकता है । यही मेरी तरफ से निवेदन है ।

श्री उपाध्यक्ष—प्रश्न यह है कि....

श्री गोपीलाल यादव—वे वापस ले रहे हैं साहब ।

श्री जगतसिंह—नहीं साहब, मैं इतना फिर निवेदन करना चाहता हूं कि अगर वे इसके लिए कोई जांच कमीशन बिठाना चाहते हों और इसके लिए तैयार हों तो मैं अपना प्रस्ताव वापिस लेने को तैयार हूं ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया—मैं अब भी कमीशन-वमीशन की बात को मानने को तैयार नहीं हूं।

श्री उपाध्यक्ष—क्या आप विदड्रा करना चाहते हैं ?

श्री जगतसिंह—नहीं साहब, मैं तो करना नहीं चाहता।

श्री उपाध्यक्ष—प्रश्न यह है कि जो संकल्प श्री जगतसिंह झाला ने प्रस्तुत किया है वह स्वीकार किया जावे।

(अस्वीकृत)

संकल्प अस्वीकृत हुआ।

(विराम)

नेक्स्ट, श्री एच० के० व्यास।

कम वेतन भोगी कर्मचारियों के वेतन व ग्रेड्स उचित करने के लिये एक आयोग की स्थापना करने सम्बन्धी संकल्प

श्री खेतसिंह—साहब, समय कम रह गया है और मामला चूंकि अहम है और काफी समय लेगा इसलिये फिर ले लिया जावे कल, तो ठीक रहेगा।

श्री हरिकृष्ण व्यास—उपाध्यक्ष महोदय...

श्री खेतसिंह—उपाध्यक्ष महोदय अब हमें छुट्टी दे रहे हैं।

श्री हरिकृष्ण व्यास—यदि माननीय मुख्य मंत्री जी को या उनके बाद दूसरे वित्त मंत्री महोदय को मेरे प्रस्ताव प्रस्तुत करने से या मेरा प्रस्ताव प्रस्तुत होने वाला है इस बात से कुछ थोड़ी सा अनकम्फर्टेबल फील होता तो समझ में भी आ जाता, क्योंकि इसका बजट से सम्बन्ध है। लेकिन मेरे माननीय मित्र शेरगढ़ से आये हुए सदस्य को न मालूम कभी-कभी क्या....

श्री खेतसिंह—मैं तो यह कह रहा था कि यह अहमियत का सब्जेक्ट है। कल लेंगे तो गम्भीरता से विचार करेंगे। अभी पन्द्रह बीस मिनट में क्या विचार होगा ?

श्री हरिकृष्ण व्यास—तो शेरगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य को कभी कभी इतना जोश आ जाता है कि 'मुद्दई सुस्त गवाह चुश्त' वाली बात होती है। मेरा खयाल है कि इससे चान्सेज़ इम्प्रूव नहीं होते, पर यह उनकी मरजी की बात है।

[श्री हरिकृष्ण व्यास]

प्रश्न यह है उपाध्यक्ष महोदय कि यह अगर महत्व का सवाल है और इस पर बहुत गम्भीरता और संजीदगी से विचार करने के बारे में वे तैयार हैं तो माननीय शेरगढ़ से आने वाले सदस्य को शायद यह नहीं मालूम है कि यहां तो उन्हें इसका विरोध करना है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, व्हिप उनके पास भी पहुंचा है, वह व्हिप की सूचना आम हो चुकी है।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री)—उपाध्यक्ष महोदय, कॉपिया प्राप्त करने में ये एक्सपर्ट मालूम होते हैं।

श्री हरिकृष्ण व्यास—मतलब की कॉपियां प्राप्त करने में एक्सपर्ट होना ही चाहिये। लेकिन इसकी गम्भीरता हमारे और आपके सामने बातें करने की दृष्टि से जो दीखती हैं उससे कहीं ज्यादा उन इन्सानों की ओर, उनके परिवारों की ओर, उनके बाल-बच्चों की जीवन की दृष्टि से गम्भीर हैं, कि जिनके लिए मैंने यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया है।

कुछ दिनों पहले हमने राज्य पुनर्गठन आयोग की रिपोर्ट पर विचार किया और उस दिन जिक्र आया इस बात का कि अजमेर और अजमेर के सरकारी मुलाजिम भी सब लोग राजस्थान के अंग होने वाले हैं, उन्हें माननीय मुख्य मन्त्री महोदय ने कुछ आश्वासन भी दिये थे और ठीक बात थी वह। लेकिन उससे कहीं ज्यादा आश्वासन के भूखे राजस्थान राज्य के वे मुलाजिम हैं कि जिनके लिए न तो दौड़-धूप की जाती है, जिनके लिए न तो बार बार सीनियोरिटी कमेटियां मुकर्रर होती हैं, और जिनकी न कोई मन्त्री मण्डल के सिलसिले में खींचातानी की स्थिति पैदा होती है। आर. ए. एस, आई. ए. अस. हैं, आई. पी. एस. हैं ऐसे कुछ वैसे मुलाजिम हैं जिनका जिक्र करना न आवश्यक है और न मैं समझता हूं कि वे किसी के जिक्र के लिये न कुछ रखते हैं बचाकर! वे अपना जिक्र खुद कर लेते हैं और खींच तान करके, रिप्रेजेन्टेशन करके अपना काम कुछ न कुछ कर ही लेते हैं। यहां तक भी सही है कि अभी अभी उनके रिवीजन ऑफ ग्रेड की बात भी शुरु हो गई बताते हैं। कुछ टैक्निकल स्टाफ, कुछ और दूसरे लोगों के कागजात तक भी गवर्नमेन्ट प्रेस तक भी पहुंच गये, ऐसी भी बात इधर उधर से सुनने में आई है। यह रिविजन की बात सुनते ही ध्यान में आया कि ये ग्रेड किसके रिवाइज किये जा रहे हैं और पहले मेरे विचार में यह बात आयी; इस विचारे स्कूल के मास्टर की तरक्की की बात, जो शायद दूर गांव में रहता है और एक क्रिश्चियन मिशनरी का जील के बारे में अपने दिमाग में भावना आई, ठीक ही आनी चाहिये, लेकिन मैं तो समझता हूँ और मैं यह निश्चित् कह सकता हूं कि प्राइमरी स्कूल का वह अध्यापक कि जो पचास रुपया भी उसकी तनखा महंगाई का मिलाकर कुल आप उसको देते हैं और आठ, दस, बारह और पन्द्रह-पन्द्रह सालों से लगातार अपना अध्यापक का काम करता जाता है वह और उसका परिवार और उसके बालबच्चे सहित और किसी छोटे गांव में अपनी जिन्दगी बिता रहा है और आज भी वही कार्य करता जा रहा है, उसका जील, उसका एक नेकनीयती का बरताव, उसकी देश के और अपने कर्त्तव्य के प्रति

[श्री हरिकृष्ण व्यास]

जिम्मेदारी का रुख एक बड़ी मिसाल बन जानी चाहिये। पर उस आदमी के प्रति किसी का ध्यान नहीं। हजारों की तादाद में ऐसे बेचारे गरीब शिक्षक हैं।

हजारों की तादाद में ऐसे प्राइमरी और मिडल स्कूलस् के ऐसे मास्टर है। आज आप जिक्र तो करते हैं अजमेर के और राजस्थान के एकीकरण का, लेकिन इन्हीं कुछ चन्द मीलों के बीच में इन शिक्षकों की तनख्वाह का स्तर जहां ५०) रु० के कुल इमोल्युमेन्ट्स राजस्थान में हम दे पा रहे हैं मिडिल पास एक प्राइमरी स्कूल के टीचर को, वहां पर अजमेर में कम से कम १२० रुपये पर शिक्षक आज पहुंच गया है। उसे भी शायद काफी नहीं माना जा सकता है, लेकिन और काफी नहीं माना जाता है तो भी कम से कम उस हद तक इस मुलाजिम को ला पायें, इसके लिये सबसे पहले प्रयत्न सरकार को करना चाहिये।

जहां सैंकड़ों की तादाद में, हजारों की तादाद में राजस्थान राज्य के क्लास फोर्थ सर्वेन्ट्स हैं, चपरासी हैं, चौकीदार हैं, ऐसे मुलाजिम हैं कि जिनकी भी वैसी ही हालत है। ४० रु०, ४५ रु० और ४८ रु० की सीमा पहुंच गई है उनकी। क्या सरकार या माननीय मुख्य मंत्री महोदय ने कभी इस बात पर भी ध्यान दिया है कि लिविंग वेज स्टेन्डर्ड जिसको कि आप मानते हैं; भारत के अच्छे से अच्छे विशेषज्ञ, डा० आक्रायट, ने जो बेलेन्स्ड डाइट मुकर्रर की है चाहें तो उसको आप स्टेन्डर्ड मान लो, चाहे राजस्थान की सरकार ने जेल मेन्युकल के अन्दर कैदियों के लिए जो डाइट मुकर्रर की है चाहे उसको स्टेन्डर्ड मान लो, चाहे आपने अस्पताल के अन्दर मरीजों के लिये हाल में डाइट का स्टेन्डर्ड सेन्क्शन किया है उसे स्टेन्डर्ज मान लो, कम से कम २६०० केलोरीज़ और २४०० केलोरीज़ का स्टेन्डर्ड यदि आप मान लो, जब कि डा० आक्रायट ने २८०० केलोरीज़ का स्टेन्डर्ड माना है; तो भी मैंने उसका हिसाब लगाया है कि ५ व्यक्तियों के परिवार के लिए, छोटी से छोटी युनिट के, केवल खाना खाने के लिए, डा० आक्रायट के स्टेन्डर्ड के हिसाब से अगर आप चलो तो उस परिवार के लिए केवल खाना खाने के लिए ५५ रु० के खर्चे का हिसाब आता है, ५४ रु० और कुछ आने। यह स्थिति है। केवल खाने भर में जो स्टेन्डर्ड अपने तीन-चार जगह मुकर्रर कर दिया हैं यह गणित का हिसाब लगा लिया जाय, अगर नहीं लगाया है तो लेबर डिपार्टमेंट के अन्दर जो फेमिली बजट एन्क्वायरी करने वाले सज्जन लोग हैं उनसे कह दिया जाय कि वे हिसाब लगायें और एक लिविंग वेज स्टेन्डर्ड तो निकाला जाय। फिर कपड़ा है, बच्चों की शिक्षा का खर्च है, मकान है, दवादारू है, आखिर कैसे यह कोई अन्दाज करके चले कि जो हम एक जीवन-स्तर को, इन्सान के तौर के स्तर को, बनाना चाहते हैं वह संभव हो सकेगा इन क्लास फोर्थ सरवेन्ट्स, छोटी तनख्वाह पाने वाले मुलाजिमों के लिये ४०, ४५ और ४८ रु० में।

यही हालत उन अहलकारों की है। यही हालत उन मुलाजिमों की है जो मुलाजिम किसी न किसी रूप में मिनीस्ट्रियल सरविस में गिने जाते हैं। दुनिया को मालूम तो यह है कि बड़े बड़े

[श्री हरिकृष्ण व्यास]

मन्त्रियों के जो पी० ए० या जो स्टाफ होता है शायद उनके बारे में कुछ लोगों की ऐसी कल्पना होगी कि इतने बड़े बड़े आदमियों के नजदीक रहने वालों की कोई खास स्थिति है। लेकिन मेरा ख्याल है कि रेफरेन्डम किया जाय और काम के घन्टे तय हो जांय कम से कम और ज्यादे से ज्यादा। दोनों नहीं करते हैं तो मेग्ज़ीमम तो तय कर लिया जाय कि आठ घन्टे से ज्यादा काम उनसे नहीं लिया जाय। ऐसे काम के घन्टे तय करने की नौबत आयेगी तो सबसे ज्यादा ताकतवर मत इन लोगों का पड़ेगा कि जिन लोगों के काम के घन्टे की गिनती नहीं। इनकी ही बात नहीं है, वैसे मैं विधान सभा का जिक्र करूं तो मेरे ख्याल से यही हालत है उन लोगों की भी। जहां तक मिनिस्ट्रियल स्टाफ का सवाल है उन लोगों पर भी यह चीज लागू होती है। हम और आप देखते हैं। (किसी माननीय सदस्य द्वारा स्टाफ की ओर इशारा करने पर) उनकी तरफ इशारा करने से क्या फायदा। यह उनसे कहने का काम नहीं है, हमारे सोचने का काम है। प्रश्न यह है कि आप एक नये समाज की तैयारी में लगे हुए हैं। यहीं पर ही नहीं दूसरे सेक्रेटेरियेट में भी जायं, कहीं भी जांय, अस्पताल में जांय तो अस्पताल में कम्पाउन्डर्स को देख लिया जाय। काम के घन्टे तय किये बगैर इन्सान के लिए नामुमकिन है कि वह किसी काम को पूरा कर पाये; अपनी सेहत का ध्यान रख पाये, दूसरे कागजों को पढ़ पाये। रात के वक्त १२ घन्टे की आप ड्यूटी दे देंवे किसी एक कम्पाउन्डर को तो निश्चित तौर पर अपनी ड्यूटी ठीक से अन्जाम नहीं कर सकता है जो कि उसे करना चाहिये लेकिन राजस्थान के कौने कौने में घूम लिया जाय, चाहे वह शिक्षक हो, क्लास फोर्थ के चपरासी या चौकीदार हों, चाहे वह मिनिस्ट्रियल लोग हों, चाहे वह ऐसे लोग हों जो स्पेशल किस्म का काम करते हो; मैंने कम्पाउन्डर्स का जिक्र अभी आपके सामने किया है कि जिनके काम के घन्टे तय नहीं किये गये हैं, तनख्वाहों के स्केल बहुत दिन पहले तय हो गये लेकिन उनकी ऐसी अजीब स्थिति है कि तीन साल से यह मामला चल रहा है। मैं नहीं समझा कि क्यों नहीं हो रहा है? दुनिया में जितनी भी टेक्निकल क्वालिफिकेशन्स हैं उन सब टेक्निकल क्वालिफिकेशन्स के लिए एक स्कूल में भरती होने वालों के लिए क्या चाहिए, यह प्रेस्क्राइब होता है। एम० बी० बी० एस० के लिए इन्टर साइंस चाहिए, तभी भर्ती करेंगे। एल० एम० पी० के लिए मैट्रीक्यूलेट होगा तभी भर्ती करेंगे। टेक्निकल ज्ञान के उपार्जन के लिए एकेडेमिक क्वालिफिकेशन क्या हो वह इन्स्टीट्यूट तय करती है। नर्सिंग के काम के लिए कोई मैट्रीक्यूलेट की क्वालिफिकेशन मुकर्रर नहीं करती हैं। वह इन्स्टीट्यूट में भाग ले सकता है, ट्रेनिंग पा सकता है और नर्सिंग का डिप्लोमा मिलता है। लेकिन हिन्दुस्तान भर में राजस्थान ही एक ऐसा है जो कहता है कि नर्सिंग का डिप्लोमा तो तुमने ले लिया मगर मैट्रिक का सार्टीफिकेट और ले लो, तुम्हें ग्रेड ए मिलेगी वर्ना नहीं मिलेगी। किसी इन्जीनियर से कहा जाय कि इन्जीनियरिंग का डिप्लोमा तो तुम ले आये, लेकिन बी० टी० की डिग्री और लो, बेचलर आफ टीचिंग की डिग्री और लाओ नहीं तो इन्जीनियर्स का फर्स्ट ग्रेड नहीं मिलेगा। सारी टेक्निकल ग्रेड्स के अन्दर यह लागू होगा चाहे वह बिजलीघर हो, चाहे वह गवर्नमेंट प्रेस हो। मैं बहुत जिम्मेदारी से कहता हूं, उपाध्यक्ष महोदय, कि अपना मुकाबला किया जाय मध्यप्रदेश से। वहां से तुलना कर ली जाय। मैंने तुलना की है। मध्यप्रदेश के अन्दर गवर्नमेंट

[श्री हरिकृष्ण व्यास]

प्रेस के अन्दर जितने भी मुलाजिम हैं चाहें, वे प्रिन्टर्स हों या रीडिंग ब्रान्च में काम करने वाले हों। हमारे यहां एल. डी. सी की ग्रेड रीडिंग ब्रान्च के प्रूफ करेक्टर्स की दी है जिनकी तनख्वाह का जहां तक सवाल है करीब २ पौने दो गुना फर्क है मध्यप्रदेश और राजस्थान में और करीब २ डेढ़ गुना प्रिन्टर्स में मध्यप्रदेश और राजस्थान में है।

सब जितने भी सरकारी मुलाजिम हैं, उनकी भी आज यह स्थिति है कि दूसरे राज्यों के मुकाबले में राजस्थान के पे स्केल्स और मंहगाई भत्ता कम है। यदि जीवन मान के स्तर का हिसाब लगाना चाहें तो भारत सरकार के विशेषज्ञों का, राजा केमेटी की रिपोर्ट का हवाला ले लें। उससे पहले १९४० में राऊ कमेटी की रिपोर्ट का हवाला ले लें, दोनों से समाधान नहीं होता है तो भारत सरकार द्वारा मुकर्रर सेन्ट्रल पे कमीशन ने इस बारे में उल्लेख किया है, उसका हवाला लेलें। राजा कमेटी से लगाकर एन. वी. गाडगिल कमेटी तक और सी. एम. वकील से लगाकर दिल्ली स्कूल आफ इकोनोमिक्स के विशेषज्ञ, किन्हीं की आप राय ले लें, जीवन स्तर का कहता हूं तो जीवन स्तर को कहीं नीचे इसमें ये अपने खुद के मुलाजिमों को लाकर रखा है राजस्थान राज्य ने।

जो कि एक सोशलिस्ट पेटर्न आॅफ सोसाइटी की रोज चर्चा होती है कि समाजवादी ढांचे के निर्माण के लिए हमें अग्रसर होना चाहिए, आगे बढ़ना चाहिए; इसका बार बार उल्लेख भी होता है। मैं ऐसा नहीं कहता कि इस सिलसिले में अगर कोई ठीक किस्म का कार्य है तो बगैर ताकत के पूरा कार्य हो सकता है। तो उसमें ताकत लगानी चाहिए, पूरी ताकत लगानी चाहिए। लेकिन समाजवादी ढांचे के बारे में हमारी कल्पना है वह निरी थोथी कल्पना नहीं है। तो आप जिस समाजवाद की कल्पना करते हैं कि उत्पादन के साधनों पर समाज का अधिकार होना चाहिए, वह तो एक दूर की बात रही कम से कम एम्प्लॉयर के तौर पर, मालिक के तौर पर, दूसरे को नौकर रखकर तन्ख्वाह देने वाले एक स्वामी के तौर पर, यदि दूसरे एम्प्लॉयर्स की स्थिति को कल आप सुधारने चलते हैं तो उसके पहले राजस्थान सरकार खुद जहां एक एम्पलोयर है वह एक मोडल एम्पलोयर का काम तो करे। एक ठीक किस्म के मुल्क का ऐसा काम करें कि जिसकी मिसाल चारों और फैल जाय, जिसकी मिसाल से और दूसरों पर दबाव पड़े। पर आज तो यह है माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कि मिसाल के स्थान पर सब से पीछे रह रहे हैं। आप राजस्थान सरकार द्वारा दिये जाने वाले मंहगाई भत्ते को देखिये और टेक्सटाइल मिल्स में दिये जाने वाले मंहगाई भत्ते को देखिये। टेक्सटाइल मिल हैं उनमें ज्यादा मंहगाई भत्ता मिल रहा है राजस्थान सरकार के मंहगाई भत्ते के मुकाबिले में। हिसाब लगाया जाय तो बम्बई अहमदाबाद में ९० प्रतिशत न्यूट्रेलाइजेशन का फैसला सरकार ने दिया है, मध्यभारत में ६०, ६५ परसेंट न्यूट्रेलाइजेशन का फैसला दिया है। भूतपूर्व राजस्थान में आज के हमारे मुख्य मंत्री श्रम मंत्री थे, उन्होंने खुद ने फैसला दिया है जो सुखाडिया एवार्ड के नाम से मशहूर है। शायद वे अब भूल गये हों। सुखाड़िया एवार्ड पर दस्तखत किये हुए कागजों को देखें। मेरे ख्याल

[श्री हरिकृष्ण व्यास]

से शायद ४६ की बात है, २८ परसेंट का सिद्धान्त टेक्सटाइल में लागू करने के दस्तखत अपने हाथों से किये थे। राजस्थान में २३ परसेंट न्यूट्रेलाइजेशन मंहगाई का रखा है तो उससे तो बहतर मिसाल राजस्थान राज्य में पेश करनी चाहिये। आज मंहगाई का जो स्तर है उससे २५ परसेंट भी न्यूट्रेलाइज नहीं करना, आधे से भी कम, १।३ से भी कम पहुँचता है। खाने पीने में ५४ रुपया खर्च हो जाता है तो ऐसी स्थिति में क्या आप आशा कर सकते हैं कि आपके मुलाजिम, उनके बच्चे, उनसे सहानुभूति रखने वाले लोग यह मानेंगे कि हम साम्यवादी व्यवस्था की राह की ओर जा रहे हैं। मैं नहीं समझता कि यह कोई पार्टी का प्रश्न है, मैं इसे मानता हूं उन सरकारी मुलाजिमों के दिलों में संतोष पैदा करने का प्रश्न, उनके बाल बच्चों के भरण पोषण का प्रश्न कि उनके भरण पोषण के लिये उनको शाम के वक्त की फिक्र न हो। यह कोई पार्टी का प्रश्न नहीं, यह मानवता का प्रश्न है, ठीक तरह से कार्य करने का प्रश्न है। इसलिये मुझे यह आशा है कि चाहे वहां व्हिप कुछ भी हो पर इस प्रश्न की गंभीरता को, इसके महत्व को ध्यान में रखते हुए मुख्य मंत्री, उस तरफ बैठने वाले और इस तरफ बैठने वाले न सिर्फ इस पर विचार करेंगे बल्कि इसे एक राय से पास करेंगे।। मध्यभारत जैसे राज्य में, कहना तो नहीं चाहिये पर मध्य भारत और राजस्थान की तुलना करें तो राजस्थान उससे पीछे गिना जाय, ऐसी बात नहीं है। मध्यभारत हमारे यहां से ज्यादा डेफिसिट है। मध्यभारत में इसकी जांच के लिये एक पे कमेटी बैठाई है। जिस प्रकार से दो साल से वहां के फाइनेन्स मिनिस्टर ने बजट की नीति में परिवर्तन किया है उसके कारण भले ही नीति बदली हो पर १९५१ के कम्पेरिज़ में ज्यादा गिरी नहीं थी। मध्यभारत पे कमेटी मुकर्रर कर सकता है। आज उन्होंने अपने बजट को इस तरह से खर्च करने की सोची है कि बड़ी बड़ी तनख्वाह पाने वालों को न दे सकें तो नहीं सही, न दिया जाय, उनका परमानेन्ट कन्ट्रीब्यूशन फाइव ईयर प्लान के लिये लेना हो तो ले लें पर जो निम्न स्तर के लोग हैं, जो राजस्थान में हजारों की संख्या में हैं उनके लिये पे कमेटी की नियुक्ति की जाय और वह कमेटी जांच करे कि उनके भरण-पोषण के लिये क्या दिया जाय।

आज चार पांच साल से सेवाओं के इन्टीग्रेशन के नाम से इन्टीग्रेशन का काम चल रहा है जिसमें कि इन्टीग्रेशन का केवल एक अंग है, हमें उस गरीब के घर के बीच में और उसको जो तनख्वाह मिलती है उसके बीच उसके बजट का इन्टीग्रेशन करना है, और यही वास्तविक इन्टेग्रेशन होगा। यह नहीं कर सके तो यह सब कुछ काल्पनिक होगा।

पूरी शक्ति और ताकत लगाकर इस कार्य को पहला कार्य मान कर आगे बढ़ेंगे, इस आशा के साथ मैं यह प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं। जिस प्रकार मध्यभारत में पे कमेटी बिठाई गई है उसी प्रकार पे कमेटी बैठाई जाय, जो राज्य कर्मचारियों की तनख्वाह बढ़ाने, उनका मंहगाई भत्ता बढ़ाने की सरकार को सिफारिश करे। कम से कम उस पे कमेटी की सिफारिशों को सरकार को

[श्री हरिकृष्ण व्यास]

मानना चाहिये और एक मत से उसे पास करना चाहिये। तभी हम कह सकते हैं कि हम समाजवादी व्यवस्था की राह पर अग्रसर हो रहे हैं, नहीं तो उन गरीब लोगों के साथ भयंकर अन्याय होगा।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं यह प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं और आशा करता हूं कि इस प्रस्ताव को एक राय से पास कर लिया जायगा।

श्री संतोषसिंह कछवाहा—समय हो गया है साहब।

श्री मोहनलाल सुखाडिया—कल फिर लेंगे या मैं कुछ कह दूं ?

श्री उपाध्यक्ष—कल समय मिलेगा तो ले लेंगे।

श्री हरिकृष्ण व्यास—इस प्रश्न पर लीडर ऑफ दी हाउस को चाहिये कि समय देकर गंभीरता-पूर्वक विचार किया जाय।

श्री मोहनलाल सुखाडिया—इस प्रश्न पर पहले से ही विचार हो रहा है, यह कोई नई बात नहीं रखी गई है। केवल भ्रम दूर करने की बात जरुर है, वरना पहले से ही टीचर्स, कर्ल्क्स, क्लास फौर्थ सर्वेन्ट्स की पे के लिये विचार किया जा रहा है।

श्री उपाध्यक्ष—तो कल इस पर उत्तर सुनकर ही निर्णय हो जायगा या और बहस होगी ?

श्री हरिकृष्ण व्यास—अग्रेतर बहस रखें।

श्री उपाध्यक्ष—क्या इस पर अग्रेतर बहस होगी ?

श्री मोहनलाल सुखाडिया—लेजिस्लेशन के बाद टाइम बचा तो।

श्री उपाध्यक्ष—सदन की कार्यवाही स्थगित की जाती है कल प्रातःकाल पौने नौ बजे तक के लिये।

(सदन की कार्यवाही १२. ३५ बजे मध्याह्नोत्तर पर दिनांक १६ दिसम्बर, १९५५ के प्रातः पौने नौ बजे तक के लिये स्थगित हुई)

विधान सभा भवन,
जयपुर,
दिनांक-१५ दिसम्बर, १९५५।

मनसाराम पुरोहित
सचिव,
राजस्थान विधान सभा।

परिशिष्ट १

(तारांकित प्रश्नोत्तर जो कि सम्बन्धित प्रश्नकर्ता की अनुपस्थिति के कारण सदन की मेज पर रखे गये तथा जिनके प्रकाशित कराने की सम्बन्धित मन्त्री महोदय की अनुमति है ।)

प्रश्न

१८७ (१५/एफ. एम.) श्री संग्रामसिंह, एम. एल. ए. डिवीजन नम्बर १३४— क्या वन मन्त्री निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे:—

(क) सेठ माता और बसी का जंगल जो तहसील देवगढ़ में है कितने में नीलाम हुए ?

(ख) ठेका किस ठेकेदार को दिया गया ?

(ग) ठेके की रकम कितनी जमा हुई और कितनी बकाया है ? बकाया रकम किस वजह से जमा नहीं हुई है ?

उत्तर

(क) तहसील देवगढ़ में सेठ माता नामक कोई जंगल नहीं है। हां, अलबत्ता सांड माता नामक जंगल है, वह ६१०० रुपये में एवं बस्सी का जंगल २२००, में नीलाम हुए।

(ख) सांड माता का ठेका सर्व श्री नत्थूमल दौलतराम एवं बस्सी का ठेका श्री गुलाब मुस्तफा के नाम हुआ।

(ग) दोनों ठेकों की चोथान रकम नीलाम पर ही वसूल कर ली गई। बकाया रकम किश्तों से वसूल होगी।

परिशिष्ट २

(कृपया प्रश्न संख्या १७५ का उत्तर देखिये)

तालिका जिन किसानों की रकम किशनगढ़ सब डिविजन में कम्प्रेशर के किराये की बाबत जमा है ।

नाम कृषक	गांव	रकम	जमा कराने का महीना
१. श्री बालचन्द डागा	बालपुरा	१०५० रु०	नवम्बर ५१
२. श्री मेघराज	बादा सिदरी	२७५०	नवम्बर ५१
३. श्री गजानन्द	बालापुरा	१८००	दिसम्बर ५१
४. श्री भैंरू	बादा सिदरी	३२६०	फरवरी ५२
५. श्री बालू	,,	१५०	,,
६. श्री मेवा	,,	१५०	,,
७. श्री भांजीलाल	,,	३००	,,
८. श्री रेल्वे वैल	किशनगढ़	४००	मई ५२
९. श्री महाराज मिल्स	,,	८००	,,
१०. श्री कस्तूरा	,,	१५०	,,
११. श्री कल्याणा	,,	१५०	,,
१२. श्री मनोहरलाल	,,	२००	,,
१३. श्री कालूराम	,,	१८०	,,
१४. श्री अन्न सेत्र	,,	३००	,,
१५. श्री शिव रतन	,,	३००	,,
१६. श्री मदनेश गौशाला	,,	३००	,,

परिशिष्ट ३

(कृपया प्रश्न संख्या १७७ का उत्तर देखिये)

लिस्ट उन इन्सपेक्टरों की जिनको ट्रेनिंग में भेजने के लिये आदेश दिये गये।

कोऑपरेटिव ट्रेनिंग स्कूल बूंदी

क्रम संख्या	नाम	सिनियेरिटी नं०		रिमार्कस्
१.	श्री. फूलसिंह	सहकारी विभाग	३	
२.	श्री श्यामसुन्दर भार्गव	,,	५	
३.	श्री रमनभाई शुक्ला	,,	६	
४.	श्री गनपतलाल	,,	१६	
५.	श्री मोतीलाल	,,	२१	
६.	श्री आद्दूदान चौधरी	,,	२४	
७.	श्री कन्हैयालाल शर्मा	,,	२६	
८.	श्री सुशील कुमार गुप्ता	,,	२९	
९.	श्री बृजकिशोर श्री वास्तव	,,	३०	
१०	श्री. रनवीरसिंह	,,	३३	
११	श्री. विजयसिंह	,,	३४	
१२	श्री. जनकसिंह	,,	३५	
१३.	श्री धर्मनारायण त्रिवेदी	ग्राम सुधार विभाग	५	
१४.	श्री सूरजनारायण	,,	६	
१५.	श्री भख्तावरसिंह	,,	७	
१६.	श्री अनूपसिंह	,,	१०	
१७.	श्री रामसिंह खीची	,,	१५	
१८.	श्री बंशीदास	सहकारी विभाग		) परिक्षयमाण (Probationer) इन्स-
१९.	श्री देवीशंकर तिवारी	,,		) पैक्टर ग्राम सुधार विभाग; सिनीयरिटी
२०.	श्री रामसिंह रानावत	,,		) लिस्ट अभी नहीं बनी है।
२१.	श्री कन्हैयालाल	ग्राम सुधार विभाग		)

१	२	३	८

ब्लॉक डवलपमैंट ऑफीसर ट्रेनिंग सैन्टर कोटा ।

१. श्री लक्ष्मीनारायण श्री वास्तव	
२. श्री गुलाबसिंह	इनका स्थानान्तर दूसरे महकमे में
३. श्री राधेश्याम वर्मा	हो गया है ।
४. श्री शंभूदयाल गुप्ता	
५. श्री नाथूराम मीना	
६. श्री शिवकरण पथिक	
७. श्री दुर्गालाल माथुर	
८. श्री गौरीशंकर माथुर	
९. श्री ओमप्रकाश शर्मा	
१०. श्री रामचन्द्र श्री वास्तव	इनका सिलेक्शन भी बाद में हुआ
११. श्री रामनारायण उपाध्याय	,,
१२. श्री मुरलीधार पारीक	ग्राम सुधार लिस्ट में ।

रीजनल कोर्स ट्रेनिंग स्कूल, इन्दौर

(रिजर्व बैंक आफ इण्डिया की संरक्षण में)

१. श्री गोविन्दनारायण शर्मा	
२. श्री नन्दलाल भटनागर	
३. श्री शतीशचन्द्र माथुर	
४. श्री रामस्वरूपसिंह	कॉप० इन्सपेक्टरों को प्रोबेशनरी लिस्ट में नाम सीनियोरिटी माफिक नहीं थे ।

परिशिष्ट ४

(कृपया प्रश्न संख्या १८३ का उत्तर देखिये)

चित्तौड़ जिले में सहकारी समितियों के नाम तहसीलवार

(१) तहसील छोटी सादड़ी

१. हनूतिया कुंडाल कृषि क्रैडिट सहकारी समिति	छोटी सादड़ी
२. छोटी सादड़ी यादव बहुधन्धी सहकारी समिति	,,
३. ,, चर्म उद्योग उत्पादक ,,	,,
४. चर्म व ऊन उत्पादक सहकारी समिति	,,
५. ग्रामोद्योग सहकारी समिति	,,

(२) तहसील प्रतापगढ

१. वस्त्र उत्पादक सहकारी समिति लि०,	प्रतापगढ
२. खैरोट बहुधंधी सहकारी समिति	खैरोट
३. श्री यादव निर्माण ,, ,, लि०,	प्रतापगढ
४. गांधी बहुधंधी ,, ,,	अमलावाद
५. कुलमीपुरा ,, ,,	कुलमीपुरा
६. अम्बामाता ,, ,,	अम्बामाता
७. धनगर कमरिया बहुधंधी,,	प्रतापगढ
८. प्रतापगढ मोचियान चर्म उद्योग समिति	प्रतापगढ
९. बामोतरा बहुधंधी सहकारी समिति	बामोतरा
१०. सिद्धपुरा ,, ,,	सिद्धपुरा
११. खैतोड़ी ,, ,,	खैतोड़ी

(३) तहसील बेंगू

१. ठुकराई कृषि केडिट सहकारी समिति (ठुकराई)	ठुकराई
२. आवंल हैडा ,, ,,	आवंलहैड़ा
३. भीचोर ,, ,,	भीचोर
४. कटोंदा ,, ,,	कटोंदा

१	२	३	४
(४) तहसील अचंनारा			
१. वनवासी बहुधंधी सहकारी समिति			अरनोद
२. किसान ,, ,,			फतेहगढ
३. नगरेड़ी ,, ,,			नगरड़ी
४. जाजली ,, ,,			जाजली
(५) बड़ी सादड़ी तहसील			
१. आदर्श उपभोक्ता सहकारी समिति			बड़ी सादड़ी
(६) कपासन			
१. वस्त्र उत्पादक सहकारी समिति लि०,			कपासन
२. ,, ,, ,,			भट्टों का बामनियां
३. धमाना वस्त्र उत्पादक सहकारी समिति लि०,			धमाना
४. भूपालखेड़ा बहुधंधी ,,			भूपालखेड़ा
५. केसर खेड़ी बहुधंधी सहकारी समिति (केसरखेड़ी)			केसरखेड़ी
६. कपासन चर्म उत्पादक सहकारी समिति लि०			कपासन
(७) तहसील चित्तौड़—			
१. घोसूंडा बहुधंधी सहकारी समिति (घोसूंडा)			घोसूंडा
२. जीनगर उत्पादक ,,			चित्तौड़गढ़
३. श्री रेगर ,, ,,			रोटाड़ा
४. कंथारिया मीनोंका बचत व साख			कंथारियामीनोंका
५. बोधागा बचत व साख ,,			बोधागा
६. बचत व साख समिति ,,			रोलाटेडा
७. उगला का खेड़ा बचत व साख ,,			
८. चौथपुरा बहुधंधी सहकारी समिति			चौथपुरा
९. गृहनिर्माण सहकारी समिति			

१	२	३	४
(८) **तहसील राश्मी**			
१. वस्त्र उत्पादक सहकारी समिति लि०			उपरेड़ा
(९) **तहसील भीमाहेड़ा**			
१. ताड़ गुड़ उत्पादक सहकारी समिति			आचारी
२. दलित वर्ग उत्पादक सहकारी समिति			नीम्बाहेड़ा
(१०) **तहसील डूंगला**			
१. किसान बहुधंधी सहकारी समिति			मण्डाफिया
(११) **तहसील गंगरार**			
१. श्री नैगर उत्पादक सहकारी समिति			सांमता
२. सोनियाना बहुधंधी सहकारी समिति			सौनियाना

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ सं०	लाईन सं०	अशुद्ध	शुद्ध
११११६	१	श्री भैंरोंसिंह कछवाहा	श्री भैरोंसिंह
११२०	१	श्री भैंरोंसिंह कछवाहा	श्री भैरोंसिंह
११२१	१	श्री भैंरोंसिंह कछवाहा	श्री भैरोंसिंह